पंचतंत्र की श्रेष्ठ कहानियां

राजकुमारी श्रीवास्तव

ISBN : 81-88060-03-8

मूल्य	:	सौ रुपये
प्रकाशक	:	**सुनील साहित्य सदन** 3320-21, जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 (भारत)
संस्करण	:	प्रथम, 2001
सर्वाधिकार	:	सुरक्षित
कलापक्ष	:	हरिपाल त्यागी
शब्द-संयोजक	:	कल्याणी कम्प्यूटर सर्विसेज़ दरियागंज, नई दिल्ली-110002
मुद्रक	:	अजीत प्रिंटर्स मौजपुर, दिल्ली-110053

PANCHTANTRA KI SHRESHTHA KAHANIYAN

By Rajkumari Srivastava — Price : Rs. 100.00

Published By : **SUNIL SAHITYA SADAN**
3320-21, Jatwara, Daryaganj,
New Delhi - 110002 (INDIA)
Tel. : (011) 3270715, 3282733

दो शब्द

संस्कृत साहित्य में पंचतंत्र का महत्त्वपूर्ण स्थान है। उसमें नीति-संबंधी श्रेष्ठ और प्रेरक कथा-कहानियां हैं। भारतीय भाषाओं में ही नहीं, विश्व की किसी भी भाषा में वैसी प्रेरक कहानियां नहीं मिलतीं। यही कारण है कि विश्व की कई भाषाओं में पंचतंत्र की कहानियों का अनुवाद हुआ है।

हिंदी में भी छोटी-छोटी कई ऐसी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें पंचतंत्र की कथा-कहानियां प्रस्तुत की गई हैं, पर अभी तक कोई ऐसी पुस्तक सामने नहीं आई है, जिसमें पंचतंत्र की श्रेष्ठतम कहानियां प्रस्तुत की गई हों। हमने इस अभाव की पूर्ति के लिए ही इस पुस्तक की रचना की है। इसमें पंचतंत्र की श्रेष्ठतम और प्रेरक कहानियां सरल और प्राणमय भाषा में सामने रखी गई हैं। कहानियों को उनके अनुरूप ही नए सांचे में ढालने का प्रयत्न किया गया है।

आशा है, पुस्तक बालकों, किशोरों और प्रौढ़ पाठकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

कथा-क्रम

अधिक बोलने वाला कछुआ

(अधिक बोलना नहीं चाहिए)

एक तालाब में एक कछुआ रहता था। कछुए को बात करने का रोग था। वह जब तक किसी से बात नहीं कर लेता था, उसके मन को शांति नहीं मिलती थी। वह जब बात करने लगता, तो करता ही जाता था। यह सोचता नहीं था कि उसकी बात सुनने वाले को अच्छी लग रही है या नहीं।

तालाब के किनारे दो बगुले भी रहा करते थे। कछुए ने बगुलों से मित्रता कर ली थी। वह प्रतिदिन बगुलों से देर तक बात किया करता था। बात करने में वह दून की हांका करता था।

बगुले कछुए से बात तो करते थे, पर कभी-कभी उसकी बातों से ऊब भी जाते थे, क्योंकि वह दून की हांकने में बड़ा तेज था। बगुले कुछ कहते तो नहीं थे, पर अपने मन में वे यह अवश्य समझते थे कि कछुए को बात करने का रोग है।

संयोग की बात, पानी न बरसने के कारण जोरों का अकाल पड़ा। तालाब का पानी सूख गया। पेड़-पौधे भी सूख गए। खेल-खलिहान भी बरबाद हो गए। चारों ओर हाय-हाय होने लगी।

तालाब का पानी सूख जाने के कारण बगुलों का जीवन संकट में पड़ गया। उन्होंने उस तालाब को छोड़कर दूसरी जगह जाने का निश्चय किया।

तालाब का पानी सूख जाने के कारण कछुआ भी संकट में पड गया था, पर उसमें बगुलों की तरह उड़ने की शक्ति तो थी नहीं। फिर भी वह किसी दूसरी जगह जाने को विवश था।

बगुले जब दूसरी जगह जाने लगे, तो वे विदा मांगने के लिए कछुए के पास गए।

कछुआ बगुलों की बात सुनकर बड़ा दुखी हुआ। रुआंसा होकर बोला, "तुम दोनों तो जा रहे हो, मुझे यहां किसके सहारे छोड़े जा रहे हो?"

बगुलों ने उत्तर दिया, "क्या किया जाए, भाई, तालाब का पानी सूख गया है। यहां अब निर्वाह होना कठिन है। हमें भी तुम्हें छोड़ते हुए दुःख हो रहा है, पर विवशता है।"

कछुआ बोला, "हां, बात तो ठीक कह रहे हो, पर क्या तुम दोनों मुझे भी अपने साथ नहीं ले चल सकते?"

बगुलों ने उत्तर दिया, "तुम हमारे साथ कैसे चल सकते हो? हमारी तरह तुम उड़ तो सकते नहीं।"

कछुए ने सोचते हुए कहा, "हां, तुम्हारी तरह उड़ तो नहीं सकता पर एक उपाय है। यदि तुम दोनों चाहो, तो एक उपाय के द्वारा मुझे अपने साथ ले चल सकते हो।"

बगुलों ने पूछा, "सुनें तो, वह कौन-सा उपाय है?"

कछुए ने कहा, "कहीं से ढूंढ़कर एक लंबी पतली-सी लकड़ी ले आओ। तुम दोनों अपने-अपने मुख से एक-एक किनारे को पकड़ लो। मैं लकड़ी को बीच में मुख से पकड़कर लटक जाऊंगा। इस तरह तुम दोनों मुझे अपने साथ ले चल सकते हो।"

बगुलों ने कहा, "उपाय तो अच्छा है। पर कठिनाई तो यह है कि तुम्हें बोलने का रोग है। यदि उड़ते समय तुम्हें बात करने की धुन-सवार हो गई, तो हमारा कुछ नहीं बिगड़ेगा, पर तुम्हें व्यर्थ में अपनी जान गंवानी पड़ेगी।"

कछुआ बोल उठा, "वाह, तुम दोनों क्या कह रहे हो? मैं

ऐसी मूर्खता क्यों करूंगा? क्या मुझे अपने प्राणों का मोह नहीं?"

फिर तो बगुलों ने कछुए की बात मान ली। बगुले ढूंढ़कर एक लम्बी-सी पतली लकड़ी ले आये।

दोनों बगुलों ने एक-एक किनारे को मुख से पकड़ लिया। कछुआ बीच से मुख से लकड़ी को कसकर पकड़कर लटक गया।

बगुले मुख में लकड़ी को पकड़े हुए सावधानी से उड़ चले।

बगुले जब उड़ते हुए नगर के ऊपर से आगे बढ़ने लगे, तो नगर के लोगों की दृष्टि उन पर पड़ी। उन्होंने आज तक ऐसा दृश्य कभी नहीं देखा था। बगुले लकड़ी के एक-एक किनारे को पकड़कर उड़े जा रहे थे, कछुआ बीच से लकड़ी को मुख से पकड़े हुए लटका हुआ था।

लोग तालियां बजा-बजाकर हँसने लगे। जोर-जोर से कहने लगे, "देखो, कैसा अद्‌भुत दृश्य है! दो बगुले कछुए को लेकर उड़े जा रहे हैं।"

लोगों के हँसने की आवाज बगुलों और कछुए के कानों में भी पड़ी। बगुले तो चुप रहे, पर कछुए को तो बात करने का रोग था। लोगों की हँसी सुनते ही उसका रोग उमड़ आया। कछुए के मन में लोगों को डांटने की बात पैदा हो गई।

पर ज्यों ही कछुए ने मुंह खोला, लकड़ी उसके मुख से छूट गई और वह नीचे गिरकर मर गया।

कछुए के मरने पर बगुलों को बड़ा दुःख हुआ। वे आपस मे एक-दूसरे से कहने लगे, "अगर कछुए में अधिक बात करने का रोग न होता, तो उस बेचारे की जान इस तरह न जाती।"

कहानी से शिक्षा

अधिक बात नहीं करनी चाहिए।

बात करने से पहले सोच लेना चाहिए कि बात करने का फल क्या होगा?

अधिक बात करने वाले को पछताना पड़ता है। हानि उठानी पड़ती है।

मछलियों की मूर्खता

(सदा अनुभव और व्यावहारिक बुद्धि से ही काम लेना चाहिए)

एक सरोवर में बहुत-सी छोटी-छोटी मछलियां रहती थीं। उन मछलियों में दो मछलियां ऐसी थीं, जिनमें एक का नाम सौबुद्धि और दूसरी का नाम सहस्रबुद्धि था। सौबुद्धि अपने नाम के अनुसार ही समझती थी कि उसमें सौ बुद्धि है। इसी प्रकार सहस्रबुद्धि भी समझती थी कि उसमें सहस्र बुद्धि है।

सौबुद्धि और सहस्रबुद्धि दोनों अपने को सभी मछलियों से श्रेष्ठ समझती थीं। दोनों के मन में अपनी-अपनी बुद्धि का बडा गर्व था। दोनों जब भी बोलती थीं, ऐंठकर बोलती थीं, गर्व के साथ बोलती थीं।

गरमी के दिन थे। तालाब में पानी कम हो गया था। पानी के नीचे तैरती हुई मछलियां दिखाई पड़ जाती थीं।

एक दिन एक मछुआ जाल लेकर तालाब के किनारे पहुंचा। वह किनारे पर खड़ा होकर तालाब की ओर देखने लगा। तालाब के पानी में हजारों मछलियां तैर रही थीं।

मछलियों को देखकर मछुए के मुंह में पानी आ गया। वह अपने-आप ही बोल उठा, "इस तालाब में बहुत-सी मछलियां है, पानी भी कम हो गया है। कल सवेरे जाल डालकर इन्हें फंसा लेना चाहिए।"

मछुए की बात मछलियों के कानों में भी पड़ी। मछलियां व्याकुल हो उठीं—हाय-हाय, अब क्या किया जाए? कल सवेरे मछुआ जाल डालकर हम सबको फंसा लेगा।

व्याकुल मछलियां सौबुद्धि के पास गईं। वे सौबुद्धि को मछुए की बात सुनाकर बोलीं, "तुम्हारे पास सौ बुद्धि है। तुम सबसे श्रेष्ठ हो। दया करके कोई ऐसा उपाय बताओ, जिससे हम सब उसके जाल में न फंसें।"

सौबुद्धि इतराकर बोली, "तुम सब व्यर्थ ही डर रही हो। मछुआ कल यहां नहीं आएगा। उसे पता है कि इस तालाब में मेरी जैसी श्रेष्ठ मछलियां रहती हैं। तुम सब डरो नहीं। जाओ, सुख से रहो। यदि मछुआ आएगा तो मैं देख लूंगी।"

व्याकुल मछलियां सहस्त्रबुद्धि के पास गईं। उसे भी मछुए की बात सुनाकर मछलियों ने कहा, "तुम्हारे पास सहस्त्र बुद्धि हैं, तुम सबसे श्रेष्ठ हो। कृपा करके कोई ऐसा उपाय बताओ, जिससे हम सब मछुए के जाल में न फंसें।"

पर सहस्त्रबुद्धि ने गर्व के साथ उसी तरह की बातें कहीं, जिस तरह की बातें सौबुद्धि ने कही थीं।

तालाब में एक मेंढक भी रहता था। मेंढक का नाम एकबुद्धि था। वह सबसे प्रेम से बोलता था, सबके साथ मिल-जुलकर रहता था। वह बड़ा अनुभवी और व्यावहारिक भी था।

व्याकुल मछलियां एकबुद्धि के पास भी गईं। उसे भी मछुए की बात सुनाकर मछलियां बोलीं, "दया करके कोई ऐसा उपाय बताओ, जिससे हम सब मछुए के जाल में न फंसें।"

एकबुद्धि सोचता हुआ बोला, "मेरे पास तो एक ही बुद्धि है। मेरी समझ में तो यही आ रहा है कि तुम लोगों को इस तालाब को छोड़ देना चाहिए। तालाब में पानी कम हो गया है। कल मछुआ जरूर आएगा और वह तुम सबको फंसाने के लिए जाल अवश्य डालेगा।"

एकबुद्धि की बात सुनकर सौबुद्धि और सहस्त्रबुद्धि ने उसकी

बड़ी हँसी उड़ाई।

दोनों ने बड़े गर्व के साथ मछलियों से कहा, "यह तो मूर्ख है। इसकी बातों पर विश्वास मत करना। चुपचाप इसी तालाब में रहो, कुछ नहीं होगा।"

मछलियां सौबुद्धि और सहस्त्रबुद्धि की बात मानकर उसी तालाब में रह गईं, पर मेंढक अपने बाल-बच्चों को लेकर उसी दिन दूसरे तालाब में चला गया।

दूसरे दिन सबेरा होते ही मछुआ जाल लेकर तालाब पर जा पहुंचा। उसने मछलियों को फंसाने के लिए जाल तालाब में फैला दिया।

मछलियां व्याकुल होकर इधर से उधर भागने लगीं, पर भागकर कहां जा सकती थीं? सारी मछलियां जाल में फंस गईं।

सौबुद्धि और सहस्त्रबुद्धि ने भी बचने का बड़ा प्रयत्न किया, पर वे दोनों भी जाल में फंस गईं।

मछुआ फंसी हुई मछलियों को जाल में लेकर चल पड़ा। वह जाल कंधे पर रखे हुए था। उसका रास्ता उसी तालाब की ओर से होकर जाता था। जिसमें एकबुद्धि अपने बाल-बच्चों के साथ जाकर बस गया था।

एकबुद्धि किनारे पर बैठा हुआ था। उसने जब जाल में फंसी हुई मछलियों को देखा, तो उसे बड़ा दुःख हुआ। उसने अपने बाल-बच्चों को बुलाकर कहा, "सौबुद्धि और सहस्त्रबुद्धि की बात मानने के कारण बेचारी सभी मछलियों को जान से हाथ धोना पड़ा। दोनों अनुभवहीन थीं, घमंडी थीं। घमंड के कारण दोनों ने यह नहीं समझा कि तालाब में पानी कम हो गया है और मछुआ तालाब में जाल डालने से रुकेगा नहीं। अगर मछलियों ने मेरी बात मानकर तालाब को छोड़ दिया होता, तो उन्हें इस तरह अपनी जान न गंवानी पड़ती।

कहानी से शिक्षा

घमंडी आदमी कभी भी सत्य को छू नहीं पाता।

घमंडी की बात पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

उसी बात के अनुसार काम करना चाहिए जो व्यावहारिक हो और जिसे अनुभव ठीक कहता हो।

मगर की मूर्खता

(मूर्ख को धोखे में डालना सरल होता है)

एक नदी किनारे वृक्ष पर एक बंदर रहता था। बंदर अकेला था। वह वह वृक्ष के मीठे-मीठे फलों को खाता और आनंदमय जीवन बिताया करता था। मन में कोई चिंता तो रहती नहीं थी, इसलिए बडा स्वस्थ रहता था।

एक दिन भोजन की खोज में एक मगर नदी के किनारे पहुंचा। बंदर ने मगर को देखकर उससे पूछा, "तुम कौन हो भाई? कहां रहते हो?"

मगर ने उत्तर दिया, "मैं मगर हूं। मेरा घर नदी के उस पार है।"

बंदर फल खा रहा था। उसने मगर से पूछा, "क्या तुम भी खाओगे?"

बंदर ने चार-पांच फल नीचे गिरा दिए। मगर ने उन फलों को खाकर कहा, "वाह-वाह, यह तो बड़े मीठे हैं।"

बंदर ने कहा, "और खाओगे?"

मगर ने उत्तर दिया, "दोगे, तो क्यों नहीं खाऊंगा?"

बंदर ने कुछ और फल नीचे गिरा दिए। मगर ने उन फलों को खाकर कहा, "क्या तुम प्रतिदिन इसी तरह के फल खाते हो?"

बंदर बोला, "हां भाई, फल ही मेरा भोजन है। मैं रोज ऐसे फलों को ही खाता हूं।"

मगर बोला, "यदि मैं कल आऊं, तो क्या तुम कल भी

मुझे फल खिलाओगे?"

बंदर ने उत्तर दिया, "क्यों नहीं खिलाऊंगा?"

मगर दूसरे दिन भी गया और बंदर ने पहले दिन की भांति ही उसे फल खिलाए।

फल यह हुआ, मगर प्रतिदिन जाने लगा और बंदर प्रतिदिन उसे फल खिलाने लगा।

इस प्रकार प्रतिदिन जाने से मगर और बंदर में मित्रता हो गई। मगर प्रतिदिन जाता और बंदर उसे फल खिलाया करता था। दोनों में वार्तालाप भी खूब हुआ करता था।

एक दिन बात ही बात में बंदर ने मगर से कहा, "भाई, मै तो अकेला हूं। क्या मेरी भांति तुम भी अकेले हो?"

मगर ने उत्तर दिया, "नहीं भाई, मैं अकेला नहीं हूं। मेरे घर पर मेरी पत्नी भी है।"

बंदर बोला, "तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया? यदि तुम मुझे पहले बताते, तो मैं तुम्हें भाभी के लिए भी फल दिया करता। अच्छा, कोई बात नहीं। आज भाभी के लिए भी फल ले जाओ?"

बंदर ने कुछ और फल तोड़कर गिरा दिए।

मगर ने उन फलों को ले जाकर अपनी पत्नी को दिया।

मगर की पत्नी ने फलों को खाकर कहा, "यह तो बहुत मीठे हैं। कहां से लाए हो?"

मगर बोला, "नदी के उस किनारे पर एक बंदर रहता है। वह मेरा मित्र है। उसी ने मुझे यह फल दिए हैं। बड़ा भला है। मुझे रोज फल खिलाया करता है।"

मगर की पत्नी बड़ी प्रसन्न हुई। मगर प्रतिदिन फल लाकर अपनी पत्नी को खिलाने लगा। बंदर रोज उसे तो फल खिलाता ही था, उसकी पत्नी के लिए भी फल दिया करता था।

मगर की पत्नी को फल तो मीठे लगते थे, पर उसे मगर और बंदर की मित्रता अच्छी नहीं लगती थी। उसने सोचा, रोज-रोज मगर् का बंदर के पास जाना ठीक नहीं है। कहीं ऐसा न हो कि मगर विपत्ति में फंस जाए, क्योंकि वृक्ष पर रहने वाले की मित्रता पानी में रहने वाले से नहीं हो सकती। अतः मगर की पत्नी ने किसी तरह बंदर को फंसाकर मार डालने का निश्चय किया। उसने सोचा, बंदर के मरने पर उसका मीठा-मीठा मांस तो खाने को मिलेगा ही, मगर की मित्रता भी समाप्त हो जाएगी।

एक दिन मगर की पत्नी ने सोचकर उससे कहा, ''बंदर तुम्हें रोज मीठे-मीठे फल खिलाता है और मेरे लिए भी फल भेजता है। तुम भी उसे अपने घर भोजन करने के लिए निमंत्रित करो।''

मगर बोला, ''बंदर को तो तैरना आता नहीं, फिर वह भोजन करने के लिए मेरे घर आएगा तो किस तरह आएगा?''

मगर की पत्नी बोली, ''बंदर तुम्हारा मित्र है। वह तैरना नहीं जानता, पर तुम तो जानते हो। क्या तुम उसे अपनी पीठ पर बिठाकर नहीं ला सकते?''

परंतु पत्नी की बात मगर के गले के नीचे नहीं उतरी। पत्नी प्रतिदिन बंदर को निमंत्रित करने के लिए आग्रह करती, किंतु मगर उसकी बात पर ध्यान नहीं देता था। सच बात तो यह थी कि मगर बंदर को कष्ट नहीं देना चाहता था।

जब पत्नी की बात का प्रभाव मगर पर नहीं पड़ा, तो उसने एक टेढ़ी चाल चली। उसने सोचा, इस तरह तो काम चलेगा नहीं। बंदर को फंसाने के लिए कोई जाल रचना चाहिए।

मगर की पत्नी बीमारी का बहाना करके पड़ गई। जब मगर उससे उसका हाल पूछने लगा, तो वह बोली, ''मुझको एक

भयानक रोग ने पकड़ लिया है। वह रोग बंदर के कलेजे को छोड़कर और किसी भी दवा से दूर नहीं हो सकता। अतः कहीं से बंदर का कलेजा ले आओ।

मगर चिंतित हो उठा। उसने चिंता-भरे स्वर में कहा, "यह तो बड़ी कठिन बात है। भला बंदर का कलेजा कहां मिलेगा?"

मगर की पत्नी बोली, "हां, कठिन बात तो है, पर यदि तुम चाहो तो ला सकते हो।"

मगर बोला, "भला मैं क्यों नहीं चाहूंगा? तुम्हारी बीमारी को दूर करने के लिए, मैं सब कुछ कर सकता हूं। बताओ तो, मैं बंदर का कलेजा कैसे ला सकता हूं।"

मगर की पत्नी बोली, "तुम्हारा मित्र बंदर है न! तुम उसे मारकर उसका कलेजा ला सकते हो।"

मगर ने बड़े आश्चर्य के साथ कहा, "तुम यह क्या कह रही हो? जो मित्र मुझे और तुम्हें रोज मीठे फल खिलाता है, मैं उसे मारकर उसका कलेजा ले आऊं?"

मगर की पत्नी ने कहा, "यदि मुझे मृत्यु से बचाना है, तो बंदर का कलेजा लाना ही पड़ेगा। मित्र तो बहुत-से मिल जाएंगे, पर यदि मैं मर गई, तो फिर तुम्हें नहीं मिल सकती।"

मगर ने अपनी पत्नी को बहुत समझाया, पर उसने एक न सुनी। वह बराबर यही कहती रही, यदि तुम्हें मेरी जिंदगी प्यारी है, तो किसी तरह अपने मित्र बंदर का कलेजा ले आओ।

आखिर मगर करता तो क्या करता? वह विवश हो गया और अपने मन को दबाकर बंदर के पास चल पड़ा।

उस दिन मगर कुछ देर में बंदर के पास पहुंचा। बंदर उसे देखते ही बोल उठा, "क्यों भाई आज देर क्यों की! मैं तो कब से तुम्हारी राह देख रहा हूं।"

मगर कुछ मुह बनाकर बोला क्या बताऊं मित्र आज मेरी पत्नी ने मुझसे झगड़ा कर लिया। उसे मनाने में देर हो गई। तुम मेरे साथ घर चलो। तुम्हारे समझाने-बुझाने से कदाचित वह मान जाए। चलोगे न!"

बंदर बोला, "क्यों नहीं चलूंगा? इसी बहाने भाभी को भी देख लूंगा, पर कठिनाई तो यह है कि मैं तैरना नहीं जानता।"

मगर बोला, "तुम इसकी चिंता मत करो। तुम तैरना नहीं जानते, मैं तो जानता हूं। मेरी पीठ पर बैठ जाओ। मैं तुम्हें अपने घर ले चलूंगा।"

बंदर राजी हो गया। वह वृक्ष से नीचे उतरा और कूदकर मगर की पीठ पर जा बैठा। मगर उसे लेकर बीच धारा की ओर चल पड़ा।

मगर जब बीच धारा में पहुंचा, तो डुबकी लगाने लगा। बंदर आश्चर्य के साथ बोल उठा, "यह क्या कर रहे हो, मगर भाई? तुम तो डुबकी लगा रहे हो? तुम्हारे डुबकी लगाने से मैं डूब जाऊंगा।"

मगर बोला, "यही तो मैं चाहता हूं कि तुम डूबकर मर जाओ। वास्तव में बात यह है कि मेरी पत्नी से मेरा झगड़ा नहीं हुआ है। वह बीमार है। उसकी बीमारी बंदर के कलेजे से ही दूर हो सकती है। मैं तुम्हारे कलेजे के लिए झूठ बोलकर तुम्हें ले आया हूं। अब तो तुम्हें मरना ही पड़ेगा। जब तुम मर जाओगे, तो मैं तुम्हारा कलेजा निकाल लूंगा और अपनी पत्नी को ले जाकर दे दूंगा।"

बंदर सोचने लगा—मगर को मैंने मीठे-मीठे फल खिलाए, इसे अपना सच्चा मित्र समझा, पर इसने मेरे साथ आज यह विश्वासघात किया! अब किया जाए तो क्या किया जाए?

बंदर जानता था कि मगर के पास बुद्धि नहीं होती। अतः उसने सोचकर कहा, "मगर भाई, तुम्हारी पत्नी की बीमारी की सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ है। मैं भाभी की बीमारी को दूर करने के लिए एक नहीं, सौ कलेजे दे सकता हूं। तुमने पहले मुझसे क्यों नहीं कहा? मैं अपना कलेजा लिए आता। दुःख की बात तो यह है कि मैं कलेजे को वृक्ष पर ही छोड़ आया हूं।"

मगर बड़ा मूर्ख था। उसने मूर्खता के कारण बंदर की बात सच मान ली। वह आश्चर्य के साथ बोला, "क्या कहा तुमने? तुम अपना कलेजा वृक्ष पर छोड़ आए हो?"

बंदर बोला, "हां मगर भाई, मैं अपना कलेजा वृक्ष पर ही छोड़ आया हूं।"

मगर ने कहा, "तो फिर चलो, वृक्ष पर कलेजा ले लो।"

मगर अपनी बात को पूरी करके किनारे की ओर लौट पड़ा। बंदर यही तो चाहता था। वह मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने सोचा, मूर्ख और विश्वासघाती मगर को मैंने अपनी बुद्धि से धोखे में डाल दिया है।

मगर जब किनारे पर पहुंचा तो, बंदर उछलकर सूखी धरती पर ज़ा पहुंचा और फिर उछलकर वृक्ष की डाल पर जा बैठा। उसने वृक्ष की डाल पर से मगर से कहा, "मूर्ख मगर, तू मेरी मित्रता के योग्य नहीं है। तू विश्वासघाती तो है ही, महामूर्ख भी है। भला किसी का कलेजा भी उसके शरीर से अलग रह सकता है। तू मुझे फंसाकर मेरी जान लेना चाहता था, पर मैंने तुम्हें फंसाकर अपनी जान बचा ली। मेरा कलेजा मेरे शरीर में ही था। मैंने तो तुझसे झूठ ही कहा था कि कलेजा मैं वृक्ष पर छोड़ आया हूं। कलेजा यदि वृक्ष पर ही छोड़ आता, तो जीवित कैसे रहता? जा, लौट जा। अब फिर कभी मेरे पास मत आना।"

मगर करता तो क्या करता? वह पश्चाताप करता हुआ अपने घर लौट गया जो अपने स्वार्थ के लिए दूसरो को नुकसान पहुंचाना चाहता है, उसे इसी तरह पछताना पड़ता है।

कहानी से शिक्षा

मित्रता समझ-बूझकर करनी चाहिए। शाकाहारी और मांसाहारी की मित्रता सुखदायक नहीं होती।

बुद्धिमान मनुष्य सरलता से ही मूर्खों को फंसा लिया करते हैं।

जो दूसरों के साथ धोखा करता है, उसे पछताना ही पड़ता है।

बुद्धिमान खरगोश

(बुद्धि से कठिन से कठिन काम भी पूरे किए जा सकते हैं)

एक वन में एक शेर रहता था। शेर बड़ा बलवान था। उसे अपने बल का बड़ा गर्व था। वह प्रतिदिन वन के दर्जनों जानवरों को मार डालता था। कुछ को खा जाता और कुछ को चीर-फाड़कर फेंक दिया करता था।

शेर के इस अंधाधुंध शिकार से वन के जानवरों में खलबली मच गई। उन्होंने सोचा, यदि शेर के द्वारा रोज इसी तरह हत्या होती रही, तो एक दिन जानवरों का खात्मा हो जाएगा।

वन के जानवर इस प्रश्न पर विचार करने के लिए एकत्र हुए। उन्होंने एक उपाय निकालकर शेर के पास जाने का निश्चय किया।

जानवर शेर की सेवा में उपस्थित हुए। शेर जानवरों को देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। उसने सोचा, अच्छा हुआ आज जानवर यहीं आ गए। आज भोजन के लिए कहीं जाना नहीं पड़ेगा।

शेर बड़े जोर से गुर्रा उठा। ऐसा लगा, मानो वह उन पर झपटना ही चाहता है।

जानवरों ने निवेदन किया, ''श्रीमान्, हमें मारकर खाने से पहले हमारी प्रार्थना सुन लीजिए। आप हमारे राजा हैं। हम आपकी प्रजा है। आप रोज हमारा अंधाधुंध शिकार किया करते हैं। इसका फल यह होगा कि एक दिन वन में एक भी जानवर नहीं रह जाएगा। फिर आप किसे मारकर खाएंगे? हम चाहते हैं, आप बने रहें और हम भी बने रहें। आपको बिना कष्ट के प्रतिदिन भोजन

मिलता रहे

शेर गुर्राकर बोल उठा ' तो तुम सब क्या चाहते हो? '

जानवरों ने निवेदन किया, "श्रीमान्, आप अंधाधुंध शिकार करना छोड़ दें। आप अपने स्थान पर ही आराम से बैठे रहें। आपके भोजन के लिए हममें से कोई न कोई जानवर आ जाया करेगा। इस तरह आपको रोज भोजन मिलता रहेगा और हम भी व्यर्थ में मारे जाने से बच जाएंगे।"

जानवरों की बात शेर को पसंद आ गई। उसने कहा, "हमें तुम्हारी बात स्वीकार है, पर याद रहे, यदि किसी दिन हमें भोजन नहीं मिला या भरपेट भोजन नहीं मिला, तो हम एक ही दिन में सारे जानवरों का खात्मा कर देंगे।"

जानवरों ने शपथपूर्वक कहा, "नहीं श्रीमान्, हम ऐसा अवसर ही आने नहीं देंगे।"

सभी जानवर अपने-अपने घर चले गए। उस दिन के बाद प्रतिदिन शेर के पास कोई न कोई जानवर आने लगा और शेर उसे खाकर अपनी भूख शांत करने लगा।

धीरे-धीरे कई मास बीत गए। एक दिन एक खरगोश की बारी आई। खरगोश था तो छोटे कद का, पर बुद्धिमान था और बड़ा चतुर था।

खरगोश शेर के पास पहुंचने के लिए अपने घर से चल पडा। मार्ग में उसने सोचा—जीवन बड़ा मूल्यवान होता है। इस तरह शेर का भोजन बनना ठीक नहीं है। कोई ऐसा उपाय करना चाहिए, जिससे मेरे प्राण तो बच ही जाएं, दूसरे जानवरों के भी प्राण बचें।

बुद्धिमान खरगोश ने सोच-विचार कर एक उपाय ढूंढ़ निकाला। वह जान-बूझकर शेर के पास कुछ देर में पहुंचा।

शेर भूख से व्याकुल हो रहा था। खरगोश को देखते ही तड़पकर बोला, "मैं कब से तुम्हारी राह देख रहा हूं। तुम अब आए हो? तुम्हारे जैसे नन्हें कद के खरगोश से मेरा पेट कैसे भरेगा? जानवरों ने मुझे धोखा दिया है। मैं एक ही दिन में सबका काम तमाम कर दूंगा।"

खरगोश शेर के सामने झुककर बोला, "श्रीमान्, आप क्रोध न करें। जानवरों का कोई दोष नहीं है। उन्होंने ठीक समय पर आपके लिए खरगोश भेजे थे। मेरे साथ पांच और थे।"

शेर गरजकर बोला, "तुम्हारे समेत छः थे, तो पांच और कहां चले गए?"

खरगोश ने बड़ी ही नम्रता के साथ कहा, "वही तो बता रहा हूं श्रीमान्! हम छः खरगोश आपके पास आ रहे थे। रास्ते में हमें एक दूसरा शेर मिल गया। वह गरजकर बोला, 'कहां जा रहे हो?' जब हमने उससे कहा कि हम वन के राजा के पास जा रहे हैं तो वह बिगड़कर बोला, 'इस वन का राजा तो मैं हूं, मेरे अतिरिक्त कोई दूसरा राजा नहीं है।' और बस, उसने मेरे पांचों साथियों को मार डाला। मुझे इसलिए छोड़ दिया कि मैं आपको यह बताऊं कि आप वन के राजा नहीं हैं। वन का राजा तो कोई दूसरा शेर है। यदि आप वन के राजा हैं, तो उस दूसरे शेर का मुकाबला करें।"

खरगोश की बात सुनकर शेर क्रोध से आगबबूला हो उठा। वह बड़े ही आवेश से बोला, "ऐसा कहा है उस शेर ने? बताओ वह दुष्ट कहां रहता है।"

खरगोश ने उत्तर दिया, "श्रीमान्, उसने आपको न केवल युद्ध के लिए ललकारा है, बल्कि बुरा-भला भी कहा है। वह एक गुफा में रहता है।"

शेर गर्जन के साथ बोल उठा, "मुझे ले चलो उसके पास। मैं पहले उसका काम तमाम कर लूं, उसके पश्चात् तुम्हें खाऊंगा।"

खरगोश आगे-आगे चल पड़ा। वह शेर को एक कुएं के पास ले गया। बोला, "श्रीमान्, वह यहीं था। लगता है, अपने किले में छिप गया है। उसका किला धरती के भीतर है। आप किले की दीवार पर खड़े होकर उसे ललकारें, तो वह अवश्य बाहर निकल आएगा।"

खरगोश ने कुएं की जगत की ओर संकेत करके कहा, "श्रीमान्, यही किले की दीवार है।"

शेर क्रोध में तो था ही, वह कुएं की जगत पर जाकर खड़ा हो गया। उसने कुएं के भीतर झांककर देखा, तो उसे कुएं के पानी में उसी की परछाई दिखाई पड़ी।

शेर ने सोचा, सचमुच ही दूसरा शेर किले में छिपा हुआ है। वह बड़े जोर से दहाड़ उठा। उसके दहाड़ने पर कुएं के भीतर से प्रतिध्वनि निकली, जो उसी की दहाड़ के समान थी।

शेर ने समझा, उसकी दहाड़ को सुनकर दूसरा शेर भी दहाड़ रहा है। वह क्रोध में पागल हो रहा था। उसने आव देखा न ताव, दूसरे शेर को मारने के लिए कुएं में कूद पड़ा।

बस फिर क्या था, कुएं में गिरते ही उसके होश-हवास उड़ गए। वह बाहर निकलने के छटपटाने लगा। लेकिन कुएं में ही तडप-तड़पकर कर गया। खरगोश ने जब जंगल में जानवरों को शेर की मत्यु की खबर सुनाई, तो वे बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने खरगोश को बहुत-बहुत धन्यवाद तो दिया ही, एकसाथ मिलकर उसकी बुद्धिमानी की प्रशंसा के गीत भी गाए।

कहानी से शिक्षा

सोच-समझकर बुद्धि से काम करने से कठिन से कठिन काम भी हो जाया करते हैं।

अपने से अधिक बलवान को जीतने के लिए बल से नहीं, बुद्धि से काम लेना चाहिए।

क्रोध में भले-बुरे का ज्ञान नष्ट हो जाता है।

ब्राह्मण और तीन धूर्त

(कभी-कभी बुद्धिमान मनुष्य भी धूर्तों के जाल में फंस जाते हैं।)

एक गांव में एक ब्राह्मण रहता था। वह पुरोहिताई करता था। पुरोहिताई से जो कुछ प्राप्त हो जाता था, उसी से अपना और अपने कुटुंबियों का निर्वाह करता था।

एक दिन ब्राह्मण एक अन्य गांव में पूजा कराने के लिए गया। जब पूजा समाप्त हो गई, तो यजमान ने ब्राह्मणों को दक्षिणा के रूप में एक बकरी प्रदान की। बकरी बड़ी मोटी-ताजी थी।

ब्राह्मण बकरी को कंधे पर लादकर अपने घर की ओर चल पड़ा।

मार्ग में उसे तीन धूर्त मिले। धूर्तों ने जब ब्राह्मण के कंधे पर मोटी-ताजी बकरी देखी, तो उनके मुंह में पानी आ गया। उन्होंने सोचा, बकरी का मांस बड़ा स्वादिष्ट होगा। यदि किसी तरह बकरी मिल जाती तो बड़ा अच्छा होता।

पर बकरी मिले तो कैसे मिले? मांगने से तो ब्राह्मण बकरी देने वाला नहीं। तीनों धूर्त आपस में सोच-विचार करने लगे। एक धूर्त ने कहा, "ब्राह्मण इस तरह तो बकरी देगा नहीं। उसे किसी प्रकार मूर्ख बनाकर बकरी ले लेनी चाहिए।"

दूसरे धूर्त ने भी पहले धूर्त की बात का प्रतिपादन किया, पर प्रश्न यह पैदा हुआ कि ब्राह्मण को मूर्ख बनाया जाए, तो किस प्रकार बनाया जाए?

तीनों धूर्त ब्राह्मण को मूर्ख बनाने के लिए उपाय सोचने लगे। सहसा तीसरा धूर्त बोल उठा, "मैंने ब्राह्मण को मूर्ख बनाने का उपाय सोच लिया है।"

तीसरे धूर्त ने दोनों साथियों के कानों में अपना उपाय बता दिया।

ब्राह्मण कंधे पर बकरी रखे हुए अपने घर की ओर बढ़ता जा रहा था। तीनों धूर्त भी ब्राह्मण के दाएं-बाएं चलने लगे।

कुछ दूर जाने पर पहला धूर्त ब्राह्मण के सामने जा पहुंचा, बोला, "ब्राह्मण देवता, कंधे पर कौन-सी चीज रखे हुए हो?"

ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "क्या अंधे हो, दिखाई नहीं दे रहा है कंधे पर बकरी है; और क्या है?"

धूर्त बोला, "बकरी है! क्या कह रहे हो? तुम्हारे कंधे पर तो कुत्ता है। कुत्ते को बकरी कह रहे हो? अरे, पागल तो नहीं हो गए हो? राम-राम, ब्राह्मण होकर कंधे पर कुत्ता लादे हो? लोग देखते होंगे तो क्या कहते होंगे?"

ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "सचमुच तुम अंधे ही हो, तभी तो बकरी को कुत्ता कह रहे हो। जाओ-जाओ, अपनी आंख का इलाज कराओ, भाई।"

पहला धूर्त बोला, "मुझे क्या, तुम कंधे पर बकरी लादो या कुत्ता। मैं तो तुम्हारे भले के लिए कह रहा हूं। तुम्हें कंधे पर कुत्ता लादे हुए देखकर लोग तुम्हारी बदनामी तो करेंगे ही, पूरी ब्राह्मण जाति की बदनामी भी किए बिना नहीं रहेंगे। कहेंगे, अब ऐसा जमाना आ गया कि ब्राह्मण कंधे पर कुत्ते लादने लगे।"

पहला धूर्त अपनी बात समाप्त करके ब्राह्मण के सामने से दूर चला गया।

कुछ और आगे जाने पर दूसरा धूर्त ब्राह्मण के सामने पहुंचा, बोला, "ब्राह्मण देवता, यह कंधे पर क्या लादे हुए हो? बछडा! क्या बछड़े की टांग टूट गई है?"

ब्राह्मण बोला, "अरे, अरे! दिन में ही तुम्हें दिखाई नहीं देता! इसीलिए बकरी को बछड़ा कह रहे हो। अरे भाई, मेरे कंधों पर बछड़ा नहीं, बकरी है, बकरी। यह मुझे दक्षिणा में मिली है।"

दूसरा धूर्त बोला, "ब्राह्मण देवता, लगता है, तुम्हारा सिर फिर गया है, इसीलिए तुम बछड़े को बकरी कह रहे हो। मैं तो साफ-साफ देख रहा हूं, तुम्हारे कंधे पर बछड़ा है। मुझे क्या कंधे पर बकरी लादो या बछड़ा। मैंने जो देखा, उसके बारे में तुमसे पूछ लिया।"

दूसरा धूर्त भी अपनी बात समाप्त करके ब्राह्मण के सामने से खिसक गया। ब्राह्मण के मन में संदेह पैदा हो उठा—क्या बात है? एक आदमी ने तो कहा, कंधे पर बकरी नहीं, कुत्ता है और दूसरे आदमी ने कहा, कंधे पर बकरी नहीं, बछड़ा है। क्या सचमुच मेरे कंधे पर बकरी नहीं, कुछ और है?

कुछ और आगे जाने पर तीसरा धूर्त भी ब्राह्मण के सामने जा पहुंचा, बोला, "वाह-वाह, ब्राह्मण होकर कंधे पर गधी का बच्चा लादे हुए हो? राम-राम, कैसा समय आ गया?"

ब्राह्मण बोला, "क्या कह रहे हो? मेरे कंधे पर तो बकरी है। तुम बकरी को गधी का बच्चा बता रहे हो? अंधे हो क्या?"

तीसरा धूर्त बोला, "मैं अंधा हूं या नहीं, तुम पागल अवश्य हो। कंधे पर गधी का बच्चा लादे हुए हो, और उसे बकरी बता रहे हो! पागल न होते, तो ऐसा न कहते।"

तीसरा धूर्त भी अपनी बात समाप्त करके आगे बढ़ गया। ब्राह्मण के मन का संदेह प्रबल हो उठा। वह सोचने लगा—अवश्य कोई न कोई बात है। तभी एक आदमी ने बकरी को कुत्ता, दूसरे आदमी ने बछड़ा और तीसरे आदमी ने गधी का बच्चा बताया। कहीं यह बकरी पिशाचिनी तो नहीं है। जरूर पिशाचिनी ही है, तभी भिन्न-भिन्न रूप धारण करती है।

संदेह के कारण ब्राह्मण को बकरी सचमुच पिशाचिनी के रूप में दिखाई देने लगी। ब्राह्मण डर गया। वह बकरी को कंधे से फेंककर भाग खड़ा हुआ।

तीनों धूर्त बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा, "अहा, हा! हमने

ब्राह्मण को कैसा मूर्ख बनाया!"

तीनों धूर्त बकरी को अपने घर ले गए। बकरी का क्या हाल हुआ, यह बताने से क्या लाभ? लाभ की बात तो यह है कि सदा अपनी बुद्धि से काम लेना चाहिए। ब्राह्मण यदि बुद्धि से काम लेता तो धूर्तों के द्वारा ठगा न जाता।

कहानी से शिक्षा

किसी अपरिचित की बात पर सहसा विश्वास नहीं कर लेना चाहिए।

किसी के मुख से सुनी बात को सच न मानकर उस पर विचार करना चाहिए।

सदा अपनी बुद्धि से ही काम करना चाहिए।

बुद्धिमान वन-हंस

(शत्रु को पनपने से पहले ही नष्ट कर देना चाहिए)

एक वन में एक बहुत बड़ा सघन वृक्ष था। वृक्ष में बड़ी-बड़ी डालियां और शाखाएं थीं। पत्ते भी लंबे-लंबे और हरे-हरे थे। छाया बड़ी घनी होती थी। कभी भी धूप नहीं आती थी।

वृक्ष के ऊपर कई वन-हंसों ने अपने घोंसले बना रखे थे। वन-हंस घोंसलों में सुख से जीवन व्यतीत करते थे। यों तो सभी वन-हंस साधारण थे, पर उनमें एक बड़ा बुद्धिमान और अनुभवी था। वह जो भी बात कहता था, सोच-समझकर कहता था। उसकी कही हुई बात सच निकलती थी।

एक दिन बुद्धिमान हंस ने वृक्ष की जड़ में से एक लता निकलती हुई देखी। उसने वन-हंसों को भी वह लता दिखाई। वन-हंसों ने लता को देखकर कहा, "तो क्या हुआ? वृक्ष की जड़ से लता निकल रही है, तो निकलने दो। हमें उस लता से क्या लेना-देना है?"

बुद्धिमान हंस बोला, "ऐसी बात नहीं है। हमारा इस लता से बहुत गहरा संबंध है, क्योंकि यह लता उसी वृक्ष की जड़ से निकल रही है, जिस पर हम सब रहते हैं।"

वन-हंसों ने कहा, "तुम्हारी बात हमारी समझ में नहीं आ रही है। साफ-साफ कहो, क्या कहना चाहते हो?"

बुद्धिमान हंस बोला, "आज यह लता बहुत छोटी-सी है, धीरे-धीरे यह बढ़कर बड़ी हो जाएगी। एक दिन आएगा, जब यह वृक्ष से लिपट जाएगी और मोटी हो जाएगी। जब यह मोटी हो जाएगी, तो कोई भी शत्रु इसके सहारे नीचे से चढ़ सकता है और

ऊपर पहुंचकर हम सबको हानि पहुंचा सकता है।''

बुद्धिमान हंस की बात सुनकर सभी वन-हंस हँस पड़े बोले, ''तुम तो शेखचिल्ली की-सी बात कर रहे हो। अरे, यह लता अभी छोटी-सी है। किसे पता है, बढ़ेगी भी या नहीं?''

बुद्धिमान हंस बोला, ''हां, अभी छोटी-सी तो है, पर जिस चीज से हानि होने की संभावना हो उसे पहले ही नष्ट कर देना चाहिए। इसलिए इस लता को अभी बढ़ने नहीं देना चाहिए। इसे नष्ट कर डालना चाहिए। यह बढ़ेगी, तो हम सबके दुःख का कारण बनेगी।''

बुद्धिमान हंस ने वन-हंसों को बहुत समझाया, पर उन्होंने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया। उन्होंने कहा, ''लता जब बढ़ेगी, तो देखा जाएगा। अभी कुछ करने की क्या आवश्यकता है?''

बुद्धिमान हंस मौन रह गया।

लता धीरे-धीरे बढ़ने लगी। वह बढ़कर वृक्ष से लिपट गई। फिर धीरे-धीरे मोटी भी हो गई। इतनी मोटी कि कोई भी आदमी नीचे से उसके सहारे ऊपर चढ़ सकता था।

एक दिन सवेरा होने पर सभी वन-हंस भोजन की तलाश में उड़कर चले गए। घोंसले खाली हो गए। वन-हंसों के चले जाने पर वृक्ष के नीचे एक शिकारी पहुंचा। उसने वृक्ष पर वन-हंसों के घोंसलों को देखकर सोचा, इन वन-हंसों को सरलता से जाल में फंसाया जा सकता है। कल सवेरे जाल लेकर आऊंगा। वृक्ष पर चढ़कर जाल फैला दूंगा। वन-हंस अपने-आप ही जाल में फंस जाएंगे।

दूसरे दिन शिकारी जाल लेकर आ पहुंचा। वन-हंस भोजन की तलाश में जा चुके थे। शिकारी ने मोटी लता के सहारे ऊपर चढकर घोंसलों के ऊपर जाल बिछा दिया। वह जाल बिछाकर अपने घर चला गया।

संध्या समय जब वन-हंस लौटे तो वे अपने घोंसलों में जाने

के लिए आतुर हो रहे थ पर जब घोसलो मे जाने लग तो बेचारे जाल मे जा फसे जाल मे फसकर वन हस फड़फड़ाने लगे

जाल में फंसे हुए वन-हंस रोकर कहने लगे, "हाय-हाय, अब हम क्या करें? जाल से निकलें तो किस तरह निकलें? शिकारी आएगा और हम सबको जाल में ले जाएगा। हम सब मारे जाएंगे!"

वन-हंसों का रोना-कलपना सुनकर बुद्धिमान हंस उनके पास गया। बोला, "अगर तुम लोगों ने मेरी बात मानकर लता को नष्ट कर दिया होता तो आज तुम सब इस जाल में न फंसते। शिकारी ने मोटी लता के सहारे ही वृक्ष के ऊपर चढ़कर घोंसलों पर जाल बिछाया था।"

वन-हंस आंसू बहाते हुए बोले, "भाई, जो हो गया, वह हो गया। अब तो कोई ऐसा उपाय करो, जिससे हम सब मरने से बच जाएं।"

बुद्धिमान हंस सोचकर बोला, "एक उपाय से तुम सब बच सकते हो। जब शिकारी आए, तो तुम सब मुर्दे के समान पड़ जाओ। शिकारी तुम्हें मरा हुआ समझकर जाल से बाहर निकालकर फेंक देगा। जब तक वह आखिरी हंस को भी जाल से बाहर निकालकर फेंक न दे, तुम सबको धरती पर मुर्दे की तरह पड़ा रहना चाहिए।"

वन-हंसों को बुद्धिमान हंस की बात पसंद आ गई। उन्होंने कहा, "ठीक है, शिकारी के आने पर हम ऐसा ही करेंगे।"

दूसरे दिन जब शिकारी आया, तो वन-हंस उसे देखते ही मुर्दे की तरह पड़ गए। शिकारी ने पेड़ पर चढ़कर जाल के पास जाकर देखा, सभी वन-हंस मुर्दे की तरह पड़े थे।

शिकारी वन-हंसों को मरा हुआ देखकर बड़ा दुःखी हुआ। वह जाल से एक-एक वन-हंस को निकालकर जमीन पर फेंकने लगा। जब तक उसने आखिरी वन-हंस को जाल से निकालकर

जमीन पर नहीं फेंक दिया, सभी वन-हंस मुर्दे की तरह जमीन पर पड़े रहे।

आखिरी वन-हंस के जमीन पर फेंक दिए जाने के तुरंत बाद ही वे सबके सब पंख फड़फड़ाते हुए ऊपर गगन में उड़ान भर गए।

शिकारी को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह आंखें फाड़े गगन में उड़ते हुए हंसों की ओर देखने लगा।

इस तरह बुद्धिमान और अनुभवी हंस की बात मानने से सभी वन-हंसों की जान बच गई।

कहानी से शिक्षा

शत्रु को पनपने नहीं देना चाहिए। पनपने से पहले ही उसे नष्ट कर देना चाहिए।

अनुभवी आदमी की बात न मानने से कष्ट उठाना पड़ता है।

अनुभवी आदमी की सलाह का सदा आदर करना चाहिए।

धोखेबाजी का फल

(धोखे से व्यापार सदा नहीं चलता)

एक तालाब के किनारे एक सारस रहता था। सारस बड़ा मक्कार था। वह प्रतिदिन तालाब की मछलियों को खाया करता और बड़े सुख से साथ जीवन व्यतीत करता था।

उसे जब भी भूख लगती, तालाब के किनारे पहुंच जाता और पानी में से मछलियों को पकड़-पकड़कर खा लिया करता था।

इस तरह कई साल बीत गए। धीरे-धीरे सारस भी वृद्ध होने लगा। उसके शरीर का बल घटने लगा। वह अब पहले की तरह मछलियों को पकड़ नहीं पाता था। जब भी मछलियों को पकड़ने के लिए चोंच बढ़ाता, मछलियां उछलकर भाग जाया करती थीं।

सारस चिंतित हो उठा। वह सोचने लगा, इस तरह कैसे काम चलेगा? कोई ऐसा उपाय सोचना चाहिए जिससे भूखों मरने की नौबत न आए।

सारस मक्कार तो था ही, उसने एक उपाय खोज निकाला।

सबेरे का समय था। सारस रोनी सूरत बनाकर तालाब के किनारे जा बैठा। ऐसा लग रहा था, मानो बड़ा दु:खी हो।

तालाब में रहने वाले एक केकड़े ने जब सारस को उदास देखा, तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सारस के पास जाकर उससे पूछा, "क्या बात है चाचाजी, आज आप उदास क्यों हैं? आज आप मछलियों को भी नहीं पकड़ रहे हैं!"

सारस ने बड़े ही दु:ख के साथ कहा, "क्या करूं भाई, आज मैं सचमुच बड़ा दु:खी हूं। मैं इतने दिनों से तालाब की मछलियां खाता आ रहा हूं। आज मैंने मछलियों के बारे में बड़ी

बुरी खबर सुनी है। उसी खबर ने तो मेरे मन को दुःखी कर दिया है।

केकड़े ने कहा, "चाचाजी, आपने कौन-सी बुरी खबर सुनी है? दया करके मुझे भी बताइए।"

सारस बोला, "थोड़ी देर पहले यहां कुछ लोग आए थे। वे कह रहे थे कि इस तालाब को मिट्टी से पाट दिया जाएगा और उस पर खेती की जाएगी। यदि तालाब को मिट्टी से पाट दिया जाएगा तो सभी मछलियां मर जाएंगी। मछलियों के मरने के दुःख से ही मेरा मन बहुत दुःखी है।"

सुनकर केकड़ा भी बड़ा दुःखी हुआ। बोला, "सचमुच, यह तो बड़ी बुरी खबर है, चाचाजी।"

केकड़े ने तालाब की मछलियों को भी यह खबर सुनाई मछलियां व्याकुल हो उठीं। रोने-धोने लगीं।

मछलियां रोती-कलपती हुई सारस के पास पहुंचीं, और आंसू बहाती हुई बोलीं, "तालाब के पट जाने पर हम सब मर जाएंगे। दया करके हम सबका उद्धार करो, हम सबकी जान बचाओ।"

सारस दुःख के साथ बोला, "सचमुच बड़ा संकट आ गया है। किया जाए तो क्या किया जाए? तुम सब संख्या में अधिक हो और मैं अकेला हूं। मैं अकेला तुम सबकी जान कैसे बचा सकता हूं?"

मछलियां रोने लगीं। रो-रोकर कहने लगीं, "चाहे जैसे भी हो, तुम्हें हमारी जान बचानी ही पड़ेगी।"

सारस बोला, "अच्छी बात है भाई। मैं तुम सबको बारी-बारी से दूसरे तालाब में पहुंचा दूंगा। चलो, सब तैयार हो जाओ।"

मछलियां आपस में झगड़ने लगीं। एक कहती थी, 'मैं पहले जाऊंगी', और दूसरी कहती थी, 'नहीं, मैं पहले जाऊंगी।' इसी तरह सभी मछलियां एक-दूसरे से पहले जाने के लिए उतावली

हो उठीं।

सारस मछलियों को शांत करता हुआ बोला, "अरे, अरे, तुम सब आपस में झगड़ क्यों रही हो? मैं बारी-बारी से सबको पहुंचा दूंगा।"

सारस अपनी बात खत्म करके चार-पांच मछलियों को चोंच में दबाकर उड़ चला, पर वह उन्हें लेकर किसी दूसरे तालाब में नहीं गया। मार्ग में एक चट्टान पर जा बैठा और उन्हें खाकर फिर तालाब के किनारे जा पहुंचा।

सारस ने तालाब के किनारे पहुंचकर कुछ देर आराम किया। जब भूख लगी, तो फिर मछलियों के पास जा पहुंचा और पहले की ही तरह चार-पांच मछलियों को चोंच में दबाकर उड़ चला। उन मछलियों को भी उसने पहले की तरह चट्टान पर बैठकर खा डाला।

सारस हर बार चार-पांच मछलियों को चोंच में दबाकर उस चट्टान पर आता और उन्हें खा जाता। इस प्रकार सारस ने सैकड़ों मछलियों का काम तमाम कर दिया।

तालाब में एक केकड़ा ही बचा था। सारस जब सैकड़ों मछलियों को दूसरे तालाब में पहुंचाने के बहाने मारकर खा चुका, तो केकड़े ने सारस से कहा, "चाचाजी, आप सैकड़ों मछलियों को दूसरे तालाब में पहुंचा चुके। दया करके अब मुझे भी पहुंचा दीजिए।"

सारस ने सोचा, चलो, इस बार इस केकड़े को भी ले चलो। मछलियां तो बहुत खा चुका, अब केकड़े को भी खाना चाहिए।

सारस केकड़े को चोंच में दबाकर उड़ चला। जब चट्टान के पास पहुंचा, तो नीचे उतरने लगा। केकड़े को आश्चर्य हुआ। उसने सोचा, यहां कोई तालाब नहीं दिखाई दे रहा है, फिर यह सारस नीचे क्यों उतर रहा है?

केकड़ा बोला, "चाचाजी, यहां कोई तालाब तो दिखाई नहीं

पड़ रहा है, फिर आप नीचे क्यों उतर रहे हैं?"

सारस ने उत्तर दिया, "हां, कोई तालाब तो नहीं है, पर चट्टान तो है। देख रहे हो न उस चट्टान को! मैं तुम्हें उसी चट्टान पर ले चल रहा हूं। चट्टान पर पहुंचने पर तुम्हें सब कुछ मालूम हो जाएगा।"

केकड़े ने चट्टान की ओर देखा। चट्टान के आसपास मछलियों की हड्डियों का ढेर लगा था। केकड़े को समझने में देर नहीं लगी कि सारस धोखेबाज है। यह मछलियों को दूसरे तालाब में पहुंचाने के बहाने इसी चट्टान पर मारकर खा गया है। ये हड्डियां मछलियों की हैं। यह मुझे भी चट्टान पर बैठकर मारकर खा जाएगा!

बस, फिर क्या था? केकड़े ने अपने पंजे सारस की गरदन में गड़ाने आरंभ कर दिए। सारस फड़फाड़ाने लगा और केकडे को जमीन पर फेंकने का प्रयत्न करने लगा, पर केकड़ा उसकी गरदन से चिपक गया था। वह रह-रहकर अपने पंजे उसकी गरदन में चुभोने लगा।

सारस पीड़ा से व्याकुल होकर धरती पर गिर पड़ा, और मृत्यु के मुख में चला गया। केकड़ा रेंगता-रेंगता अपने तालाब मे जा पहुंचा। मछलियों ने केकड़े को देखकर पूछा, "क्यों भाई, तुम्हें तो सारस दूसरे तालाब में ले गया था। लौट क्यों आए?"

केकड़े ने उत्तर दिया, "मछलियो, ईश्वर को धन्यवाद दो, तुम सब मारी जाने से बच गईं। सारस बड़ा धोखेबाज था। वह दूसरे तालाब में पहुंचाने के बहाने मछलियों को ले जाता था, और एक चट्टान पर बैठकर उन्हें निगल जाता था। वह जितनी मछलियों को ले गया था, सबको मारकर खा गया है। वह मुझे भी खा जाना चाहता था, पर मैं उसके फरेब को समझ गया। मैंने अपने पंजे सारस की गरदन में चुभो-चुभोकर उसे मार डाला।"

धोखे से मछलियों के मारे जाने की खबर सुनकर सभी मछलियां बहुत दु:खी हुईं, पर धोखेबाज सारस की मृत्यु की खबर

से वे प्रसन्न भी हुई उन्होने केकडे को धन्यवाद तो दिया ही धोखेबाज सारस की मृत्यु पर हर्ष भी मनाया।

कहानी से शिक्षा

कपट का व्यापार सदा नहीं चलता।

जो दूसरों को धोखा देता है, उसे एक न एक दिन सजा भोगनी ही पड़ती है।

जो धोखेबाज को मारता है, वह यश का भागी होता है।

चोर की सद्बुद्धि

(कभी-कभी बुरे लोगों के हृदय में भी
अच्छे विचार पैदा हो जाते हैं)

तीन युवक थे—एक था राजा का लड़का, दूसरा था मंत्री का लडका और तीसरा था व्यापारी का लड़का। तीनों युवकों में घनिष्ठ मित्रता थी। तीनों युवक साथ-साथ रहते थे, साथ-साथ खेलते थे और साथ-साथ सैर-सपाटे भी किया करते थे।

तीनों लड़कों के घरों में धन-दौलत की कमी नहीं थी। अत: उन्हें खाने-पीने की कोई चिंता नहीं रहती थी। वे काम-काज बिलकुल नहीं करते थे। पूरे दिन सैर-सपाटे किया करते या खेल-कूद में लगे रहते थे।

वे तीनों जब कुछ और बड़े हुए, तो उनके माता-पिता को चिंता हुई। उन्होंने सोचा—लड़के अब बड़े हो गए हैं। फिर भी कोई काम-काज नहीं करते। उनका जीवन किस तरह बीतेगा?

एक दिन राजा ने अपने लड़के को बुलाकर कहा, "देखो बेटा, अब तुम बड़े हो गए हो। तुम्हें अब खेल-कूद छोड़कर राज-काज देखना चाहिए। आखिर राजा के लड़के हो, राज-काज नहीं देखोगे, तो क्या करोगे?"

मंत्री भी एक दिन अपने लड़के को बुलाकर कहा, "तुम अब बड़े हो गए हो, बेटा, तुम्हें अब सैर-सपाटा छोड़कर, कामकाज में लगना चाहिए।"

इसी प्रकार व्यापारी ने भी एक दिन अपने लड़के को बुलाकर कहा, "तुम अब समझदार हो गए हो, पुत्र, अब तुम्हें व्यापार करके धन कमाना चाहिए। यदि तुम इसी प्रकार सैर-

सपाटे में लगे रहोगे, तो तुम्हें घर से निकाल दिया जाएगा।''

तीनों मित्र अपने-अपने पिता की बात सुनकर चिंतित हो उठे और मन ही मन सोचने लगे— अब क्या करना चाहिए?

वे तीनों एक वृक्ष के नीचे एकत्र हुए। और अपने-अपने पिता की बात एक-दूसरे को सुनाकर सोचने लगे, अब क्या किया जाए!'

व्यापारी के लड़के ने कहा, ''हमें अब किसी काम के द्वारा पैसा कमाना चाहिए। पैसा कमाने के लिए किसी और नगर में जाना चाहिए?''

मंत्री का लड़का बोला, ''बात तो ठीक कह रहे हो, पर बिना रुपये-पैसे के दूसरी जगह कैसे जाया जा सकता है? आखिर काम-काज करने के लिए भी तो धन चाहिए।''

व्यापारी का लड़का विचारों में डूबा हुआ था। उसने सोचकर कहा, ''मैं एक ऐसे पर्वत को जानता हूं, जिस पर हीरे-जवाहरात और रत्न मिलते हैं। हमें उसी पर्वत पर चलना चाहिए। अगर रत्न मिल गए, तो धन की समस्या हल हो जाएगी।''

व्यापारी के लड़के की बात शेष दोनों मित्रों को पसंद आ गई। फिर क्या था, तीनों मित्र पर्वत की ओर चल पड़े।

मार्ग में सघन वन पड़ता था। वन के अंत में पर्वत था। तीनों मित्र उस वन को पार करके पर्वत पर आ पहुंचे।

पर्वत पर पहुंचकर उन्होंने रत्न खोजना आरंभ कर दिया। दैवयोग से उन्हें एक-एक बहुमूल्य रत्न मिल गया। तीनों मित्र बड़े प्रसन्न हुए। वे रत्नों को लेकर पर्वत से नीचे उतर पड़े।

पर्वत से नीचे उतरकर वे तीनों एक स्थान पर बैठकर सोचने लगे, आगे फिर वही सघन वन मिलेगा। वन में चोर-डाकुओं की अधिकता रहती है। कौन जाने, किसी चोर या डाकू से भेंट हो जाए। भेंट होने पर वह अवश्य हमारे रत्नों को छीन लेगा। कोई ऐसा उपाय करना चाहिए, जिससे चोर-डाकू हमारे रत्नों को छीन

न सकें।

तीनों मित्र इसी सोच-विचार में डूबे रहे। आखिर उन्होंने एक उपाय खोज ही निकाला। उन्होंने निश्चय किया कि हमें अपने-अपने रत्न निगल जाने चाहिए। पेट में जाने से कोई भी आदमी रत्नों को देख नहीं सकेगा। इस प्रकार रत्न छीने जाने से बच जाएंगे।

तीनों इसी निश्चय के अनुसार अपने-अपने रत्न भोजन के साथ निगल गए।

संयोग की बात, जिस समय वे तीनों सोच-विचार कर रहे थे, पास ही एक चोर बैठा हुआ था। उसने उन तीनों की बातें तो सुन ही लीं, उन्हें रत्नों को निगलते हुए भी देख लिया।

चोर ने विचार किया, इन तीनों के पेट में रत्न हैं। अत: रत्नों को प्राप्त करने के लिए उनके साथ लग जाना चाहिए। जब तीनों वन में पहुंचेंगे, तो मैं इन्हें मारकर इनके पेट से रत्न निकाल लूंगा।

जब तीनों मित्र चलने लगे, तो चोर उनके पास जा पहुंचा, नम्रता से बोला, "मैं अकेला हूं। यदि तुम लोग मुझे भी अपने साथ चलने दो, तो तुमसे बातचीत करते-करते मेरा भी रास्ता कट जाएगा।"

उन तीनों ने सोचा, यह अकेला है और हम तीन हैं। यह हमारा कुछ बिगाड़ तो सकेगा नहीं। अत: साथ चलने देने में हर्ज ही क्या है?

उन्होंने चोर को साथ चलने की अनुमति दे दी। फलत: चोर भी उनके साथ हो लिया।

चारों वन को पार करके एक गांव में पहुंचे। गांव के मुखिया के पास एक तोता था। तोता किसी आदमी को देखते ही समझ जाता था कि इसके पास क्या है। वह मनुष्य की तरह बात भी कर सकता था।

वे चारों जब मुखिया के द्वार के सामने से निकलने लगे तो तोते ने उन्हें देख लिया। उन्हें देखते ही वह समझ गया कि इनके पास रत्न हैं। अतः वह जोर-जोर से बोलने ला, "इन आदमियों के पास रत्न हैं।"

तोते की बात मुखिया के भी कानों में पड़ी। वह तोते की बात पर विश्वास करता था। उसने सोचा, तोते के कहने के अनुसार, इन आदमियों के पास रत्न हैं; अतः इन्हें पकड़कर रत्न छीन लेने चाहिए।

मुखिया ने चारों आदमियों को पकड़ मंगवाया। वह उन्हें डांट-डांटकर कहने लगा, "तुम्हारे पास रत्न हैं, निकालकर हमारे सामने रख दो।"

चारों आदमियों ने गिड़गिड़ाते हुए कहा, "हमारे पास रत्न आदि कुछ नहीं है। आप चाहें तो हमारी तलाशी ले लें।"

मुखिया ने उन चारों की बारी-बारी तलाशी ली, पर उनमें से किसी के पास भी रत्न नहीं निकला। निकलता भी तो कैसे? रत्न तो तीनों के पेट में थे।

आखिर मुखिया ने चारों को छोड़ दिया। जब चारों चलने लगे, तब तोता फिर जोर-जोर से कहने लगा, "इनके पास रत्न हैं! इनके पास रत्न हैं!"

मुखिया के मन में संदेह पैदा हो उठा। वह सोचने लगा— मेरा तोता तो कभी झूठ बोलता नहीं। हो सकता है, इनके पास रत्न हों। यह भी हो सकता है, ये रत्न को निगल गए हों।

अतः मुखिया ने चारों आदमियों को फिर पकड़ मंगाया। उसने उन्हें एक कमरे में बंद करते हुए कहा, "कल सवेरे तक रत्न हमारे हवाले कर दो। नहीं तो बारी-बारी से चारों के पेट चीर कर रत्न निकाल लिए जाएंगे।"

मुखिया ने चारों को कमरे में बंद कर दिया। बेचारे चारों युवक चिंतित हो उठे, भयभीत हो उठे।

रात में चोर के मन में एक नया विचार पैदा हुआ। उसने सोचा, मैंने सदा पाप किए हैं, आज एक अच्छा काम करने का अवसर मिला है—फिर क्यों न लाभ उठाया जाए? रत्न मेरे पेट में नहीं, इन तीनों के पेट में है। अगर मुखिया पहले मेरा पेट चीरकर देखे, तो उसे रत्न नहीं मिलेगा। हो सकता है, मेरे पेट में रत्न न मिलने पर वह यह सोचकर इन तीनों को छोड़ दे कि तोता झूठ बोल रहा है। इन तीनों के पास रत्न नहीं हैं। इस तरह मेरे मरने से तीनों की जान बच जाएगी। अतः चोर ने तीनों मित्रों को बचाने का निश्चय कर लिया।

दूसरे दिन सवेरे जब मुखिया कमरा खोलकर भीतर गया, तो चोर ने हाथ जोड़कर निवेदन किया, "मुखियाजी, आप निश्चय ही रत्न के लिए हमारा पेट चीर सकते हैं, पर मेरी एक प्रार्थना है। आप सबसे पहले मेरा पेट चीरकर देखें।"

मुखिया ने चोर की बात मान ली और सबसे पहले उसी के पेट की चीर-फाड़ की। चोर के पेट में कुछ नहीं मिला। मिलता भी तो कहां से मिलता? रत्न तो तीनों युवकों के पेट में थे!

चोर के पेट में रत्न न मिलने से मुखिया ने सोचा, मैंने इसके पेट की चीर-फाड़ तो की, पर मिला कुछ नहीं। मैंने व्यर्थ ही इसकी जान ले ली। हो सकता है, इन तीनों के पेट में भी रत्न न हों। मुझे व्यर्थ ही इन तीनों की भी जान नहीं लेनी चाहिए। तो क्या तोता झूठ बोलता है? वह तो पक्षी है। वह सच और झूठ को क्या जाने?

मुखिया ने तीनों युवकों को छोड़ दिया। चोर की सद्‌बुद्धि ने उन तीनों की जान बचा दी।

तीनों युवक अपने-अपने घर जाकर काम-काज करने में लग गए और सुख से जीवन व्यतीत करने लगे।

कहानी से शिक्षा

बुरे मनुष्यों के हृदय में भी कभी-कभी अच्छे विचार पैदा हो जाते हैं।

अच्छे विचारों से सदा भलाई ही होती है।

जिस आदमी के विचार स्थिर नहीं रहते, उसे धोखा खाना पड़ता है।

बुद्धि की विजय

(बुद्धि न होने पर बल व्यर्थ होता है)

एक वन में हाथियों का एक झुंड रहता था। झुंड का एक सरदार था। उसे यूथपति या गजराज कहते थे। गजराज विशालकाय था, लंबी सूंड़ थी और लंबे तथा मोटे दांत थे। खंभे के समान मोटे-मोटे पैर थे। चिंघाड़ता था तो सारा वन गूंज उठता था।

गजराज अपने झुंड के हाथियों को बड़ा प्यार करता था। स्वयं कष्ट उठा लेता था, पर झुंड के किसी भी हाथी को कष्ट में नहीं पड़ने देता था। और सारे के सारे हाथी भी गजराज के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते थे।

एक बार जलवृष्टि न होने के कारण वन में जोरों का अकाल पड़ा। नदियां, सरोवर सूख गए। वृक्ष और लताएं भी सूख गईं। पानी और भोजन के अभाव में पशु-पक्षी वन को छोड़कर भाग खड़े हुए। वन में चीख-पुकार होने लगी, हाय-हाय होने लगी।

गजराज के झुंड के हाथी भी अकाल के शिकार होने लगे। वे भी भोजन और पानी न मिलने से तड़प-तड़पकर मरने लगे। झुंड के हाथियों का बुरा हाल देखकर गजराज बड़ा दु:खी हुआ। वह सोचने लगा, कौन-सा उपाय किया जाए, जिससे हाथियों के प्राण बचें।

एक दिन गजराज ने तमाम हाथियों को बुलाकर उनसे कहा, "इस वन में न तो भोजन है, न पानी है! तुम सब भिन्न-भिन्न दिशाओं में जाओ, भोजन और पानी की खोज करो।"

हाथिया ने गजराज की आज्ञा का पालन किया हाथी भिन्न भिन्न दिशाओं में छिटक गए।

एक हाथी ने लौटकर गजराज को सूचना दी, "यहां से कुछ दूर पर एक दूसरा वन है। वहां पानी की बहुत बड़ी झील है। वन के वृक्ष फूलों और फलों से लदे हुए हैं।"

गजराज बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने हाथियों से कहा, "अब हमें देर न करके तुरंत उसी वन में पहुंच जाना चाहिए, क्योंकि वहां भोजन और पानी दोनों हैं।"

गजराज अन्य हाथियों के साथ दूसरे वन में चला गया। हाथी वहां भोजन और पानी पाकर बड़े प्रसन्न हुए।

उस वन में खरगोशों की एक बस्ती थी। बस्ती में बहुत-से खरगोश रहते थे। हाथी खरगोशों की बस्ती से ही होकर झील में पानी पीने के लिए जाया करते थे।

हाथी जब खरगोशों की बस्ती से निकलने लगते थे, तो छोटे-छोटे खरगोश उनके पैरों के नीचे आ जाते थे। कुछ खरगोश तो मर जाते थे, कुछ घायल हो जाते थे।

रोज-रोज खरगोशों को मरते और घायल होते देखकर खरगोशों की बस्ती में हलचल मच गई। खरगोश सोचने लगे, यदि हाथियों के पैरों से वे इसी तरह कुचले जाते रहे, तो वह दिन दूर नहीं जब उनका खात्मा हो जाएगा।

अपनी रक्षा का उपाय सोचने के लिए खरगोशों ने एक सभा बुलाई। सभा में बहुत से खरगोश इकट्ठे हुए। खरगोशों के सरदार ने हाथियों के अत्याचारों का वर्णन करते हुए कहा, "क्या हममें से कोई ऐसा है, जो अपनी जान पर खेलकर हाथियों का अत्याचार बंद करा सके?"

सरदार की बात सुनकर एक खरगोश बोल उठा, "यदि मुझे

खरगोशों का दूत बनाकर गजराज के पास भेजा जाए, तो मैं हाथियों के अत्याचार को बंद करा सकता हूं।''

सरदार ने खरगोश की बात मान ली और उसे खरगोशों का दूत बनाकर गजराज के पास भेज दिया।

खरगोश गजराज के पास जा पहुंचा। वह हाथियों के बीच में खडा था। खरगोश ने सोचा, वह गजराज के पास पहुंचे तो किस तरह पहुंचे। अगर वह हाथियों के बीच में घुसता है, तो हो सकता है, हाथी उसे पैरों से कुचल दें

यह सोचकर वह पास ही की एक ऊंची चट्टान पर चढ़ गया। चट्टान पर खड़ा होकर उसने गजराज को पुकारकर कहा, ''गजराज, मैं चंद्रमा का दूत हूं। चंद्रमा के पास से तुम्हारे लिए एक संदेश लाया हूं।''

चंद्रमा का नाम सुनकर, गजराज खरगोश की ओर आकर्षित हुआ। उसने खरगोश की ओर देखते हुए कहा, ''क्या कहा तुमने? तुम चंद्रमा के दूत हो? तुम चंद्रमा के पास से मेरे लिए क्या संदेश लाए हो?''

खरगोश बोला, ''हां गजराज, मैं चंद्रमा का दूत हूं। चंद्रमा ने तुम्हारे लिए संदेश भेजा है। सुनो, तुमने चंद्रमा की झील का पानी गंदा कर दिया है। तुम्हारे झुंड के हाथी खरगोशों को पैरों से कुचल-कुचलकर मार डालते हैं। चंद्रमा खरगोशों को बहुत प्यार करते हैं, उन्हें अपनी गोद में रखते हैं। चंद्रमा तुमसे बहुत नाराज हैं। तुम सावधान हो जाओ। नहीं तो चंद्रमा तुम्हारे सारे हाथियों को मार डालेंगे।''

खरगोश की बात सुनकर गजराज भयभीत हो उठा। उसने खरगोश को सचमुच चंद्रमा का दूत और उसकी बात को सचमुच चद्रमा का संदेश समझ लिया। उसने डर कर कहा, ''यह तो बड़ा

बुरा सदेश ह तुम मुझे फौरन चद्रमा के पास ले चलो मै उनसे अपने अपराधो के लिए क्षमा याचना करूगा

खरगोश गजराज को चंद्रमा के पास ले जाने के लिए तैयार हो गया। उसने कहा, "मैं तुम्हें चंद्रमा के पास ले चल सकता हूं, पर शर्त यह है कि तुम अकले ही चलोगे।"

गजराज ने खरगोश की बात मान ली।

पूर्णिमा की रात थी। आकाश में चंद्रमा हँस रहा था। खरगोश गजराज को लेकर झील के किनारे गया। उसने गजराज से कहा, "गजराज, मिलो चंद्रमा से।"

खरगोश ने झील के पानी की ओर संकेत किया। पानी में पूर्णिमा के चंद्रमा की परछाईं साफ-साफ दिखाई पड़ रही थी। गजराज ने परछाईं को ही चंद्रमा मान लिया।

गजराज ने चंद्रमा से क्षमा मांगने के लिए अपनी सूंड़ पानी में डाल दी। पानी में लहरें पैदा हो उठीं, परछाईं अदृश्य हो गई।

गजराज बोल उठा, "दूत, चंद्रमा कहां चले गए?"

खरगोश ने उत्तर दिया, "चंद्रमा तुमसे नाराज हैं। तुमने झील के पानी को अपवित्र कर दिया है। तुमने खरगोशों की जान लेकर पाप किया है इसलिए चंद्रमा तुमसे मिलना नहीं चाहते।"

गजराज ने खरगोश की बात सच मान ली। उसने डर कर कहा, "क्या ऐसा कोई उपाय है, जिससे चंद्रमा मुझसे प्रसन्न हो सकते हैं?"

खरगोश बोला, "हां, है। तुम्हें प्रायश्चित्त करना होगा। तुम कल सवेरे ही अपने झुंड के हाथियों को लेकर यहां से दूर चले जाओ। चंद्रमा तुम पर प्रसन्न हो जाएंगे।"

गजराज प्रायश्चित्त करने के लिए तैयार हो गया। वह दूसरे दिन हाथियों के झुंड सहित वहां से चला गया।

इस तरह खरगोश की बुद्धिमानी ने बलवान गजराज को धोखे में डाल दिया। और उसने अपनी बुद्धिमानी के बल से ही खरगोशों को मृत्यु के मुख में जाने से बचा लिया।

कहानी से शिक्षा

बुद्धि के बिना बल व्यर्थ होता है।

बलवान शत्रु को बल से नहीं, बुद्धि से ही जीतना चाहिए।

सांप की मृत्यु

(चालाक और दुष्ट को चालाकी से ही मारना चाहिए)

एक वृक्ष के ऊपर एक कौवा घोंसला बनाकर अपनी पत्नी के साथ रहता था। दोनों में बड़ा प्रेम था। इसलिए दोनों बड़े सुख के साथ रहते थे। दोनों रोज खाने की खोज में साथ-साथ उड़ते थे, और खा-पीकर फिर साथ-साथ लौट आते थे।

कुछ दिनों बाद कहीं से एक काला सांप आ गया। सांप भी वृक्ष की जड़ में बिल बनाकर रहने लगा।

कौवी सांप को देखकर डर गई। उसने कौवे से कहा, "सांप बड़े दुष्ट स्वभाव का होता है। न जाने यह कहां से आ गया!"

कौवे ने कौवी को ढाढ़स बंधाया। उसने कहा, "घबराओ नहीं, ईश्वर रक्षक है।"

कुछ दिनों पश्चात कौवी ने अंडे दिए। अंडों से बच्चे निकले। बच्चे धीरे-धीरे बड़े हुए। उछलने-कूदने लगे। कौवा और कौवी दोनों बच्चों को बहुत प्यार करते थे।

एक दिन बच्चों को घोंसले में छोड़कर दोनों भोजन की खोज में चले गए। सन्नाटा देखकर सांप बिल से बाहर निकला। वह धीरे-धीरे वृक्ष पर चढ़ गया। उसने कौवे के घोंसले के पास जाकर उसके बच्चों को खा लिया। और चुपके से वृक्ष से नीचे उतरकर अपने बिल में चला गया।

कौवा और कौवी—दोनों जब लौटे तो घोंसले में अपने बच्चों

को न पाकर बड़े दुःखी हुए। उन्होंने आसपास की चिड़ियों से अपने बच्चों के संबंध में पूछताछ की, पर कोई कुछ भी नहीं बता सका। कौवा और कौवी करते तो क्या करते? दोनों रो-धोकर शांत हो गए।

कुछ दिनों पश्चात् कौवी ने फिर अंडे दिए। अंडे से बच्चे निकले। बच्चे कुछ बड़े हुए, उछलने-कूदने लगे। कौवा और कौवी ने परस्पर सलाह की, हमें अपने बच्चों को अकेला छोड़कर नहीं जाना चाहिए। दोनों में से एक को सदा घोंसले में रहना चाहिए।

एक दिन कौवा भोजन की खोज में चला गया था। कौवी अपने बच्चों के पास घोंसले में थी। चारों ओर सन्नाटा था।

सांप अपने बिल से बाहर निकला और धीरे-धीरे वृक्ष के ऊपर चढ़ने लगा। कौवी ने सांप को देख लिया। वह जोर-जोर से कांव-कांव करने लगी, पर सांप के ऊपर कुछ भी प्रभाव नहीं पडा। वह वृक्ष पर चढ़ता ही गया और घोंसले के पास जा पहुंचा।

कौवी सहायता के लिए जोर-जोर से पुकारते लगी, पर उसकी सहायता के लिए कोई भी उसके पास नहीं पहुंच सका। साप पहले की तरह उसके बच्चों को खाकर वृक्ष के नीचे उतर गया। कौवी करती तो क्या करती? सिर पीट-पीटकर रोती ही रह गई।

जब कौवा लौटा तो कौवी ने रो-रोकर सांप के द्वारा बच्चों के खा जाने की बात सुनाई। कौवे की आंखों से भी आंसू निकल आए, पर उसने धैर्य से काम लिया। कौवी रो रही थी, विलाप कर रही थी। कौवा जी कड़ा करके कौवी को समझाने लगा। वह बोला, "अब रो-धोकर क्या करोगी? जो होना था, वह हो गया। जी कड़ा करो, धीरज धरो।"

कौवी रोती हुई बोली साप दो दो बार मेरे बच्चो को खा गया अब मै इस वृक्ष पर नही रहूगी। चलो, किसी दूसरे वृक्ष पर चलें।''

कौवा बोला, ''इस वृक्ष पर मेरे पूर्वज रह चुके हैं। इसे छोड़ना ठीक नहीं है। धैर्य धरकर इसी वृक्ष पर रहो। मैं सांप को मारने का उपाय करूंगा।''

किंतु कौवे के बहुत समझाने पर भी कौवी बार-बार यही कहती रही कि किसी दूसरे वृक्ष पर चलो। आखिर कौवे ने कहा, ''तुम मेरी बात नहीं मानती, तो अड़ोस-पड़ोस की चिड़ियों से पूछो।''

कौवे और कौवी ने जब अड़ोस-पड़ोस की चिड़ियों से सलाह ली, तो उन्होंने भी कहा, ''तुम दोनों को इसी वृक्ष पर रहना चाहिए। हम सभी मिलकर सांप का मुकाबला करेंगे।''

इतने पर भी कौवी के मन को शांति नहीं मिली। आखिर कौवा बोला, ''तुम्हें इस तरह संतोष नहीं होता, तो चलो लोमड़ी मौसी के पास चलें। वह सब से अधिक बुद्धिमान है। वह जो कुछ कहे, उसी के अनुसार हमें और तुम्हें काम करना चाहिए।''

कौवी लोमड़ी के पास जाने के लिए राजी हो गई।

कौवी को लेकर कौवा लोमड़ी के पास गया। उसने लोमड़ी को सांप के द्वारा बच्चों के खा जाने की बात सुनाकर कहा, ''हम दोनों अब क्या करें? उसी वृक्ष पर रहें, या उसे छोड़ दें?''

लोमड़ी सोचकर बोली, ''तुम दोनों कहीं मत जाओ, अपने घर में रहो। मैं तुम्हें एक ऐसा उपाय बता रही हूं, जिसके अनुसार काम करने से सांप को उसके पापों का दंड मिल जाएगा। पास के तालाब पर राजकुमारियां स्नान करने के लिए आती हैं। वे अपने गहने-कपड़े उतारकर रख लेती हैं और स्नान करने के लिए

पानी मे घुस जाती है

कल सवेरे तुम दोनो वही पहुच जाओ राजकुमारिया जब अपने गहने रखकर पानी में घुसें, तो तुम दोनों एक-एक मोती की माला अपनी-अपनी चोंच से उठाकर भाग चलो। इतने जोर-जोर से बोलो कि नौकरों का ध्यान तुम दोनों की ओर खिंच जाए। वे मोती की माला के लिए तुम्हारा पीछा करेंगे। तुम दोनों मोती की माला लेकर अपने वृक्ष पर लौट जाओ और मालाओं को सांप के बिल में डालकर अपने घोंसले में जा बैठो। फिर देखो क्या होता है।''

कौवा और कौवी ने लोमड़ी की बात मान ली। दोनों ने दूसरे दिन वही किया जो लोमड़ी ने कहा था। दोनों कांव-कांव करते हुए एक-एक मोती की माला चोंच में उठाकर भाग चले। नौकरों ने उनका पीछा किया। पर वे दोनों वृक्ष के नीचे पहुंचकर मालाओं को सांप के बिल में डालकर अपने घोंसले में जा बैठे। नौकर भी पीछा करते हुए वृक्ष के नीचे पहुंचे। उन्होंने वृक्ष की जड़ में बिल में मोतियों की माला देखी।

नौकर मोतियों की माला को निकालने के लिए बिल को खोदने लगे। सांप बिल के भीतर बैठा हुआ था। वह छेड़छाड़ को सहन नहीं कर सका। फुफकार मारता हुआ बाहर निकल पड़ा।

नौकर पहले तो डरकर भाग खड़े हुए, फिर सबने मिलकर साप का सामना किया। एक साथ बहुत से डंडे और तलवार पड़ने से सांप मर गया।

कौवा और कौवी दोनों बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने लोमड़ी के पास जाकर उसे बहुत-बहुत धन्यवाद दिया। लोमड़ी ने कहा, ''किसी भी दुष्ट से डरकर भागना नहीं चाहिए, बल्कि दुष्ट को दुष्टता से ही जीतने का प्रयत्न करना चाहिए।''

कहानी से शिक्षा

बुरे आदमी के पड़ोस में नहीं रहना चाहिए।

बुरे आदमी को सज्जनता से नहीं छल से जीतने का प्रयत्न करना चाहिए।

विपत्ति में धैर्य नहीं छोड़ना चाहिए। बुद्धिमानों की सलाह से काम करना चाहिए।

गवैया गधा

(मूर्ख के साथ नहीं रहना चाहिए)

एक धोबी के पास एक गधा था। गधा प्रतिदिन मैले कपड़ों की गठरी पीठ पर लादकर घाट पर जाता था और संध्या समय धुले हुए कपड़ों का गट्ठर लेकर फिर घर लौट आता था। उसका प्रतिदिन यही काम था। रात में धोबी उसे खुला छोड़ देता था।

रात का समय था। गधा घूम रहा था। कहीं से घूमता हुआ एक सियार आ पहुंचा। गधे और सियार में कुछ देर तक बातचीत हुई। दोनों ने एक-दूसरे का हालचाल पूछा, फिर दोनों परस्पर मित्र बन गए।

गधा और सियार दोनों बातचीत करते हुए एक खेत में पहुंचे। खेत में ककड़ियां बोई हुई थीं। पौधों में ककड़ियां लगी थीं। दोनों ने जी भरकर ककड़ियां खाईं। ककड़ियां उन्हें अधिक स्वादिष्ट लगीं।

अतः गधा और सियार दोनों प्रतिदिन रात में ककड़ियां खाने के लिए उस खेत में जाने लगे। दोनों जी भरकर ककड़ियां खाते थे और चुपचाप खेत से निकल जाते थे।

मीठी-मीठी ककड़ियां खाने के कारण दोनों मोटे-ताजे हो गए। साथ ही उन्हें ककड़ियां खाने की लत भी लग गई। जब तक ककड़ियां खा नहीं लेते थे, उन्हें चैन नहीं पड़ता था।

धीरे-धीरे कई मास बीत गए। एक दिन चांदनी रात थी। आकाश में चंद्रमा हँस रहा था। गधा और गीदड़ दोनों अपनी आदत के अनुसार खेत में जा पहुंचे। दोनों ने जी भरकर ककड़ियां खाईं। गधा जब ककड़ियां खा चुका, तो बोला, "अहा हा, कितनी

सुदर रात है आकाश मे चद्रमा हस रहा है चारो ओर दूध की धारा सी बह रही है ऐसी सुदर रात मे तो मेरा मन गाने को कर रहा है।"

गधे की बात सुनकर सियार बोला, "गधे भाई, ऐसी भूल मत करना। गाओगे तो, खेत का रखवाला दौड़ पड़ेगा। फिर ऐसी पूजा करेगा कि छठी का दूध याद आ जाएगा!"

गधा गर्व के साथ बोला, "वाह, मैं क्यों न गाऊं? मेरा कंठ-स्वर बड़ा सुरीला है। तुम्हारा कंठ-स्वर सुरीला नहीं है, इसीलिए तुम मुझे गाने से मना कर रहे हो। मैं गाऊंगा, अवश्य गाऊंगा।"

सियार बोला, "गधे भाई, मेरा कंठ-स्वर तो जैसा है, वैसा है। तुम्हारे सुरीले कंठ-स्वर को सुनकर खेत का रखवाला प्रसन्न तो नहीं होगा, डंडा लेकर अवश्य दौड़ पड़ेगा। पीठ पर इतने डंडे मारेगा कि आंखें निकल आएंगी।"

पर सियार के समझाने का प्रभाव गधे के ऊपर बिल्कुल नहीं पड़ा। वह बोला, "तुम मूर्ख और कायर हो। मैं तो गाऊंगा, अवश्य गाऊंगा।"

गधा सिर ऊपर उठाकर रेंकने के लिए तैयार हो गया। गीदड़ बोला, "गधे भाई, जरा रुको। मुझे खेत से बाहर निकल जाने दो, तब गाओ। मैं खेत से बाहर तुम्हारी प्रतीक्षा करूंगा।"

गीदड़ अपनी बात समाप्त करके खेत से बाहर चला गया।

गधा रेंकने लगा। एक बार, दो बार, और तीन बार। गधे की आवाज चारों ओर गूंज उठी। खेत के रखवाले के कानों में भी पडी। वह हाथ में डंडा लेकर दौड़ पड़ा।

रखवाले ने खेत में पहुंचकर गधे को पीटना आरंभ कर दिया। उसने थोड़ी ही देर में गधे को इतने डंडे मारे कि वह बेदम होकर गिर पड़ा।

गधे के गिरने पर रखवाले ने उसके गले में ऊखल भी बांध

दी।

गधे को जब होश आया, तो वह लंगड़ाता-लंगड़ाता ऊखल को घसीटता हुआ खेत के बाहर गया। वहां सियार उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। वह गधे को देखकर बोला, "क्यों गधे भाई, तुम्हारे गले में यह क्या बंधा हुआ है? क्या तुम्हारे सुरीले कंठ-स्वर पर रीझकर खेत के रखवाले ने तुम्हें यह पुरस्कार दिया है?"

गधा लज्जित हो गया। वह नीची गरदन करके बोला, "अब और लज्जित मत करो, सियार भाई! झूठे अभिमान का यही फल होता है। अब तो किसी तरह इस ऊखल को गले से छुड़ाकर मेरे प्राण बचाओ।"

सियार ने रस्सी काटकर ऊखल को अलग कर दिया। गधा और सियार फिर मित्र की तरह घूमने लगे, पर गधे ने फिर कभी अनुचित समय पर गाने की मूर्खता नहीं की।

कहानी से शिक्षा

मूर्ख मनुष्य का साथ नहीं करना चाहिए। जो झूठा गर्व करता है, उसे हानि उठानी पड़ती है।

बोलने के पहले समय और कुसमय का विचार कर लेना चाहिए।

चालाक आदमी से बचें, वह बलवान को भी मूर्ख बना देता है।

शेर का मंत्री

(बड़े-बड़े बलवान भी चालाक के फंदे में फंस जाते हैं)

वन में एक शेर रहता था। शेर वृद्ध हो गया था, वह शिकार करने में असमर्थ हो गया था, अतः उसे कभी-कभी भूखा ही रह जाना पड़ता था।

शेर ने सोचा, इस तरह कैसे निर्वाह होगा? कोई ऐसा उपाय करना चाहिए, जिससे प्रतिदिन खाने के लिए मिल जाया करे।

शेर ने किसी को अपना सहायक बनाने का निश्चय किया, पर वह सहायक बनाए, तो किसे बनाए? शेर सोच-विचार करने लगा।

शेर की दृष्टि सियार पर गई। उसने सोचा, इस वन के जानवरों में सियार ही सबसे अधिक बुद्धिमान है। अतः उसी को अपना सहायक बनाना चाहिए।

शेर ने सियार को बुलाकर कहा, "मैं तुम्हारी बुद्धिमानी पर अधिक प्रसन्न हूं। तुम्हें अपना मंत्री बनाना चाहता हूं। क्या तुम मेरा मंत्री बनना स्वीकार करोगे?"

शेर की बात सुनकर सियार भयभीत हो उठा, क्योंकि वह शेर के स्वभाव से परिचित था। उसने सोचा, अवश्य कोई न कोई बात है। तभी शेर मुझे अपना मंत्री बना रहा है। यदि मैं इसकी बात नहीं मानता, तो यह क्रुद्ध हो जाएगा। इसे क्रुद्ध करना ठीक नहीं। इसे तो चालाकी से ही परास्त करना चाहिए।

सियार बोला, "आप वन के राजा हैं। आप मुझे अपना मंत्री बनाएंगे, यह तो मेरे लिए गौरव की बात है। आपकी सेवा में मेरा जीवन व्यतीत हो, इससे बढ़कर हर्ष की बात मेरे लिए क्या हो

सकती है?"

शेर ने सियार को मंत्री बना लिया। सियार मंत्री के रूप में काम-काज करने लगा।

शेर ने सियार से कहा, "मैं तुम्हें एक काम सुपुर्द करता हूं। तुम प्रतिदिन मेरे लिए भोजन का प्रबंध किया करो। जाओ, कहीं से ढूंढ़कर भोजन ले आओ।"

सियार शेर को प्रणाम करके भोजन की खोज में निकल पड़ा।

कुछ दूरी पर एक हृष्ट-पुष्ट गधा चर रहा था। गधे को देखकर सियार ने सोचा—बस, इसी को शेर के पास ले चलना चाहिए। यह बड़ा मूर्ख है। शीघ्र ही मेरी बातों में आ जाएगा।

सियार गधे के पास जा पहुंचा। बोला, "गधे भाई, मैं शेर का दूत हूं। तुम्हारे लिए एक शुभ समाचार लाया हूं। वन के राजा शेर तुम्हें अपना महामंत्री बनाना चाहते हैं। चलो, मेरे साथ शेर के पास चलो। और उनके महामंत्री बनकर मौज उड़ाओ।"

गधे ने आश्चर्य के साथ कहा, "वन के राजा मुझे महामंत्री बनाएंगे! यह क्या कह रहे हो? मैं तो जाति का गधा हूं, मूर्खता के लिए प्रसिद्ध हूं। मैं भला महामंत्री कैसे बन सकता हूं?"

सियार बोला, "यह तुम क्या कह रहे हो, गधेजी? तुम अपने को मूर्ख बता रहे हो! अरे, तुम से बढ़कर बुद्धिमान और परिश्रमी तो कोई खोजने पर भी नहीं मिलेगा। वन के राजा ने तुम्हारी बुद्धिमानी पर प्रसन्न होकर ही तुम्हें महामंत्री बनाने का निश्चय किया है। मेरी बात मानो और चलो, शेर का महामंत्री बनकर सुख भोगो।"

मूर्ख गधा अपनी प्रशंसा सुनकर फूल उठा। वह सियार की बात को सच मानकर, उसके साथ चल पड़ा।

सियार जब गधे को लेकर शेर के पास पहुंचा, तो मोटे-ताजे गधे को देखकर शेर प्रसन्न हुआ। उसने मन ही मन सियार की

प्रशंसा करके सोचा, इसका मांस खाने में बड़ा मजा आएगा।

गधा शेर से कुछ दूर पर ही खड़ा हो गया था। भय के कारण उससे शेर के पास जाने का साहस नहीं हो रहा था।

उधर शेर भूखा था। मोटे-ताजे गधे को देखकर उसके मुंह में पानी भी आ गया था। वह अपने को रोक नहीं सका, स्वयं गधे के पास जा पहुंचा।

शेर भूख से व्याकुल हो रहा था। वह गधे पर झपटने के लिए तैयार हो गया।

शेर की मंशा भांपकर गधा भाग खड़ा हुआ। सियार ने गधे को रोकने का बड़ा प्रयत्न किया, पर वह रुका नहीं।

शेर बोला, "मंत्रीजी, गधा तो भाग गया। मैं बड़ा भूखा हूं। किसी प्रकार उसे फिर लाओ।"

सियार ने उत्तर दिया, "महाराज, आपने जल्दबाजी करके सारा गुड़ गोबर कर दिया। आपको गधे के पास नहीं जाना चाहिए था। आप चुपचाप अपनी जगह पर बैठे रहते। मैं स्वयं गधे को आपके पास ले जाता। खैर, जो हो गया, सो हो गया। मैं आपकी आज्ञानुसार पुनः गधे को बुलाने जा रहा हूं। पर याद रखिए, इस बार जल्दबाजी मत कीजिएगा।"

सियार गधे को बुलाने के लिए पुनः चल पड़ा। कुछ दूर पर उसे गधा चरता हुआ दिखाई पड़ा।

सियार ने गधे के पास जाकर कहा, "गधेजी, आप भाग क्यों आए?"

गधा बोला, "सियार भाई, भाग न आता तो क्या करता? शेर तो मुझे मारकर खा जाना चाहता था।"

सियार बोला, "बिलकुल झूठ। यदि शेर तुमको मारना चाहता, तो तुम भागकर भी नहीं बच सकते थे। शेर तुम्हारे पीछे दौड़कर तुम्हें पकड़कर खा सकता था। सच बात तो यह है, शेर तुम पर बड़ा प्रसन्न था। वह तुम्हारा स्वागत करने के लिए तुम्हारे

पास गया था

मूर्ख गधे के मन मे प्रशसा से गर्व पैदा हो गया उसने अपने-आपको भूलकर सियार की बात सच मान ली। वह सियार के साथ शेर के पास जाने के लिए फिर तैयार हो गया।

सियार अपनी सफलता पर बड़ा प्रसन्न हुआ। वह गधे को साथ लेकर दूसरी बार शेर के पास पहुंचा।

इस बार गधे को देखकर भी शेर चुपचाप अपने स्थान पर बैठा ही रह गया। सियार ने गधे से कहा, "गधेजी, आपको वन के राजा के पास जाकर उन्हें प्रणाम करना चाहिए और उनसे कहना चाहिए कि आप महामंत्री बनने के लिए तैयार हैं।"

सियार की बात मानकर गधा ज्यों ही शेर के पास गया, शेर ने उसे दबोच लिया। उसने पंजों से गला दबाकर गधे का काम तमाम कर दिया।

गधा जमीन पर गिर पड़ा। सियार ने शेर से कहा, "महाराज, आप वन के राजा हैं। आपको स्नान-ध्यान करने के पश्चात् भोजन करना चाहिए।"

शेर को अपने बल का बड़ा गर्व था। उसने सोच रखा था कि सियार उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता। अतः उसने सियार की बात सुनकर कहा, "अच्छी बात है। मैं स्नान करने जा रहा हूं। जब तक मैं लौट न आऊं, तुम गधे की लाश की रखवाली करते रहना।"

सियार बोला, "आप निश्चिंत होकर जाइए, महाराज! मेरे रहते गधे की लाश को कोई छू तक नहीं सकेगा।"

शेर स्नान करने के लिए चला गया।

सियार मन ही मन सोचने लगा, शेर को और भी अधिक मूर्ख बनाना चाहिए। उसे अपने बल का बड़ा गर्व है। वह भी क्या समझेगा कि किसी सियार से उसकी भेंट हुई थी।

सियार ने मन ही मन कुछ सोचकर गधे का सिर तोड़कर

उसके भीतर से उसका दिमाग निकालकर खा लिया।

शेर जब स्नान करने लौटा, तो भूख से व्याकुल हो रहा था। वह गधे की खोपड़ी पर ध्यान न देकर उसका मांस खाने लगा। जब पेट कुछ भर गया, तो उसका ध्यान खोपड़ी की ओर गया। वह सियार की ओर देखता हुआ बोला, ''मंत्रीजी, गधे का दिमाग कहां गया? मैं तो उसके दिमाग को खाना चाहता था।''

सियार ने उत्तर दिया, ''महाराज, आप भी कितने भोले हैं! गधे के सिर में दिमाग था ही नहीं। यदि उसके सिर में दिमाग होता, तो वह आपके पास आता क्यों?''

भूखे और बल के गर्व से चूर शेर ने सियार की यह बात सच मान ली कि गधे के सिर में दिमाग नहीं था। बात तो सच ही थी। गधे के सिर में दिमाग नहीं था। अर्थात् बुद्धि नहीं थी। यदि बुद्धि होती तो वह सियार की बात मानकर कदापि शेर के पास न जाता।

मूर्ख और बुद्धिहीन मनुष्य इसी प्रकार लोभ में फंसकर हानि उठाते हैं।

कहानी से शिक्षा

मूर्ख मनुष्य शीघ्र ही दूसरों की बातों पर विश्वास कर लेते हैं।

जिसके मन में घमंड होता है, उसे फंसाना कठिन नहीं होता।

यदि बुद्धि का सहारा लिया जाए, तो उसके द्वारा बलवानों पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है।

शाप से छुटकारा

(पुत्र चाहे जैसा हो, मां के हृदय में उसके प्रति स्नेह होता ही है)

एक गांव में एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसकी कोई संतान नहीं थी। पति और पत्नी दोनों संतान की कामना से लगातार व्रत, उपवास और पूजा-पाठ किया करते थे।

वर्षों पूजा-पाठ करने के पश्चात् ब्राह्मण की कामना फलवती हुई। उसके घर में एक पुत्र ने जन्म लिया, पर वह पुत्र मनुष्य नहीं सांप था! सांप के पैदा होने की खबर जब गांव में फैली, तो गांव के लोग दौड़-दौड़कर उसे देखने के लिए ब्राह्मण के घर जा पहुंचे। लोगों ने सांप को देखकर ब्राह्मण को सलाह दी, "सांप को बढ़ने नहीं देना चाहिए। बढ़ने पर यह हानि पहुंचाएगा, इसलिए इसे मार डालना चाहिए।"

पर ब्राह्मण की पत्नी को गांव के लोगों की सलाह पसंद नहीं आई। उसने कहा, "सांप हो या कुछ हो, मेरे गर्भ से पैदा हुआ है, अतः वह मेरा पुत्र है। भले ही वह बड़ा होने पर मुझे हानि पहुंचाए, पर मैं तो सच्चे हृदय से उसका पालन-पोषण करूंगी।"

ब्राह्मणी की बात सुनकर ब्राह्मण चुप रहा। गांव के लोग भी मौन हो गए। ब्राह्मणी बड़े प्यार से सांप का पालन-पोषण करने लगी। वह प्रतिदिन सांप को नहलाती, खिलाती-पिलाती और एक संदूक में मुलायम बिछौना बिछाकर सुला दिया करती थी। वह सांप को लोरियां और मीठे-मीठे गीत भी सुनाया करती थी। सांप ज्यो-ज्यों बड़ा होने लगा, त्यों-त्यों ब्राह्मणी के मन का हर्ष भी बढने लगा। वह उसे देखकर फूली नहीं समाती थी। प्रतिदिन

उसकी दीर्घायु के लिए भगवान से प्रार्थना भी किया करती थी

धीरे धीरे साप बडा हुआ ब्राह्मणी जब गाव के अन्य लडकों का विवाह होता हुआ देखती थी, तो उसके मन में इच्छा पैदा होती थी कि वह भी अपने बेटे सांप का विवाह करे और बहू घर में लाए। एक दिन ब्राह्मणी ने अपने मन की बात ब्राह्मण पर प्रकट कर दी। वह सांप के विवाह को लेकर उदास बैठी हुई थी। ब्राह्मण ने उसकी उदासी का कारण पूछा, तो उसने आंखों में आंसू लाकर कहा, "तुम्हें न तो मेरी चिंता रहती है, और न मेरे बेटे की चिंता रहती है। गांव के लोग अपने-अपने बेटों का विवाह करते हैं, पर तुम्हें अपने बेटे के विवाह की कोई चिंता ही नहीं है। हमारा लड़का भी अब विवाह के योग्य हो गया है। जैसे भी हो, अब उसका विवाह कर देना चाहिए।"

ब्राह्मणी की बात सुनकर ब्राह्मण चकित हो उठा। उसने आश्चर्य-भरे स्वर में कहा, "क्या कह रही हो? तुम्हारा बेटा तो सांप है। क्या तुम सांप का विवाह करने के लिए कह रही हो।"

ब्राह्मणी बोली, "हां-हां, मैं सांप के ही विवाह के लिए कह रही हूं। चाहे जैसा भी हो, उसके लिए लड़की की खोज करो।"

ब्राह्मण बोल उठा, "पागल तो नहीं हो गई हो! भला सांप से कौन अपनी लड़की का विवाह करेगा?"

ब्राह्मणी ने ब्राह्मण को समझाया, पर वह अपनी बात पर अड़ी रही। उसने कहा, "यदि मेरे लड़के के विवाह के लिए लडकी की खोज नहीं करोगे, तो मैं प्राण दे दूंगी।"

आखिर ब्राह्मण करता तो क्या करता? पत्नी की बात मानकर उसने लड़की की तलाश शुरू कर दी।

ब्राह्मण ने आसपास के गई गांवों में लड़की की खोज की, पर कोई भी आदमी सांप के साथ अपनी लड़की का विवाह करने के लिए तैयार नहीं हुआ। वह जहां भी जाता था, लोग उसकी हँसी तो उड़ाते ही थे, उसे फटकार भी बताते थे।

पर फिर भी ब्राह्मण लड़की की खोज में लगा रहा। धीरे-धीरे कई महीने बीत गए। एक दिन ब्राह्मण लड़की की खोज में एक नगर में गया। उस नगर में उसका एक घनिष्ठ मित्र रहता था। वह पंद्रह-सोलह वर्षों से अपने उस मित्र से मिल नहीं सका था।

ब्राह्मण ने सोचा, जब इस नगर में आया हूं, तो क्यों न अपने मित्र से मिल लूं? ब्राह्मण अपने मित्र से मिलने के लिए उसके घर जा पहुंचा।

ब्राह्मण कई दिनों तक अपने मित्र के घर रहा। मित्र ने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। ब्राह्मण जब जाने लगा तो मित्र से पूछा, "भाई, तुमने तो यह बताया ही नहीं कि यहां किस काम से आए थे?"

ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "भाई, मैं अपने बेटे के विवाह के लिए किसी योग्य लड़की की तलाश में निकला हूं। यहां भी इसीलिए आया था।"

ब्राह्मण की बात सुनकर मित्र बोल उठा, "अरे, तुमने पहले क्यों नहीं कहा? लड़की तो अपनी ही है। देखने में सुंदर है। गुणवती भी है।"

ब्राह्मण बीच में ही बोला, "क्या कह रहे हो? तुम्हारी अपनी लड़की है? तुम अपनी लड़की का विवाह मेरे लड़के के साथ करोगे?"

मित्र बोला, "हां-हां, क्यों नहीं करूंगा? मैं अपनी लड़की का विवाह तुम्हारे लड़के के साथ करके हर्ष का अनुभव करूंगा।"

मित्र बोला, "ठीक है, पर एक बार मेरे लड़के को देख तो लो।"

मित्र ने उत्तर दिया, "अरे, देखना क्या है? मैं तुम्हें और तुम्हारी पत्नी को अच्छी तरह जानता हूं। जब तुम दोनों अच्छे हो तो तुम्हारा लड़का भी अच्छा ही होगा। मैं अपनी लड़की तुम्हारे हवाले कर रहा हूं। तुम उसे अपने घर ले जाओ, अपने लड़के का

उसके साथ विवाह कर देना।''

ब्राह्मण मौन रह गया। मित्र ने अपनी लड़की को बुलाकर उसके साथ कर दिया।

ब्राह्मण मित्र की लड़की को अपने घर ले गया। और अपने बेटे सांप के साथ उसका विवाह कर दिया।

गांव की स्त्रियों ने ब्राह्मण के मित्र की पुत्री से कहा, ''तुम्हारा विवाह सांप के साथ हुआ है, तुम उसके साथ कैसे रहोगी? अभी कुछ बिगड़ा नहीं है, अपने पिता के घर चली जाओ।''

सांप की पत्नी ने उत्तर दिया, ''मेरे पिता ने अगर मुझे सांप के ही हवाले किया है, तो मैं उसी के साथ रहूंगी। ईश्वर की जो इच्छा होती है, वही होता है। भगवान ने मेरे भाग्य में पति के रूप मे सांप ही लिखा था।''

वह सांप को पति मानकर उसके साथ रहने लगी। वह उसे खाना बनाकर खिलाती, उससे प्रेम करती और रात में उसका बिस्तर लगाया करती थी। वह रात को उसी कमरे में सोती थी, जिसमें सांप का संदूक रखा हुआ था।

धीरे-धीरे कई महीने बीत गए। एक दिन रात में सांप की पत्नी कमरे में सो रही थी। अचानक जब उसकी नींद खुली, तो उसने कमरे में एक सुंदर युवक को देखा। वह डर गई और सहायता के लिए अपने ससुर को बुलाने लगी।

पर युवक ने उसे रोक दिया, कहा, ''डरो नहीं, मैं कोई अन्य नहीं हूं। मैं तुम्हारा पति ही हूं।''

पर पत्नी को विश्वास नहीं हुआ। उसने कहा, ''मेरा पति तो सांप है। सांप मनुष्य कैसे हो सकता है?''

युवक पत्नी के संदेह को दूर करने के लिए वहीं पड़े साप के शरीर में समा गया और फिर बाहर निकलकर मनुष्य बन गया।

पत्नी के मन का संदेह दूर हो गया। वह अब बड़े प्रेम और सुख के साथ सांप के साथ रहने लगी। उसका पति दिन-भर तो सांप के रूप में रहता था, पर जब रात होती थी, तो युवक का रूप धारण कर लेता था। सवेरा होने पर वह फिर सांप के शरीर में समा जाता था।

संयोग की बात, ब्राह्मण ने रात में अपनी पुत्रवधू के कमरे में किसी पुरुष की आवाज सुनी। उसके मन में संदेह पैदा हो उठा। उसने सोचा, उसकी बहू रात में किसी पुरुष को तो नहीं बुलाती?

ब्राह्मण ने पता लगाने का निश्चय किया। एक रात वह कमरे में छिप गया और किसी पुरुष के आने की राह देखने लगा। उसे यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि सांप के संदूक से एक युवक बाहर निकला और रात-भर उसकी पुत्रवधू के साथ रहकर फिर सांप के शरीर में समा गया।

ब्राह्मण के मन का संदेह दूर हो गया। उसे इस बात से बड़ा दुःख पहुंचा कि उसने व्यर्थ ही अपनी बहू पर संदेह किया था। वह सांप साधारण सांप नहीं है, कोई देवता है।

ब्राह्मण ने युवक को पकड़ने का निश्चय किया।

एक रात ब्राह्मण फिर कमरे में छिप गया। रात में जब सांप के संदूक से वही युवक बाहर निकला, तो ब्राह्मण ने चुपके से सांप के शरीर को ले जाकर आग में डाल दिया। सांप का शरीर जलकर भस्म हो गया।

सवेरा होने पर युवक जब संदूक के पास गया, तो वहां सांप का शरीर न देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसी समय ब्राह्मण भी प्रकट हो गया। अब युवक को यह समझते देर नहीं लगी कि सांप का शरीर किसने गायब किया है।

युवक प्रसन्नता के साथ बोला, "पिताजी, आपने मुझे सांप के शरीर से छुटकारा दिलाकर मेरा बड़ा उपकार किया है। मैं शाप

के कारण सांप के शरीर में रहता था। शाप देने वाले ने कहा था, जब कोई आदमी सांप के शरीर को जलाकर भस्म कर देगा, तो तुम सांप के शरीर से छुटकारा पाकर मनुष्य बन जाओगे। अब मैं मनुष्य के रूप में आपका पुत्र हूं और आप मेरे पिता हैं।"

ब्राह्मण और ब्राह्मणी दोनों युवक की बात सुनकर बड़े प्रसन्न हुए। दोनों अपने पुत्र और पुत्रवधू के साथ सुख से रहने लगे।

कहानी से शिक्षा

मां बुरे पुत्र से भी स्नेह करती है।

कर्तव्य का पालन करने से सुख मिलता है।

धैर्य और सेवा का फल सुखद होता है।

जैसे को तैसा

(छली को छल से ही जीतना चाहिए)

एक नगर में एक व्यापारी रहता था। व्यापारी का नाम नादुक था। नादुक बड़ा अमीर था। वह ऊंचे भवन में रहता, काम-काज के लिए नौकर-चाकर भी थे। उसका व्यापार दूर-दूर देशों में फैला हुआ था।

परंतु समय सदा एक-सा नहीं रहता। कभी अच्छा तो कभी खराब। नादुक का समय भी बदल गया। अच्छे दिन चले गए और बुरे दिन आ गए।

नादुक का व्यापार बरबाद हो गया। उसे बहुत बड़ी हानि उठानी पड़ी। मकान भी बिक गया। नौकर-चाकर भी नहीं रहे। वह अमीर से गरीब बन गया।

नादुक ने सोचा, अब यहां रहने से क्या लाभ? किसी दूसरे देश में जाकर काम-काज करना चाहिए। हो सकता है, दूसरे देश में जाने से भाग्य बदल जाए और फिर व्यापार चलने लगे।

नादुक ने दूसरे देश में जाने का निश्चय कर लिया। जो कुछ माल-असबाब उसके पास था, बेच दिया। केवल लोहे की एक छड रह गई थी, जो वजन में पांच सौ सेर थी।

नादुक जब दूसरे देश में जाने लगा तो वह अपने एक घनिष्ठ मित्र से मिलने गया। उसने अपने मित्र को विदेश जाने की बात बताकर कहा, ''भाई, मैंने सारा माल-असबाब बेच दिया है। लोहे की एक छड़ रह गई है, जो तोल में पांच सौ सेर है। मैं उसे तुम्हारे पास रखना चाहता हूं। जब कभी विदेश से लौटकर आऊंगा, तब ले लूंगा।''

मित्र ने नादुक के विदेश जाने पर बड़ा दु ख प्रकट किया उसने कहा घबड़ाओ नही समय आने पर सब कुछ ठीक हो जाएगा। जब भी तुम लौटकर आओगे, तुम्हारी चीज तुम्हें मिल जाएगी।''

नादुक ने लोहे की छड़ मित्र के घर रख दी।

नादुक निश्िंचत होकर विदेश चला गया। उसने विदेश में काम-काज करना प्रारंभ किया। समय ने उसका साथ दिया। धीरे-धीरे उसके काम-काज में उन्नति होने लगी और एक दिन ऐसा आया, जब वह पुनः पहले की ही भांति अमीर बन गया।

कई वर्षों के पश्चात नादुक पुनः लौटकर अपने नगर में आ गया। वह एक बहुत बड़ा मकान खरीदकर बड़ी शान के साथ रहने लगा।

जब कुछ दिन बीत गए, तो नादुक लोहे की छड़ लेने के लिए अपने मित्र के घर गया। मित्र ने उसके लौट आने पर हर्ष तो प्रकट किया, पर जब उसने लोहे की छड़ की चर्चा की तो वह उदास हो गया, बड़े ही दुःख के साथ बोला, ''क्या बताऊं, भाई, मैंने तुम्हारी लोहे की छड़ सुरक्षित रूप में गोदाम में रखवा दी थी। कई महीनों बाद जब उसे देखने गया, तो पता चला कि छड़ को चूहे चाट गए हैं। मुझे बड़ा दुःख हुआ। तुम्हारे सामने मुंह दिखाने लायक भी नहीं रहा।''

मित्र की बात से नादुक समझ तो गया कि वास्तव में बात क्या है, परंतु उसने अपने मन के भाव को प्रकट नहीं होने दिया। वह बड़ी ही सज्जनता के साथ बोला, ''कोई बात नहीं। चूहे चाट गए, तो चाट जाने दो। तुम उसके लिए बिलकुल चिंता और दुःख मत करो। ऐसा तो होता ही रहता है।''

नादुक जब मित्र से विदा होकर चलने लगा, तो बड़े ही स्वाभाविक ढंग से बोला, ''एक बात तो कहना भूल ही गया, मैं विदेश से तुम्हारे लिए उपहार की एक वस्तु लाया हूं। तुम अपने

पुत्र रमेश को मेरे साथ कर दो। मैं उसे दे दूंगा।"

मित्र मन ही मन बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने सोचा, मैंने इसकी लोहे की छड़ बेचकर अधिक मुनाफा उठाया है। अब इसकी दी हुई उपहार की वस्तु भी बेचकर लाभ उठाऊंगा। यह भी कैसा आदमी है! मुझसे नाराज न होकर, उपहार प्रदान कर रहा है।

मित्र ने शीघ्र ही अपने लड़के रमेश को बुलाकर नादुक के साथ कर दिया।

नादुक रमेश को साथ लेकर अपने घर आ गया। उसने उसे एक तहखाने में बंद करके बाहर से ताला लगा दिया।

जब शाम तक रमेश घर लौटकर नहीं गया, तो उसका पिता बहुत घबड़ाया। उसने नादुक के पास जाकर उससे पूछा, "भाई, मैंने रमेश को तुम्हारे साथ कर दिया था, पर वह अभी तक लौट कर घर नहीं पहुंचा। वह कहां गया?"

नादुक ने मुंह बनाकर बड़े ही दुःख के साथ कहा, "क्या बताऊं भाई, कहा नहीं जाता! मैं जब रमेश को लेकर घर की ओर आ रहा था, तो मार्ग में एक बाज झपट पड़ा। वह मेरे देखते ही देखते, रमेश को उड़ा ले गया। मैं करता तो क्या करता? बस चीख-पुकारकर रह गया।"

नादुक की बात सुनकर मित्र बिगड़कर बोला, "क्या कह रहे हो? लगता है, तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है। कहीं बाज भी आदमी को उड़ाकर ले जा सकता है! तुमने अवश्य मेरे लड़के को कहीं छिपा रखा है।"

मित्र ने शोरगुल मचाया। आसपास के लोग इकट्ठे हो गए। उसने शोर मचाते हुए कहा, "नादुक ने मेरे लड़के को कहीं छिपा रखा है। कहता है, लड़के को बाज उठा ले गया। भला जवान लड़के को बाज उठाकर कैसे ले जा सकता है?"

लोगों ने नादुक को बहुत समझाया, पर उनके समझाने पर भी नादुक अपनी बात पर अटल रहा। उसने कहा, "सचमुच,

इसके लड़के को बाज उठा ले गया। बाज कोई राक्षस रहा होगा। मैं क्या कर सकता हूं?"

जब इस प्रकार झगड़ा शांत नहीं हुआ, तो मित्र न्यायालय में गया। उसने न्यायाधीश के सामने जाकर कहा, "श्रीमान्, नादुक बडा बेईमान है। इसने मेरे लड़के छिपा रखा है, पर कहता है, उसे तो बाज उठा ले गया। आप ही बताइए, भला बाज जवान लड़के को उठाकर कैसे ले जा सकता है? आप कृपा करके नादुक से मेरे लड़के को दिलवा दीजिए।"

न्यायाधीश ने नादुक को बुलवाकर उससे पूछा, "क्यों जी, क्या बात है? क्या तुमने सचमुच इसके लड़के को छिपा रखा है?"

नादुक ने उत्तर दिया, "नहीं श्रीमान्, मैंने इसके लड़के को छिपा नहीं रखा है। इसके लड़के को सचमुच बाज उठा ले गया है।"

न्यायाधीश ने आश्चर्य के साथ कहा, "तुम झूठ बोल रहे हो! भला बाज जवान लड़के को उठाकर कैसे ले जा सकता है।"

नादुक ने उत्तर दिया, "श्रीमान्, जब पांच सौ सेर लोहे की छड़ को चूहे चाट सकते हैं, तो जवान लड़के को बाज उठाकर क्यों नहीं ले जा सकता?"

यह सुनकर न्यायाधीश ने कहा, "यह क्या माजरा है? पांच सौ सेर लोहे की छड़ और उसे चूहों का चाटना, मेरी समझ में बात नहीं आई। पहेली मत बुझाओ, साफ-साफ कहो।"

नादुक ने पूरी कहानी सुनाकर कहा, "श्रीमान्, तोल में पांच सौ सेर छड़ को चूहे कैसे चाट सकते हैं? यह आदमी बेईमान है। इसने मेरे साथ बेईमानी की है। इसके अनुसार, चूहे लोहे की छड को चाट गए। फिर अगर बाज भी जवान लड़के को उठाकर ले गया हो, तो इसमें आश्चर्य नहीं मानना चाहिए।"

की समझ में बात आ गई है उसने नादुक के

शेरनी का तीसरा पुत्र

(कुल और वंश के ही अनुसार बात करनी चाहिए)

एक वन में एक शेर अपनी शेरनी के साथ रहता था। दोनों में परस्पर बड़ा प्रेम था। दोनों शिकार के लिए साथ-साथ जाते और शिकार मारकर साथ ही खाया करते थे। दोनों एक-दूसरे पर अधिक भरोसा और विश्वास भी करते थे।

कुछ दिनों पश्चात् शेरनी के गर्भ से दो पुत्र उत्पन्न हुए। शेर ने कहा, "अब तुम शिकार के लिए मत चला करो। घर पर ही रहकर बच्चों की देखभाल करो। मैं अकेला ही शिकार के लिए जाऊंगा और तुम्हारे लिए भी शिकार ले आऊंगा।"

उस दिन से शेर अकेला ही शिकार के लिए जाने लगा। शेरनी घर पर रहकर दोनों बच्चों का पालन-पोषण करने लगी। बच्चे धीरे-धीरे बड़े होने लगे।

एक दिन शेर जब वन में शिकार के लिए गया, तो पूरे दिन दौड़-धूप करने के पश्चात् भी उसे कुछ नहीं मिला। वह खाली हाथ घर लौटने लगा।

मार्ग में सियार का एक छोटा-सा बच्चा खेल रहा था। शेर ने उसे देखकर सोचा— आज शेरनी के लिए कुछ भोजन नहीं मिला है। क्यों न सियार के इस बच्चे को ही लेता चलूं? शेर ने बच्चे को पकड़ लिया।

शेर सियार के बच्चे को लेकर घर पहुंचा। उसने उसे शेरनी को देते हुए कहा, "आज वन में इसके अतिरिक्त कुछ नहीं मिला। बच्चा समझकर मैं इसे मारकर खा नहीं सका। तुम्हारे लिए ले आया हूं। तुम इसे मारकर खा जाओ।"

शेरनी बोली, "जब तुम इसे बच्चा समझकर मार नहीं सके, फिर मुझसे क्यों कह रहे हो कि मैं इसे मारकर खाऊं? क्या मेरे हृदय में दया नहीं है? मैं इसे मारकर नहीं खाऊंगी। जिस प्रकार मैं अपने दो बच्चों का पालन-पोषण करती हूं, उसी प्रकार इसका भी पालन-पोषण करूंगी। अभी तक मेरे दो बच्चे थे, पर आज से मेरे तीन बच्चे हो गए।"

शेर मौन हो गया। शेरनी उसी दिन से अपने पुत्रों के समान ही सियार के बच्चे का भी पालन-पोषण करने लगी।

सियार का बच्चा भी शेर के दोनों बेटों के साथ पलने-बढ़ने लगा, जब तीनों कुछ बड़े हुए तो साथ-साथ खेलने-कूदने लगे।

वे कभी-कभी खेलने के लिए बाहर भी जाने लगे।

तीनों साथ-साथ खेलते थे, साथ-साथ खाते थे, उनमें आपस में भेद नहीं था। तीनों में बड़ा मेल था, बड़ा प्यार था। शेर के बच्चे यह नहीं समझते थे कि हम दोनों शेर के बच्चे हैं और यह तीसरा सियार का बच्चा है। इसी प्रकार सियार का बच्चा भी अपने को शेर के बच्चों से अलग नहीं समझता था। शेरनी अपने तीनों बच्चों के आपस में प्रेम को देखकर मन ही मन अधिक प्रसन्न होती थी।

कुछ और बड़े होने पर तीनों बच्चे एक दिन खेलने के लिए वन में गए। वहां उन्होंने एक हाथी को देखा। शेर के दोनों बच्चे तो हाथी के पीछे लग गए। पर सियार का बच्चा उसे देखकर भयभीत हो गया। उसने शेर के बच्चों को रोकते हुए कहा, "अरे, उसके पीछे मत जाओ। वह हाथी है, तुम दोनों को पैरों से कुचल देगा।"

परंतु शेर के बच्चों ने सियार के बच्चे की बात नहीं मानी। वे हाथी को मारने के लिए उसके पीछे लगे रहे।

सियार का बच्चा डरकर भाग खड़ा हुआ।

कुछ देर पश्चात् शेर के दोनों बच्चे लौटकर अपनी मां के

पास आ गए उन्होने अपनी मा से हाथी के मिलने की बात बताकर कहा हाथी को देखते ही हम तो उसके पीछे लग गए, पर हमारा तीसरा भाई डरकर भाग खड़ा हुआ।"

शेर के दोनों बच्चों की बात सियार के बच्चे के भी कानों में पड़ी। वह क्रुद्ध हो उठा। बोला, "तुम दोनों अपने को वीर और मुझे कायर बता रहे हो! हिम्मत हो तो आओ, दो-दो हाथ हो जाएं।"

शेरनी ने सियार के बच्चे को समझाते हुए कहा, "तुम्हें अपने भाइयों के लिए ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए। वे मुझसे तुम्हारी शिकायत नहीं कर रहे हैं, सच बात कह रहे हैं। क्या तुम हाथी को देखकर डर नहीं गए थे?"

शेरनी की बात सियार के बच्चे को बिलकुल अच्छी नहीं लगी। वह और भी अधिक गर्म होकर बोला, "क्या कह रही हो, मैं हाथी को देखकर डर गया था? इसका मतलब तो यह है कि मैं डरपोक और वे दोनों बहादुर हैं। जरा बाहर निकलें तो बताऊं कि कौन डरपोक और कौन बहादुर है?"

शेरनी बोल उठी, "देखो, अधिक बढ़-बढ़कर बातें करना अच्छा नहीं होता। यह तो सच ही है कि तुम्हारे वंश के लोग हाथी को देखकर डर जाया करते हैं।"

शेरनी की बात सुनकर सियार के बच्चे को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने आश्चर्य-भरे स्वर में कहा, "क्या कह रही हो? तुम्हारी बात से लगता है, मेरा वंश और है, और इन दोनों का वंश और है। सच-सच बताओ, क्या बात है?"

शेरनी सियार के बच्चे को अलग ले गई और उसे समझाती हुई बोली, "देखो, तुम्हारा जन्म सियार के वंश में हुआ है और उन दोनों का जन्म शेर के वंश में हुआ है। मैंने तुम पर दया करके अपने बच्चों के समान ही तुम्हारा पालन-पोषण किया। अब तुम बड़े हो गए हो। मैंने तुम्हारा पालन-पोषण किया है, परंतु

तुम्हारे वे ही गुण हैं जो सियारों के होते हैं यही कारण है तुम हाथी को देख, डरकर भाग आए।

"मैंने इस भेद को अभी तक अपने बच्चों से छिपा रखा था। जब उन्हें यह बात मालूम हो जाएगी कि तुम सियार के बच्चे हो, तो वे तुम्हें मारकर खा जाएंगे। इसलिए अच्छा है, भेद प्रकट होने से पहले ही तुम यहां से भाग जाओ।"

शेरनी की बात सुनकर सियार का बच्चा डर गया। उसके भीतर सियारपन जाग उठा था। वह चुपके से भाग गया। सच है, जब अपनी बिसात मालूम हो जाती है, तो सही बात समझ में आ जाती है।

कहानी से शिक्षा

हिंसक जीव में भी दया होती है।

अच्छे लोगों के द्वारा पाले-पोसे जाने पर भी बुरे बालकों के मन में बुराई बनी रहती है।

जो जिस वंश में पैदा होता है, उसका स्वभाव उसी के अनुसार होता है।

स्वामिभक्त नेवला

(किसी काम को करने के पूर्व उस पर विचार कर लेना चाहिए)

एक गांव में एक किसान रहता था। किसान बड़ा परिश्रमी और दयालु था। वह मनुष्य के प्रति तो दया दिखाता ही था, जीव-जंतुओं के प्रति भी दया का भाव रखता था।

किसान के कुटुंब में वह, उसकी पत्नी और उसका छोटा बालक था। बालक की अवस्था पांच-छः महीने की थी। वह या तो मां की गोद में रहता था या पालने पर पड़ा-पड़ा सोया करता था। किसान और उसकी पत्नी दोनों बच्चे को बड़ा प्यार करते।

एक दिन किसान जब अपने खेत से लौट रहा था, तो उसे नेवले का एक बच्चा मिल गया। उसने बड़े प्यार से बच्चे को उठा लिया। वह उसे अपने घर ले आया और पत्नी को देते हुए बोला, "नेवले का यह बच्चा बड़ा सुंदर है। तुम इसका भी पालन-पोषण करो?"

किसान की पत्नी ने अपने पति की बात मान ली। वह अपने पुत्र के समान ही नेवले के बच्चे का पालन-पोषण करने लगी।

कुछ महीनों पश्चात् नेवले का बच्चा बड़ा हो गया, उछलने-कूदने लगा, पर किसान का बच्चा अब भी छोटा ही था। वह अब भी पालने पर ही रहता था।

एक दिन किसान के पास कोई काम-काज नहीं था। वह घर पर ही था। किसान की पत्नी उससे बोली, "मैं सामान खरीदने बाजार जा रही हूं। तुम बच्चे की देख-रेख करते रहना। नेवले से सावधान रहना, क्योंकि नेवला विषैला होता है। वह बच्चे के पास

न जाने पाए

किसान की पत्नी बाजार चली गई। उसके जाने पर गांव के मुखिया के बुलाने पर किसान भी मुखिया से मिलने के लिए चला गया।

किसान को लौटने में देर हो गई। दो-तीन घंटे के पश्चात् जब किसान की पत्नी बाजार से लौटी, तो द्वार पर ही उसे नेवला बैठा हुआ दिखाई पड़ा। नेवले के मुख और उसके पंजों में रक्त लगा हुआ था।

किसान की पत्नी ने नेवले के मुख और पंजों में रक्त लगा हुआ देखकर सोचा, इस दुष्ट ने मेरे बच्चे को काट खाया है।

किसान की पत्नी के मन में नेवले के प्रति क्रोध पैदा हो उठा। वह अपने सिर पर रखा टोकरा नेवले पर पटकती हुई चीख पड़ी, "हाय राम, मैंने तो इस दुष्ट का पालन-पोषण किया, पर इसने मेरे बच्चे को काट खाया।" किसान की पत्नी बच्चे को देखने के लिए दौड़कर घर के भीतर गई। बच्चा बड़े आराम से पालने में सो रहा था।

किसान की पत्नी को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि पालने के नीचे एक काला सांप लहू-लुहान हुआ पड़ा है। उसे समझने में देर नहीं लगी कि सांप बच्चे को काटने के लिए पालने पर चढ रहा था। पर नेवले ने उसे चढ़ने नहीं दिया। उसने उसके साथ लड़कर, उसे मार डाला। यदि नेवला न होता तो सांप अवश्य बच्चे को काट खाता।

किसान की पत्नी के मन में नेवले के प्रति ममता जाग उठी। वह दौड़कर नेवले के पास गई, परंतु जब उसने टोकरा उठाया, तो उसे यह देखकर बड़ा दुःख हुआ कि नेवला उससे कुचलकर मर गया।

किसान की पत्नी रोने लगी, इसी समय किसान भी आ

पहुंचा। उसने सब कुछ सुनकर आंसू बहाते हुए कहा, "जो लोग कोई काम करने के पूर्व उस पर विचार नहीं करते, उन्हें इसी तरह पछताना पड़ता है।

कहानी से शिक्षा

जीव-जंतुओं के प्रति भी दया दिखानी चाहिए।

जीव-जंतु भी बड़े स्वामिभक्त होते हैं।

क्रोध और आवेश में कोई काम नहीं करना चाहिए।

चूहे की पुत्री

(प्रयत्न करने पर भी स्वभाव नहीं बदलता)

एक नदी के तट पर साधुओं का आश्रम था। आश्रम में साधु-महात्मा रहते थे। वे भिक्षा मांगकर खाते और भजन-कीर्तन में लगे रहते थे।

साधुओं के गुरु बड़े तपस्वी थे। उनमें चमत्कारी, शक्तियां थीं। वे योग और मंत्र की शक्ति से कुछ का कुछ कर दिया करते थे। वे अपनी पत्नी के साथ आश्रम में ही रहते थे।

प्रभात का समय था। सूर्य की किरणें फैल गई थीं। तपस्वी नदी के तट पर बैठकर प्रार्थना में संलग्न थे। सहसा उनके सामने एक चुहिया गिर पड़ी।

चुहिया भूरे रंग की थी, लंबी पूंछ थीं, चमकीले नेत्र थे। तपस्वी को उस पर दया आ गई। उन्होंने उसे उठाकर हथेली पर रख लिया। वह उनकी हथेली पर बैठकर उनकी ओर देखने लगी।

तपस्वी के मन में चुहिया के प्रति और भी अधिक दया जाग उठी। उन्होंने मंत्र पढ़कर उस पर जल छिड़क दिया। वह चुहिया से एक सुंदर कन्या बन गई।

तपस्वी उस कन्या को अपनी पत्नी के पास ले गए। उन्होंने पत्नी से कहा, "तुम्हारी कोई संतान नहीं है। तुम अपनी संतान के समान ही इस कन्या का पालन-पोषण करो।"

तपस्वी की पत्नी बड़े प्रेम से कन्या का पालन-पोषण करने लगी। कन्या ज्यों-ज्यों बड़ी होने लगी, त्यों-त्यों उसका रूप भी निखरने लगा। बड़ी होने पर वह पूर्णिमा के चंद्रमा की भांति निखर उठी।

कन्या जब विवाह योग्य हुई, तो तपस्वी के मन में उसके लिए वर खोजने की चिंता हुई। उन्होंने सोचा, कन्या बड़ी रूपवती है, अतः इसका वर भी इसी के समान सुंदर और रूपवान होना चाहिए।

तपस्वी ने विचारकर देखा, तो उन्हें कन्या के लिए सूर्य उपयुक्त वर जान पड़ा।

तपस्वी ने मंत्र की शक्ति से सूर्य को अपने पास बुलाया। सूर्य ने तपस्वी से पूछा, ''महात्मन्, आपने मुझे किसलिए बुलाया है?''

तपस्वी ने उत्तर दिया, ''मेरी कन्या बड़ी रूपवती है। उसके लिए आप ही उपयुक्त वर हैं। मैं चाहता हूं, आप पत्नी के रूप में मेरी कन्या को स्वीकार करें।''

कन्या पास ही खड़ी थी। सूर्य के उत्तर देने के पूर्व ही बोल उठी, ''पिताजी, यह बहुत गर्म रहते हैं, मैं इनके साथ विवाह नहीं करूंगी।''

जब कन्या ने ही अस्वीकार कर दिया, तो तपस्वी क्या करते? उन्होंने सूर्य की ओर देखते हुए कहा, ''क्षमा कीजिए सूर्यदेव! कृपया बताइए, क्या आपसे भी कोई बड़ा है?''

सूर्य ने उत्तर दिया, ''मुझसे भी बड़ा बादल है। वह मुझे भी ढक लेता है।''

तपस्वी ने मंत्र की शक्ति से बादल को अपने पास बुलाया। बादल ने तपस्वी से प्रश्न किया, ''महाराज, आपने मुझे किसलिए बुलाया है?''

तपस्वी ने उत्तर दिया, ''मेरी कन्या बड़ी रूपवती है। आप तीनों लोकों में सबसे बड़े हैं। अतः मैं आप ही के साथ अपनी कन्या का विवाह करना चाहता हूं।''

कन्या पास ही खड़ी थी। वह नाक सिनककर बोली, ''पिताजी, यह तो बहुत काले रंग के हैं। मैं इनके साथ विवाह

नहीं करूंगी।"

तपस्वी मौन हो गए। उन्होंने बादल से कहा, "मुझे बड़ा दु:ख है। कृपया बताइए, आपसे भी कोई बड़ा है?"

बादल ने उत्तर दिया, "मुझसे बड़ा पवन है, क्योंकि वह मुझे एक जगह स्थिर नहीं रहने देता।"

तपस्वी ने मंत्र की शक्ति से पवन को बुलाया। पवन ने तपस्वी से पूछा, "तपस्वीजी, आपने मुझे किसलिए बुलाया है?"

तपस्वी ने उत्तर दिया, "आप तीनों लोकों में सबसे बड़े है, मैं अपनी सुंदर कन्या का विवाह आपके साथ करना चाहता हूं।"

कन्या पास ही खड़ी थी। वह उंगलियों को नचाती हुई बोली, "पिताजी, यह तो सदा चलते ही रहते हैं। मैं इनके भी साथ विवाह नहीं करूंगी।"

तपस्वी ने दु:खी होकर पवन की ओर देखते हुए कहा, "पवनदेव, क्षमा कीजिए। दया करके बताइए कि क्या आपसे भी कोई बड़ा है?"

पवन ने उत्तर दिया, "मुझसे बड़ा पहाड़ है। मैं सबको तो उड़ा ले जाता हूं, पर पहाड़ को नहीं उड़ा पाता।"

तपस्वी ने मंत्र की शक्ति से पहाड़ को भी बुलाया। पहाड़ ने पूछा, "महात्मन्, क्या आज्ञा है?"

तपस्वी ने उत्तर दिया, "आप सबसे बड़े हैं। मैं अपनी रूपवती और गुणवती कन्या का हाथ आपके ही हाथ में देना चाहता हूं।"

कन्या सुन ही रही थी। वह भौंहों को नचाती हुई बोली, "इनका हृदय तो बड़ा कठोर है। मैं इनके साथ विवाह नहीं करूंगी।"

तपस्वी ने पहाड़ की ओर देखते हुए कहा, "कृपा करके बताइए, क्या आपसे भी कोई बड़ा है?"

पहाड़ ने उत्तर दिया, 'चूहा, मुझसे भी बड़ा है, क्योंकि वह

खोदकर मुझमे भी बिल बना लेता है।'

तपस्वी ने चूहे को बुलाया। चूहे को देखते ही कन्या प्रसन्न हो उठी। मुसकराती हुई बोली, "यही मेरे योग्य वर हैं। मैं इन्हीं को ढूंढ़ रही थी।"

तपस्वी ने मंत्र की शक्ति से कन्या को फिर चुहिया बना दिया। चुहिया प्रसन्न होकर चूहे के साथ चली गई।

कोई कितना ही प्रयत्न क्यों न करे, पर स्वभाव नहीं बदलता।

कहानी से शिक्षा

जीवों के प्रति दया दिखाना सबसे बड़ा धर्म है।

संसार में ईश्वर को छोड़कर कोई बड़ा नहीं है।

प्रयत्न करने पर भी जातीय गुण और स्वभाव नहीं बदलता।

एकता का बल

(संकट के समय एकता से बढ़कर और कोई मंत्र नहीं होता)

कबूतरों का एक दल भोजन की खोज में उड़ता चला जा रहा था, परंतु दूर जाने पर भी कहीं उन्हें कुछ भोजन दिखाई नहीं पडा।

कबूतर उड़ते-उड़ते थक गए थे, फिर भी भोजन की आशा में उड़ते रहे। आखिर एक नन्हा कबूतर थकावट से व्याकुल होकर बोल उठा, "न जाने कब तक उड़ना पड़ेगा? अब तो उड़ा नहीं जाता।"

नन्हे कबूतर की बात सुनकर कबूतरों का राजा बोला, "घबराओ नहीं, उड़ते चलो। परिश्रम व्यर्थ नहीं जाता। कहीं न कहीं भोजन अवश्य मिलेगा।" नन्हा कबूतर मौन हो गया। चुपचाप उडने लगा। थकावट के कारण वह बहुत व्याकुल और अधीर हो रहा था।

सहसा नन्हे कबूतर की दृष्टि नीचे की ओर गई। वह एक बरगद के वृक्ष के नीचे चमकते हुए चावल के दाने को देखकर बोला, "अरे वह देखो, बहुत-से चावल के दाने बिखरे पड़े हैं। चलो, नीचे उतरकर आराम से खाएं।"

दल के दूसरे कबूतरों ने भी चावल के दानों को देखा। वे भी एक साथ बोल उठे, "हां, हां, बहुत-से चावल के दाने बिखरे हुए हैं। चलो उतरकर आराम से खाएं।"

बस, फिर क्या था? सभी कबूतर नीचे उतर पड़े और बरगद के वृक्ष के नीचे बिखरे हुए दानों को बीन-बीनकर खाने लगे।

कबूतर दाने खा ही रहे थे कि ऊपर से एक जाल गिरा और सभी कबूतर जाल में फंस गए।

कबूतरों का राजा जोर से बोला, "अरे यह क्या? यह तो हम जाल में फंस गए।"

दूसरे कबूतरों ने भी व्याकुल होकर कहा, "हां, हम सचमुच जाल में फंस गए। अब तो जान गंवानी पड़ेगी।"

कबूतर हाय-हाय करने लगे। वे अधीर होकर पछताने लगे। कबूतरों के राजा ने कहा, "हाय-हाय करने और पछताने से कुछ काम नहीं बनेगा। जब विपत्ति पड़े, तो धैर्य से काम लेना चाहिए। मुझे एक उपाय सूझा है। हमें बहेलिए के आने के पूर्व ही एक साथ जोर लगाकर जाल को लेकर उड़ जाना चाहिए।"

कबूतरों ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, "यह कैसे हो सकता है?"

कबूतरों के राजा ने उत्तर दिया, "बड़ी सरलता से हो सकता है। एकता में बड़ा बल होता है। जब हम सब एक साथ जोर लगाएंगे, तो अवश्य जाल को लेकर उड़ जाएंगे।"

कबूतरों के राजा ने अपनी बात खत्म ही की थी कि बहेलिया आता हुआ दिखाई पड़ा। राजा कबूतर ने बहेलिया को देखकर कहा, "बहेलिया आ रहा है। अब हमें एक साथ जोर लगाकर जाल को लेकर उड़ जाना चाहिए।"

उसका कहना था कि सभी कबूतरों ने एक साथ जोर लगाया। और वे सचमुच जाल को लेकर आकाश में उड़ने लगे।

कबूतरों को जाल सहित उड़ता हुआ देखकर बहेलिया चकित हो उठा। उसने आज तक ऐसा आश्चर्यजनक दृश्य कभी नहीं देखा था। उसने कबूतरों का पीछा किया, पर अब कबूतर कहां मिल सकते थे?

कबूतर जब उड़ते हुए कुछ दूर चले गए, तो कबूतरों के राजा ने कहा, "भाइयो, बहेलिए के द्वारा हम मारे जाने से बच गए। अब हमें जाल से छुटकारा पाने का उपाय करना चाहिए। पहाड़ी के उस पार मंदिरों का देश है। वहां मेरा मित्र मूषक रहता

है, चलो उसी के पास चलें। वह अवश्य जाल को काटकर हमें छुटकारा दिला देगा।"

कबूतरों का राजा मंदिरों के देश की ओर उड़ने लगा। वह मंदिरों के देश में मूषक के बिल के पास जा पहुंचा और जाल सहित नीचे उतर गया।

मूषक अर्थात् चूहा बिल के ही भीतर था। वह बिल के बाहर शोरगुल सुनकर डर गया और बिल के भीतर ही छिपा रहा।

कबूतरों के राजा ने प्रेम-भरे स्वर में चूहे को पुकारते हुए कहा, "मित्र, डरो नहीं। हम हैं तुम्हारे मित्र कबूतर।"

कबूतरों के राजा की आवाज को सुनकर चूहा बिल से बाहर निकल आया और अपने मित्रों को देखकर बोला, "अरे तुम हो भाई, पर यह क्या? तुम तो जाल में फंसे हो!"

कबूतरों के राजा ने उत्तर दिया, "कुछ न पूछो, मित्र! हम सब चावल के दाने चुग रहे थे कि जाल में फंस गए। तुम्हारे पास इसीलिए तो आए हैं। कृपा करके जाल के फंदों को काटकर हमें जाल से छुटकारा दिलाओ।"

चूहा बोला, "घबड़ाओ नहीं मित्र, मैं भी तुम्हारे फंदों को काट दूंगा और तुम स्वतंत्र हो जाओगे।"

कबूतरों के राजा ने कहा, "मित्र, मुझे स्वतंत्र करने से पहले मेरे साथियों के फंदों को काटकर उन्हें स्वतंत्र करो।"

कबूतरों के राजा की बात सुनकर चूहा बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने कहा, "तुम योग्य राजा हो। राजा को इसी प्रकार अपने से अधिक अपने आश्रितों का ध्यान रखना चाहिए।"

चूहा अपनी बात समाप्त करके जाल के फंदों को काटने लगा। उसने एक-एक करके सभी कबूतरों के फंदे काट डाले। जब सभी कबूतर स्वतंत्र हो गए, तो अंत में चूहे ने राजा के फंदे काटकर उसे भी स्वतंत्र कर दिया।

कबूतरों का राजा बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने चूहे से कहा,

"मित्र, इस उपकार के लिए मैं आजीवन तुम्हारा कृतज्ञ रहूंगा।"

कबूतर का राजा चूहे के प्रति कृतज्ञता प्रकट करके अपने दल के साथ उड़कर चला गया।

कहानी से शिक्षा

विपत्ति पड़ने पर घबराना नहीं चाहिए। आपस में मिलकर रहना चाहिए, क्योंकि एकता में बड़ा बल होता है।

संकट का सामना मिलकर करना चाहिए।

सच्चा मित्र वही है, जो संकट में काम आता है।

कल्पनाओं के स्वप्न

(कल्पनाओं का जाल बुनना व्यर्थ है)

एक गांव में एक ब्राह्मण रहता था। ब्राह्मण बड़ा दरिद्र था। वह भिक्षा मांगकर जीवन का निर्वाह किया करता था। घर में दूसरा कोई नहीं था।

एक बार जोरों का सूखा पड़ा। ब्राह्मण को कई दिनों तक भिक्षा में कुछ नहीं मिला। पांच-छः दिनों के पश्चात् उसे एक बड़ी हांडी-भर आटा प्राप्त हुआ। उसके हर्ष की सीमा नहीं रही। वह आटा लेकर घर आ गया।

ब्राह्मण आटे से भरी हुई हांड़ी को अपनी चारपाई के पास लटका कर लेट गया। परंतु उसे नींद नहीं आई, उसकी दृष्टि हांडी पर ही लगी हुई थी।

ब्राह्मण आटे से भरी हुई हांडी को देखकर मन ही मन कल्पनाओं का जाल बुनने लगा, "अहा हा, आज मुझे हांडी भर आटा प्राप्त हुआ है। मैं तीन-चार दिनों तक भिक्षा मांगने नहीं जाऊंगा। रोटियां बनाकर बड़े सुख से खाऊंगा और पूरे दिन सोऊंगा।"

पर इससे क्या होगा? तीन-चार दिनों में जब आटा समाप्त हो जाएगा, तो मुझे फिर भिक्षा मांगने के लिए जाना पड़ेगा। नहीं-नहीं, मैं आटे की रोटियां बनाकर नहीं खाऊंगा। मैं बाजार में ले जाकर इसे बेचूंगा। चारों ओर सूखा पड़ा है। आटा बेचने से अधिक लाभ प्राप्त होगा। मैं एक स्थान पर खड़ा होकर, जोर-जोर से कहूंगा—'लो भाई ताजा आटा लो, ताजा आटा लो।'

कोई दो रुपया दाम लगाएगा, कोई पांच रुपया लगाएगा, पर

मैं बीस रुपये से कम नहीं लूंगा। आखिर एक अमीर आदमी आएगा। बीस रुपये देकर आटा खरीद लेगा।

अहा, हा, मेरे पास बीस रुपये हो जाएंगे। मैं अपने लिए अच्छी धोती खरीदूंगा, एक कुर्ता भी सिलाऊंगा, पर नहीं-नहीं, मैं यह सब कुछ नहीं करूंगा।

मैं बीस रुपये की एक बकरी खरीदूंगा। बकरी बच्चे देगी: एक, दो, तीन। बच्चे बड़े होंगे। मैं बकरी के बच्चों को ले जाकर बाजार में बेचूंगा। एक स्थान पर खड़ा होकर जोर-जोर से कहूंगा— 'लो, बकरी के बच्चे लो, बकरी के हृष्ट-पुष्ट बच्चे लो।'

कोई दस रुपये दाम लगाएगा, कोई बीस रुपये, मैं पचास से कम नहीं लूंगा। आखिर एक धनी मनुष्य आएगा, पचास रुपये पर बकरी के बच्चों को खरीद लेगा।

अहा, हा, मेरे पास पचास रुपये हो जाएंगे। मैं अपने लिए बढ़िया जूता खरीदूंगा, एक कोट भी सिलाऊंगा, पर नहीं, नहीं, मैं यह सब कुछ नहीं करूंगा। मैं पचास रुपये से एक गाय खरीदूंगा। गाय बछिया देगी, बछड़े देगी। बछिया भी गाय बनेगी। वह भी बछिया देगी, बछड़े देगी।

मेरे पास कई गायें हो जाएंगी। प्रतिदिन अधिक मात्रा में दूध पैदा होगा। मैं दूध, दही और घी का व्यापार करूंगा। खूब पैसे कमाऊंगा। जब अधिक रुपया एकत्र हो जाएगा, तो हीरे-जवाहरात का व्यापार करूंगा।

हीरे-जवाहरात के व्यापार से प्रचुर धन पैदा करूंगा। सुंदर भवन बनाऊंगा, बाग-बगीचे लगवाऊंगा। बड़े सुख से जीवन व्यतीत करूंगा। बड़े-बड़े धनपति मेरे पास आएंगे और मुझसे प्रार्थना करेंगे कि उनकी पुत्री से विवाह कर लूं, पर मैं राजा की पुत्री को छोड़कर और किसी से विवाह नहीं करूंगा।

मैं राजा की पुत्री के साथ विवाह करके बड़ी आन-बान के साथ अपने भवन में रहूंगा। पुत्र और पुत्रियां पैदा होंगी। मैं प्रतिदिन

अपने छोटे-छोटे पुत्रों और पुत्रियों को लेकर बगीचे में सैर करने के लिए जाऊंगा। कोई मेरा हाथ पकड़कर इधर खींचेगा, कोई उधर खींचेगा। मैं प्यार से किसी को गोद में उठा लूंगा और किसी के मुख पर ऐसा तमाचा लगाऊंगा कि वह रोने लगेगा।

ब्राह्मण ने आनंद में मग्न होकर बच्चे के मुख पर तमाचा लगाने के लिए जोर से अपना हाथ ऊपर उठाया तो लटकती हुई आटे की हांडी में हाथ का धक्का लगा। हांडी नीचे गिरकर फूट गई। हांडी का सारा आटा जमीन पर फैल गया।

हांडी टूटने की आवाज से ब्राह्मण के स्वप्न टूट गए। वह बड़े ही आश्चर्य के साथ बोल उठा—"अरे यह क्या हुआ?"

हांडी नीचे गिर कर फूट गई थी और सारा आटा जमीन पर फैल गया था।

न कहीं बगीचा था, न पुत्र थे, न पुत्रियां थीं!

ब्राह्मण चीख उठा, "हाय, मेरा सुंदर बगीचा कहां गया? कहां गए मेरे पुत्र और कहां गईं मेरी पुत्रियां?" धीरे-धीरे ब्राह्मण जब अपने आपे में आया, तो उसे यह जानकर बड़ा दुःख हुआ, यह सब तो कल्पना के स्वप्न थे। मैंने स्वप्न में ही हांडी-भर आटे को मिट्टी में मिला दिया।

कहानी से शिक्षा

कल्पनाओं के जाल न बुनकर परिश्रम से काम करना चाहिए।

जो लोग आलस्य में पड़े-पड़े विचारों के स्वप्न देखा करते हैं, उन्हें अंत में पछताना ही पड़ता है।

विद्वानों की मूर्खता

(शत्रु को लाभ पहुंचाने से केवल हानि ही होती है)

बहुत समय की बात है, एक नगर में चार मित्र रहते थे। उनमें परस्पर बड़ी प्रीति थी। वे साथ रहते थे और साथ ही घूमा-फिरा करते थे।

चारों मित्रों में तीन तो अधिक पढ़े-लिखे विद्वान थे, पर चौथा बिलकुल पढ़ा-लिखा नहीं था। जो पढ़े-लिखे थे, वे विद्वान तो थे, पर उनमें अनुभव और व्यावहारिकता नहीं थी। चौथा मित्र पढ़ा-लिखा नहीं था, पर वह बड़ा अनुभवी और व्यावहारिक था।

एक दिन चारों मित्र एक स्थान पर एकत्र हुए और आपस में सोच-विचार करने लगे— हमें क्या करना चाहिए कि हम अपने ज्ञान और विद्या के द्वारा अधिक से अधिक धन प्राप्त कर सकें।

एक विद्वान मित्र ने कहा, "हमें विदेश चलना चाहिए। हो सकता है, विदेश में हमारी भेंट किसी राजा या अमीर से हो जाए। उसकी सहायता से हम अपनी विद्या और ज्ञान का चमत्कार दिखाकर पर्याप्त धन पैदा कर सकते हैं।"

दूसरे विद्वान मित्र ने भी पहले की बात का प्रतिपादन किया। पर तीसरे विद्वान मित्र ने कहा, "हम तीनों तो अपनी विद्या और अपने ज्ञान का चमत्कार दिखाकर धन पैदा करेंगे, पर इस चौथे मित्र का क्या होगा? यह तो हमारी तरह विद्वान है नहीं। मेरी राय में इसे यहीं छोड़ देना चाहिए।"

पहला मित्र बोला, "नहीं इसे छोड़ना ठीक नहीं होगा। यह हमारा मित्र है। मित्र को छोड़ना नहीं चाहिए।"

दूसरे मित्र ने पहले मित्र की बात का समर्थन किया। उसने

कहा, "हां, मित्र को छोड़ना नहीं चाहिए। इसे भी साथ ले चलना चाहिए। हम जो कुछ पैदा करेंगे, उसमें इसका भी भाग होगा।"

आखिर तीनों मित्रों ने चौथे मित्र को साथ ही विदेश ले जाने का निश्चय किया।

चारों मित्र विदेश के लिए चल पड़े। कुछ दूर जाने पर मार्ग में एक सघन वन मिला। वन में एक स्थान पर किसी की हड्डियां बिखरी पड़ी थीं।

तीनों विद्वान मित्रों ने हड्डियों को देखकर आपस में सलाह की—हमें इन हड्डियों पर ही अपनी विद्या और अपने ज्ञान का प्रयोग करना चाहिए।

पहला विद्वान मित्र बोला, "मैं बिखरी हुई हड्डियों को जोड़ दूंगा, और कंकाल का ढांचा खड़ा कर दूंगा।"

दूसरे विद्वान मित्र ने कहा, "मैं हड्डियों पर मांस चढ़ाकर, उसके ऊपर चमड़े का खोल चढ़ा दूंगा।"

तीसरा विद्वान मित्र बोला, "मैं शरीर के भीतर प्राण का संचार कर दूंगा।"

बस, फिर क्या था, पहले विद्वान मित्र ने हड्डियों को जोड़ दिया, दूसरे विद्वान मित्र ने हड्डियों पर मांस चढ़ा दिया, पर जब तीसरा विद्वान मित्र प्राण का संचार करने लगा, तो चौथा मित्र चीख उठा, "अरे, यह क्या कर रहे हो? यह तो शेर का शरीर है। इसमें प्राण का संचार करोगे तो यह जीवित हो जाएगा और हम सबको मारकर खा जाएगा।"

पर तीसरे विद्वान मित्र ने चौथे मित्र की बात नहीं मानी। उसने कहा, "तुम मूर्ख हो, तुम मेरी विद्या के चमत्कार को क्या जानो? मैं तो इसमें अवश्य प्राण का संचार करूंगा।"

चौथा मित्र बोला, "नहीं मानते तो करो, पर जरा रुक जाओ। मुझे वृक्ष के ऊपर चढ़ जाने दो।"

चौथा मित्र वृक्ष के ऊपर चढ़ गया। तब तीसरे विद्वान मित्र

ने उसमे प्राण का सचार किया शेर उठकर खडा हो गया शेर ने पहले ता गर्जना की, फिर एक एक करके तीनो विद्वान मित्रो को मारकर खा गया।''

शेर जब चला गया तो चौथा मित्र वृक्ष के ऊपर से नीचे उतरा। वह अपने मित्रों की मृत्यु पर शोक करता हुआ अपने-आप बोल उठा, ''यदि इनमें अनुभव और व्यावहारिक ज्ञान होता, तो इनके प्राण इस तरह न जाते।''

चौथा मित्र सकुशल अपने घर लौट आया।

कहानी से शिक्षा

अनुभव के बिना पुस्तकीय ज्ञान व्यर्थ होता है।

बिना व्यावहारिक ज्ञान के बड़े-बड़े विद्वानों को भी काम में असफल होते हुए देखा जाता है।

अकृतज्ञता का फल

(जो उपकारी का अपकार करता है, उसे दंड भोगना ही पड़ता है)

एक गांव में एक ब्राह्मण रहता था। ब्राह्मण बड़ा गरीब था। भिक्षा को छोड़कर उसकी जीविका का कोई साधन नहीं था। वह प्रतिदिन सवेरा होते ही भिक्षा के लिए निकल जाता था।

परंतु ब्राह्मण को रोज पर्याप्त भिक्षा भी नहीं मिलती थी। अतः उसे और उसके कुटुंबियों को किसी भी दिन भरपेट भोजन नहीं मिल पाता था।

ब्राह्मण जब भूख के कष्टों को सहते-सहते ऊब गया, तो उसने विदेश जाने का निश्चय किया। पर उसने अपने निश्चय को अपने कुटुंबियों पर प्रकट नहीं किया। उसे भय था कि उसके कुटुंबियों को यदि यह बात मालूम हो गई, तो वे उसे विदेश नहीं जाने देंगे।

एक रात, जब ब्राह्मण के बाल-बच्चे गहरी नींद में सो रहे थे, तो वह चुपके से विदेश के लिए निकल पड़ा। उसे कहां और किस ओर जाना है—इस बात का बिलकुल पता नहीं था। वह एक ही दिशा में चलता गया।

ब्राह्मण चलते-चलते एक वन में पहुंचा। वन में पक्का कुआं था। ब्राह्मण सुस्ताने के लिए पक्के कुएं की जगत पर बैठ गया। ब्राह्मण के कानों में कुछ ऐसी आवाजें पड़ी, जो कुएं के भीतर से आ रही थीं। वास्तव में बात यह थी कि कुएं में किसी तरह चार प्राणी गिर पड़े थे। बाघ, बंदर, सांप और सुनार। चारों कुएं से बाहर निकलने का प्रयत्न कर रहे थे, पर निकल नहीं पा रहे थे।

कुएं के भीतर की आवाजों को सुनकर ब्राह्मण के मन में उत्सुकता पैदा हुई। वह कुएं के भीतर झांकने लगा।

बाघ की दृष्टि ब्राह्मण पर जा पड़ी। उसने बड़ी ही नम्रता से कहा, "कौन हो, भाई? दया करके मुझे कुएं से बाहर निकाल लो?"

ब्राह्मण बोला, "मैं तो ब्राह्मण हूं। तुम कौन हो?"

बाघ ने उत्तर दिया, "मैं बाघ हूं, भाई! कुएं में गिर पड़ा हूं। मुझे बाहर निकाल लो, तो मैं तुम्हारा उपकार मानूंगा।"

ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "ना-ना भाई, मैं तुम्हें बाहर नहीं निकालूंगा। तुम बाहर निकलने पर मुझे मारकर खा जाओगे।"

बाघ बोला, "क्या कहते हो? मैं उपकार करने वाले को मारकर खा जाऊंगा? मैं तुम्हें वचन देता हूं, तुम्हें नुकसान नहीं पहुंचाऊंगा। इसके विपरीत, तुम्हारा उपकार कभी नहीं भूलूंगा।"

ब्राह्मण के मन में दया उत्पन्न हो उठी। उसने सोचा परोपकार श्रेष्ठ धर्म है। बाघ संकट में पड़ा है। क्यों न उसे बाहर निकाल लिया जाए!

ब्राह्मण ने बाघ को किसी तरह ऊपर खींच लिया। बाघ ने कुएं से बाहर आकर कहा, "मैं तुम्हारा उपकार सदा स्मरण रखूंगा। हो सके, तो कभी भी मेरे घर आना। मैं सामने, पहाड़ी की एक गुफा में रहता हूं। जब भी तुम मेरे घर आओगे, मैं तुम्हारी सेवा करूंगा, तुम्हारा आदर-सत्कार करूंगा। देखो, इस कुएं में एक सुनार भी गिरा है। वह कितनी ही प्रार्थना क्यों न करे, उसे बाहर मत निकालना। उसे बाहर निकालोगे, तो दु:ख में फंसोगे।"

बाघ के चले जाने पर कुएं के भीतर से बंदर बोला, "ब्राह्मण देवता, कृपा करके मुझे भी कुएं से बाहर निकाल दो।"

ब्राह्मण ने प्रश्न किया, "तुम कौन हो, भाई?" बंदर ने उत्तर दिया, "मैं बंदर हूं। बाघ की भांति ही मैं भी कुएं में गिर पड़ा हूं। मुझे भी बाहर निकाल दो। मैं तुम्हारा यह उपकार कभी नहीं

भूलूंगा

ब्राह्मण न बदर को भी बाहर निकाल दिया बाहर निकल कर बंदर बोला, ''मैं सामने की पहाड़ी के नीचे वृक्ष पर रहता हू। कभी मेरे घर अवश्य आना। तुम्हारा आदर-सत्कार करने से मुझे सुख मिलेगा। देखो, कुएं के भीतर एक सुनार भी है। वह कितनी ही प्रार्थना क्यों न करे, उसे बाहर मत निकालना।''

बंदर के बाहर आने पर कुएं के भीतर से सर्प बोला, ''ब्राह्मण देवता मुझ पर भी दया करो। मुझे भी बाहर निकाल दो।''

ब्राह्मण ने प्रश्न किया, ''तुम कौन हो, भाई?''

सर्प ने उत्तर दिया, ''मैं सर्प हूं, कुएं में गिर पड़ा हूं। कृपा करके मुझे भी बाहर निकाल दो।''

ब्राह्मण बोला, ''ना भाई, ना। मैं तुम्हें बाहर नहीं निकाल सकता। तुम्हारा कौन विश्वास, मुझे ही डस लो?''

सर्प ने उत्तर दिया, ''तुम मुझे बाहर निकालोगे और मैं तुम्हें डसूंगा? मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता। उपकार करने वाले को हानि पहुंचाना पाप है। तुम मेरी बात का विश्वास करो, कृपा करके मुझे भी बाहर निकाल दो।''

ब्राह्मण ने सर्प को भी बाहर निकाल दिया। बाहर निकलकर सर्प बोला, ''मैं तुम्हारा उपकार सदा स्मरण रखूंगा। जब भी और जहां भी तुम पर कोई आपदा पड़े, मुझे याद करना। मैं याद करते ही तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा और तुम्हारी सहायता करूंगा। देखो, कुएं के भीतर सुनार भी है। वह दुष्ट प्रकृति का है। उसे बाहर मत निकालना।''

सर्प के चले जाने पर कुएं के भीतर से सुनार बोला, ''ब्राह्मण श्रेष्ठ, मुझे भी कुएं से बाहर निकाल दो।''

ब्राह्मण ने प्रश्न किया, ''तुम कौन हो, भाई?''

सुनार बोला, ''मैं आदमी हूं, जाति का सुनार हूं। दया करके

मुझे भी बाहर निकाल दो '

ब्राह्मण कुछ उत्तर न देकर मन ही मन सोचने लगा। उसे सोच-विचार में पड़ा हुआ देखकर सुनार फिर बोला, "तुमने बाघ, बंदर और सर्प को तो बाहर निकाल दिया, मुझे निकालने में सोच-विचार क्यों कर रहे हो? मैं मनुष्य जाति का हूं। मैं तुम्हारे उपकार को कभी नहीं भूलूंगा। एक सच्चे मित्र की भांति तुम्हारी सहायता करूंगा।"

ब्राह्मण के मन में दया उत्पन्न हो उठी। उसने सुनार को भी बाहर निकाल दिया। सुनार बाहर निकलकर बोला, "मैं अमुक नगर में रहता हूं, सुनारी करता हूं। आवश्यकता पड़ने पर मेरे घर अवश्य आना। मैं तुम्हारी सहायता के लिए सदा तैयार रहूंगा।"

सुनार भी ब्राह्मण को धन्यवाद देकर चला गया। ब्राह्मण काम-काज की खोज में वहां से आगे बढ़ा। वह कई महीनों तक इधर-उधर भटकता रहा, पर उसे न तो काम-काज मिला, और न किसी ने उसकी सहायता की।

आखिर ब्राह्मण को बंदर याद आया। उसने सोचा, बंदर ने सहायता करने का वचन दिया था, क्यों न उसके घर चलूं? कदाचित कुछ काम बन जाए।

ब्राह्मण बंदर के घर जा पहुंचा। बंदर ने ब्राह्मण को देखकर अतीव प्रसन्नता प्रकट की। उसने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। उसे मीठे-मीठे फल खिलाए। ब्राह्मण कई दिनों तक बंदर के घर रहा। बंदर ने आदर-सत्कार तो किया, पर कुछ धन नहीं दिया। धन उसके पास था ही नहीं, वह कहां से देता!

कई दिनों तक ब्राह्मण बंदर के घर रहने के पश्चात् वहां से चल पड़ा। उसे बाघ की भी याद आई। उसने सोचा, बाघ भी इसी पहाड़ी की गुफा में रहता है, क्यों न उससे भी मिल लूं? हो सकता है, वह मेरी कुछ सहायता कर दे।

ब्राह्मण बाघ के घर जा पहुंचा। बाघ भी ब्राह्मण को देखकर बडा प्रसन्न हुआ। ब्राह्मण बाघ के घर कई दिनों तक रहा। बाघ ने उसका बड़ा आदर-सत्कार किया, उसकी बड़ी सेवा की। ब्राह्मण जब बाघ के घर से विदा होने लगा, तो बाघ ने सोने की एक जंजीर और सोने के कंगन दिए। ब्राह्मण बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने सोचा, मेरी विदेश यात्रा सफल हो गई।

वास्तव में सोने की जंजीर और दोनों कंगन राजकुमार के थे। राजकुमार आखेट के लिए पहाड़ पर गया था और बाघ के द्वारा मारा गया था। बाघ को दोनों वस्तुएं उसी से मिली थीं।

ब्राह्मण जब बाघ के घर से चला, तो उसने सोचा, सोने की दोनों चीजों को मुझे बेच देना चाहिए। बेचने से काफी धन मिलेगा। मै घर जाकर जबं वह धन अपनी पत्नी को दूंगा तो वह अधिक प्रसन्न होगी। परंतु दोनों चीजों को बेचूं तो कहां बेचूं?

सहसा ब्राह्मण को सुनार की याद आई। उसने सोचा, दोनों चीजों को बेचने के लिए क्यों न सुनार के पास चला जाए? सुनार ने कहा था, आवश्यकता पड़ने पर मेरे पास आना। मैं अवश्य तुम्हारी सहायता करूंगा।

ब्राह्मण सुनार के घर गया। सुनार ने उसे देखकर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की, उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। ब्राह्मण ने कहा, "सुनार भाई, मैं आपके पास एक विशेष काम से आया हूं। मेरे पास सोने के दो आभूषण हैं। मैं उन्हें बेचना चाहता हूं।"

ब्राह्मण ने दोनों आभूषणों को निकालकर सुनार के सामने रख दिया। सुनार दोनों आभूषणों को हाथ में लेकर बड़े ध्यान से उलट-पुलटकर देखने लगा।

कुछ देर तक देखने के बाद सुनार सोचता हुआ बोला, "दोनों आभूषण हैं तो अच्छे, पर खरीदने के पूर्व मैं इन्हें एक और सुनार को दिखा लेना चाहता हूं। तुम यहीं आराम करो। मैं अभी

इन्हें दिखाकर आ रहा हूं।"

सुनार ने अपनी पत्नी को बुलाकर कहा, "यह ब्राह्मण देवता मेरे मित्र हैं। तुम इनके खाने-पीने का प्रबंध करो। मैं अभी थोड़ी देर में लौटकर आ रहा हूं।"

सुनार दोनों आभूषणों को लेकर अपने घर से निकल पड़ा। वह सीधे राजा के पास गया। उसने राजा से कहा, "महाराज, राजकुमार के गले की जंजीर और हाथ के दोनों कंगन मुझे मिल गए हैं। यह देखिए! मैं इन्हें अच्छी तरह पहचानता हूं, क्योंकि ये दोनों ही चीजें मेरे हाथों की बनाई हुई हैं।"

सुनार ने दोनों ही आभूषण राजा के सामने रख दिए। राजा ने आभूषणों को हाथ में लेकर देखते हुए कहा, "तुम्हें ये दोनों आभूषण कहां से और कैसे प्राप्त हुए?"

सुनार ने उत्तर दिया, "महाराज, एक ब्राह्मण मेरी दुकान पर बैठा हुआ है। मैं उसे भली भांति पहचानता हूं।"

राजा कुपित हो उठा। उसने सिपाहियों को बुलाकर कहा, "तुम सब सुनार के साथ जाओ। इसकी दुकान पर जो ब्राह्मण बैठा हुआ है, उसे बंदी बनाकर जेल में डाल दो। फिर मैं उसके भाग्य का निपटारा करूंगा।"

सिपाहियों ने राजा की आज्ञा का पालन किया और ब्राह्मण को बंदी बनाकर जेल में डाल दिया। ब्राह्मण आश्चर्यचकित हो उठा। उसने जब सिपाहियों से अपना अपराध पूछा, तो उन्होंने उत्तर दिया, "यह तो तुम्हें महाराज ही बताएंगे।"

राजा ने आभूषणों को देखकर सोचा, हो न हो ब्राह्मण ने ही राजकुमार की हत्या की हो, क्योंकि बहुत खोजने पर भी राजकुमार का कहीं पता नहीं चल सका था। और पता भी कैसे चलता, उसे तो बाघ मारकर खा गया था। राजकुमार के आभूषणों को देखकर सुनार ने भी यही समझा कि ब्राह्मण ने ही राजकुमार की हत्या की

है। वह ब्राह्मण के उपकार को तो भूल गया और राजा से पुरस्कार पाने के लोभ में उसने उसे बंदी करवा दिया।

कारागार में ब्राह्मण दुःखी होकर सोचने लगा, आखिर उसने ऐसा कौन–सा अपराध किया है, जिसके कारण राजा के सिपाहियों ने उसे बंदी बनाकर जेल में डाल दिया। ब्राह्मण ने बहुत सोच–विचार किया, पर उसकी समझ में कुछ नहीं आया।

ब्राह्मण ने जब देखा, अब उसके छुटकारे का कोई उपाय नहीं है, तो संकट की उस घड़ी में उसे सर्प याद आया। उसने सोचा—सर्प ने कहा था, जब और जहां विपत्ति पड़े मुझे याद करोगे, मैं सहायता के लिए अवश्य पहुंचूंगा। फिर मैं क्यों न सर्प को याद करूं।

ब्राह्मण ने सर्प को याद किया। कहने की आवश्यकता नहीं कि याद करते ही सर्प कारागार की कोठरी में उपस्थित हो गया और ब्राह्मण से बोला, ''मित्र ब्राह्मण, तुमने मुझे क्यों याद किया?''

ब्राह्मण ने बड़े ही दुःख के साथ अपनी कहानी सुना दी।

सर्प ब्राह्मण की कहानी सुनकर बोला, ''मैंने तुम्हें मना किया था, सुनार को कुएं से बाहर मत निकालना, पर तुमने मेरी बात पर ध्यान नहीं दिया। आखिर, दुष्ट सुनार ने तुम्हें संकट में फंसा दिया न!''

ब्राह्मण बोला, ''जो होना था, अब तो हो चुका। अब तो दया करके मुझे जेल से मुक्ति दिलाने का उपाय करो।''

सर्प ने सोचते हुए उत्तर दिया, ''हां, कुछ करना ही पड़ेगा। मुझे एक उपाय सूझा है। मैं राजभवन जाकर रानी को डस लूंगा। वह मेरे विष से मूर्छित हो जाएगी। होश तभी आएगा, जब तुम उसके सिर पर अपना हाथ रखोगे। रानी के बेहोश होने पर राजा देश-विदेश के चिकित्सकों को बुलाएगा, पर कुछ भी परिणाम

नहीं निकलेगा। तुम भी रानी के पास जाना। जब तुम रानी के सिर पर हाथ रखोगे तो विष का प्रभाव नष्ट हो जाएगा। रानी होश में आ जाएगी। राजा प्रसन्न होकर तुम्हें कारागार से तो छोड़ ही देगा, सुनार को दंड भी देगा।''

सर्प ब्राह्मण को समझाकर राजभवन में जा पहुंचा। उसने रानी को डस लिया। रानी विष के प्रभाव से मूर्छित हो गई। राजभवन में कोहराम छा गया। सारी प्रजा हाय-हाय करने लगी। राजा ने दवा-दारू की, झाड़-फूंक भी कराई, पर कुछ भी लाभ नहीं हुआ। आखिर राजा ने ढिंढोरा कराया, जो भी आदमी रानी को होश में ला देगा, उसे बहुत बड़ा पुरस्कार दिया जाएगा।

पुरस्कार के लोभ में देश-देश के चिकित्सक राजा की सेवा में उपस्थित हुए, पर किसी की भी औषधि से रानी को होश नहीं आया। राजा निराश हो उठा। उसने सोचा, अब उसकी रानी के प्राण कदाचित ही बच सकें।

राजा का ढिंढोरा ब्राह्मण के कानों में भी पड़ा। ब्राह्मण ने कारागार के प्रहरी से कहा, ''भाई, यदि तुम मुझे रानी के पास ले चलो तो मैं उन्हें होश में ला सकता हूं।''

प्रहरी ने ब्राह्मण की बात राजा के पास पहुंचाई। राजा की आज्ञा से ब्राह्मण ने ज्यों ही अपना दाहिना हाथ रानी के सिर पर रखा, विष का प्रभाव दूर हो गया और रानी होश में आ गई

राजा बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने ब्राह्मण से पूछा, ''तुम कौन हो? तुम जेल में क्यों और किस तरह पहुंचाए गए?''

ब्राह्मण ने प्रारंभ से लेकर अंत तक पूरी कहानी राजा को सुना दी। राजा बड़ा प्रभावित हुआ। उसने ब्राह्मण को कारागार से मुक्त कर दिया और अकृतज्ञ सुनार को बंदी बनाकर जेल में डलवा दिया।

राजा ने ब्राह्मण का आदर-सत्कार किया और उसे पुरस्कार

में बहुत सा धन प्रदान किया ब्राह्मण अपने बाल बच्चों को भी वहीं बुलाकर बड़े सुख से रहने लगा।

कहानी से शिक्षा

अच्छे कामों का फल सदा अच्छा ही होता है।

मित्र के साथ सदा मित्रता का व्यवहार करना चाहिए।

उपकारी के प्रति अकृतज्ञता करने पर दंड अवश्य भोगना पड़ता है।

शत्रु का न्याय

(न्याय के लिए शत्रु के पास कभी नहीं जाना चाहिए)

बहुत दिनों पूर्व की बात है, एक वृक्ष की जड़ के पास बिल में तीतर निवास करता था। वृक्ष पर घोंसले बनाकर और भी पक्षी रहते थे। तीतर और अन्य पक्षियों में परस्पर बड़ा प्रेम था। सब मिल-जुलकर रहते थे। संकट की घड़ी में एक-दूसरे की सहायता करते थे।

प्रभात होते ही सभी पक्षी भोजन की खोज में उड़ जाया करते थे और शाम होने पर फ़िर लौट आते थे। सवेरे और संध्या के समय वृक्ष पर बड़ी चहल-पहल रहती थी, परंतु दिन में सन्नाटा छाया रहता था।

तीतर भी प्रतिदिन सवेरे भोजन की खोज में उड़ जाता और शाम को फिर लौट आता था। वह बिलकुल अकेला था। जब तक लौटकर नहीं आता था, उसका घर खाली पड़ा रहता था।

एक दिन प्रातःकाल जब तीतर भोजन की खोज में निकला तो एक स्थान पर उसे धान के कटे हुए खेत दिखाई पड़े। खेतों में बहुत-से चावल के दाने इधर-उधर बिखरे हुए पड़े थे। तीतर चावल के दानों को देखकर नीचे उतर पड़ा और बड़े प्रेम से बीन-बीनकर खाने लगा।

उसे समय की भी याद नहीं रही। चावल के दाने खत्म भी नहीं हो रहे थे, क्योंकि सभी खेतों में बिखरे हुए थे।

तीतर पूरे दिन चावल के दानों को खाता रहा। शाम होने पर वह घर लौटकर नहीं गया। रात में खेत में ही रह गया। इसी तरह तीतर चार-पांच दिनों तक चावल बीन-बीनकर खाता रहा और

रात भी वहीं काटता रहा।

पांच-छः दिनों के बाद तीतर को अपने घर की याद आई। वह जब उड़कर अपने घर गया तो देखता है कि उसके घर में एक खरगोश जमा हुआ बैठा है।

तीतर की अनुपस्थिति में घूमता-घामता हुआ खरगोश वहां पहुचा था। घर को खाली देखकर वह उसमें रहने लगा था।

अपने घर में खरगोश को देखकर तीतर को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला, "अजी मेरे घर में तुम कौन हो? निकलो बाहर।"

खरगोश ने उत्तर दिया, "वाह, मैं बाहर क्यों निकलूं? यह घर तो मेरा है।"

तीतर बोला, "घर तुम्हारा है! तुम्हारा दिमाग तो नहीं खराब हो गया है? मैं अपने घर को नहीं पहचानता? मैं कई वर्षों से इस घर में रहता आ रहा हूं। घर तुम्हारा नहीं, मेरा है। निकलो शीघ्र बाहर।"

खरगोश ने उत्तर दिया, "दिमाग मेरा नहीं, तुम्हारा खराब हो गया है। तुम मेरे घर को अपना घर बता रहे हो! भाग जाओ यहां से।"

तीतर को क्रोध आ गया। वह क्रोध के साथ बोला, "मूर्ख, इस घर को मैंने अपने हाथों से तैयार किया है। छः सात दिन हुए मैं बाहर चला गया था। तुमने घर को खाली देखकर, उस पर अधिकार कर लिया। एक तो अपराध किया और दूसरे अब सीनाजोरी कर रहे हो?"

खरगोश भी तैश में आ गया। बोला, "बनाया होगा तुमने घर को! तुम्हारे पास इसका क्या प्रमाण है कि घर तुम्हारा है? जो जिस घर में रहता है, घर उसी का होता है। घर में मैं हूं, तुम नही हो। अतः घर मेरा है, तुम्हारा नहीं

घर को लेकर तीतर और खरगोश में वाद-विवाद होने लगा।

दोनों परस्पर उत्तर और प्रति उत्तर देते हुए चीखने-चिल्लाने लगे। शोरगुल सुनकर अड़ोस-पड़ोस के पक्षी एकत्र हो गए। दोनों जोर-जोर से पक्षियों से अपनी-अपनी बात कहने लगे।

तीतर कहने लगा, ''मैं पांच-छः दिनों के लिए घर से बाहर चला गया था। घर खाली था। न जाने कहां से यह खरगोश आकर मेरे घर में घुस गया। और अब कहता है, यह घर मेरा है।''

तीतर के उत्तर में खरगोश कहने लगा, ''घर तीतर का नहीं, मेरा है। यह असत्य बोल रहा है। यदि घर इसका होता, तो यह घर में होता। घर में तो मैं हूं, अतः घर मेरा है।''

वृक्ष पर रहने वाले पक्षियों को मालूम था कि घर खरगोश का नहीं, तीतर का ही है। पर कोई प्रमाण नहीं था। बिना प्रमाण के पक्षी कुछ निर्णय नहीं कर सकते। फलतः तीतर और खरगोश का वाद-विवाद चलता ही रहा।

जब कोई निर्णय नहीं हो सका, तो तीतर और खरगोश ने निश्चय किया, झगड़े को निपटाने के लिए किसी को पंच बनाना चाहिए। परंतु पंच किसे बनाया जाए? दोनों पंच की खोज में चल पडे। एक झोप के बाहर जंगली बिल्ला बैठा हुआ था। बिल्ले को देखकर दोनों आपस में बात करने लगे—'बिल्ला बड़ा बुद्धिमान होता है। झगड़े को निपटाने के लिए इमें इसी को पंच बनाना चाहिए।'

पर बिल्ले को देखकर दोनों के मन में भय भी उत्पन्न हो गया था, क्योंकि बिल्ला उनका पुश्तैनी शत्रु था।

बिल्ला बड़ा चतुर और धूर्त था। दोनों की बातें उसके कानों में पड़ गईं। वह यह समझ गया कि दोनों का आपस में कोई झगड़ा है और वे झगड़े को निपटाने के लिए मुझे पंच बनाना चाहते हैं, पर भय के कारण मेरे पास नहीं आ रहे हैं। अतः मुझे साधु का वेश धारण कर लेना चाहिए, जिससे दोनों के मन का भय दूर हो जाए।

बिल्ला शीघ्र ही चदन आदि लगाकर पैरों के बल खड़ा हो गया और हाथ में माला लेकर जपने लगा।

तीतर और खरगोश बिल्ले को साधु के वेश में देखकर आश्चर्यचकित हो गए। दोनों एक-दूसरे से कहने लगे, 'हम व्यर्थ ही बिल्ले से भयभीत हो रहे थे। यह तो बहुत बड़ा महात्मा जान पडता है। हमें इसी को पंच मानकर अपने झगड़े का निपटारा कराना चाहिए।'

खरगोश और तीतर दोनों बिल्ले के पास जा पहुंचे, और कुछ दूर पर ही बैठ गए, क्योंकि बिल्ले के निकट जाने का साहस उनको नहीं हो रहा था।

खरगोश और तीतर ने कुछ दूर से ही अपनी-अपनी बात बिल्ले को सुनाई। तीतर ने कहा, "महाराज, मैं पांच-छः दिनों के लिए घर से बाहर चला गया था। जब लौटकर आया तो देखता हूं, घर में खरगोश ने अपना अड्डा जमा रखा है। मैंने जब इससे कहा, घर से बाहर निकल जाओ, तो कहने लगा, घर मेरा है। आप बड़े बुद्धिमान हैं। हम आपको अपना पंच बना रहे हैं। दोनों की बातें सुनकर निर्णय कर दीजिए कि घर किसका है? जिसकी गलती हो, आप उसे दंड भी दे सकते हैं।"

खरगोश ने तीतर के विरुद्ध अपनी बात कही। उसने कहा, "महाराज, मैं भी आपको अपना पंच मानता हूं। कृपा करके आप हम दोनों के झगड़े का निपटारा कर दें। तीतर असत्य बोल रहा है। घर इसका नहीं, मेरा है। यह पहले घर में रहता था—इस बात का इसके पास कोई प्रमाण नहीं है, पर मैं तो अब भी घर में रहता हूं।"

बिल्ला दोनों की बातें सुनकर माला जपता हुआ बोला, "भाई, मैं वृद्ध हो गया हूं। वृद्धता के कारण नेत्रों की ज्योति घट गई है। कानों से भी कम सुनाई पड़ता है। तुम दोनों जो कुछ कहना चाहते हो, मेरे अधिक निकट आकर कहो, जिससे मैं तुम

दोनों की बातें सुन सकूं।"

तीतर और खरगोश को जब यह ज्ञात हुआ कि बिल्ला न तो आंखों से देखता है, न कानों से सुनता है, तो दोनों के मन का भय बिलकुल दूर हो गया। दोनों निर्भय और निश्चिंत होकर बिल्ले के अधिक निकट चले गए, पर ज्यों ही दोनों बिल्ले के अधिक निकट पहुंचे, उसने झपट्टा मारकर दोनों का काम तमाम कर दिया। दोनों बिल्ले के पेट में चले गए और सदा-सदा के लिए उनके झगड़े का निपटारा हो गया।

कहानी से शिक्षा

झगड़े के निपटाने के लिए शत्रु के पास नहीं जाना चाहिए।

पुश्तैनी शत्रु का विश्वास करने से धोखा खाना पड़ता है।

धूर्त लोग बड़ी सरलता से सरलहृदय लोगों को कपट-जाल में फंसा लिया करते हैं।

चार सच्चे मित्र

(मित्रता एक सामाजिक गुण है)

एक झील के किनारे चार प्राणी रहते थे—कौवा, कछुआ, चूहा और मृग। कौवा वृक्ष पर रहता था, कछुआ जल में निवास करता था, चूहा बिल में रहता था और मृग झाड़ी में। चारों प्राणियों में बडी मित्रता थी। चारों साथ-साथ रहते थे, प्रेम से बातचीत करते और सुख तथा शांति के साथ जीवन व्यतीत किया करते थे।

एक दिन दोपहर के पश्चात् का समय था। कौवा, चूहा और कछुआ तीनों झील के किनारे बैठकर आपस में बातचीत कर रहे थे। मृग नहीं था। वह सवेरे भोजन की खोज में गया था, पर अभी तक लौटकर नहीं आया था। चूहा चिंतित होकर बोला, "सवेरे का गया हुआ मृग अभी तक लौटकर नहीं आया। कहीं ऐसा तो नहीं, वह किसी विपत्ति में फंस गया हो।"

कछुआ बोला, "अवश्य वह किसी विपत्ति में फंस गया है। नहीं तो लौटने में इतना विलंब न होता। वह प्रतिदिन दोपहर के पूर्व ही आ जाता था।

कौवा बोला, "यदि ऐसी बात है, तो मैं पता लगाने के लिए जा रहा हूं। मृग जहां भी कहीं होगा, मैं पता लगाकर शीघ्र ही लौट आऊंगा।"

कौवा अपनी बात समाप्त करके उड़ चला। वह उड़ते-उडते हुआ इधर-उधर देखता हुआ मृग को पुकारने लगा, "मित्र मृग, तुम कहां हो?"

सहसा कौवे के कानों में किसी का मंद-मंद स्वर पड़ा, "मैं यहां हूं, मित्र! मैं यहां हूं।"

वह स्वर मृग का था। कौवा मृग के स्वर को पहचानकर आश्चर्य से अपने-आप ही बोल उठा, "अरे, यह स्वर तो मित्र मृग का ही है!"

कौवा झट नीचे उतर पड़ा और मृग के पास जा पहुंचा। मृग जाल में फंसा हुआ था। कौवा उसे जाल में फंसा हुआ देखकर बोल उठा, "अरे, यह क्या? तुम तो जाल में फंस गए हो।"

मृग बड़े ही दुःख के साथ बोला, "हां मित्र, मैं जाल में फंस गया हूं। अब तो कोई ऐसा उपाय करो, जिससे मुझे जाल से मुक्ति मिले।"

कौवा बोला, "घबराओ नहीं, धैर्य से काम लो। मैं शीघ्र ही मित्रों के पास जाकर उन्हें खबर दूंगा। हम तीनों तुम्हारी मुक्ति का कोई न कोई उपाय अवश्य करेंगे।"

कौवा मृग को आश्वासन देकर उड़ चला और थोड़ी ही देर में मित्रों के पास जा पहुंचा।

तीनों मित्र बड़ी उत्सुकता के साथ कौवे का इंतजार कर रहे थे। तीनों कौवे को देखकर एक साथ ही बोल उठे, "कहो, मित्र, मृग का कहीं पता चला?"

कौवा दुःख-भरे स्वर में बोला, "पता तो चल गया है, भाई, पर वह एक बहेलिए के जाल में फंस गया है। हमें शीघ्र ही उसके छुटकारे के लिए कोई उपाय करना चाहिए। यदि देर होगी तो बहेलिया उसे पकड़ ले जाएगा और मारकर खा जाएगा।"

कौवे की बात सुनकर कछुआ बोला, "हां, भाई, हमें मृग के छुटकारे के लिए अवश्य कोई उपाय करना चाहिए। मुझे एक उपाय सूझा है। मित्र चूहे को जाल के पास पहुंचाकर, जाल को

दुःख से माथा ठोककर रह गया। जाल के काटने का तो इतना दुःख नहीं था, जितना दुःख मोटे-ताजे मृग के निकल भागने का था, पर अब क्या हो सकता था?

बहेलिया जब चलने लगा तो उसकी दृष्टि कछुए पर पड़ी। कछुआ धीरे-धीरे रेंगता हुआ झाड़ी की ओर जा रहा था।

कछुए को देखकर बहेलिए ने सोचा—मृग तो हाथ से निकल ही गया। यह कछुआ ही सही। आज इसी से पेट की पूजा की जाएगी।

बहेलिए ने कछुए को उठाकर थैले में रख लिया। वह थैला कंधे पर रखकर अपने घर की ओर चल पड़ा।

जब बहेलिया कुछ दूर चला गया, तो कौवे ने अपने दोनों मित्रों को आवाज दी, "मृग भाई, आओ। चूहा भाई, तुम भी बिल से बाहर निकलो।"

कौवे की आवाज को सुनकर मृग आ गया। चूहा भी बिल से निकल आया और कौवा भी नीचे उतर पड़ा। तीनों मित्र नए संकट पर विचार करने लगे। कौवे ने कहा, "बहेलिया कछुए को अपने थैले में रखकर ले गया है। हमें उसे छुड़ाने का उपाय करना चाहिए। यदि वह उसे लेकर घर पहुंच गया, तो मारकर खा जाएगा।"

कौवे की बात सुनकर मृग बोला, "हां, हमें कछुए को छुड़ाने के लिए अवश्य कोई उपाय करना चाहिए। मुझे एक उपाय सूझा है। मैं बहेलिए के मार्ग में जाकर घास चरने लगूंगा। बहेलिया जब मुझे देखेगा तो उसके मन में लोभ उत्पन्न हो जाएगा। वह थैले को जमीन पर रखकर मुझे पकड़ने के लिए दौड़ पड़ेगा। मैं पहले तो लंगड़ाता हुआ भागूंगा, पर कुछ दूर जाने पर चौकड़ी भरने लगूंगा। बहेलिया मुझे पकड़ नहीं सकेगा।"

बहेलिया थैले को जमीन पर रख दे तो पर चूहे को वहां पहुच जाना चाहिए और थैले को काटकर कछुए को छुड़ा लेना चाहिए।

मृग की बात दोनों मित्रों को पसंद आ गई। दोनों ने कहा, "ठीक है, ऐसा ही करो।"

मृग शीघ्र ही बहेलिए के मार्ग में जा पहुंचा और हरी-हरी घास चरने लगा। बहेलिए ने जब मृग को देखा तो उसके मुंह में पानी आ गया। वह झट थैले को जमीन पर फेंककर, मृग को पकड़ने के लिए दौड़ पड़ा। पहले तो मृग लंगड़ाता हुआ भागने का प्रयत्न करने लगा, पर जब कुछ दूर निकल गया, तो चौकडी भरता हुआ बहेलिए की आंखों से ओझल हो गया।

बहेलिए ने जब थैले को कंधे से उतारकर जमीन पर फेंका था, उसके तुरंत बाद ही चूहा वहां पहुंच गया था। उसने थैले को काटकर कछुए को छुड़ा लिया।

बहेलिया जब मृग को पकड़ नहीं सका तो निराश होकर थैले के पास लौटा, पर यहां तो थैला भी कटा हुआ था और कछुए का भी कहीं पता नहीं था।

बहेलिया माथा ठोंकता हुआ अपने-आप ही बोल उठा, 'हाय, आज न जाने किसका मुख देखकर चला था, जिसे भी पकड़ता हूं? वह हाथ से निकल जाता है। मृग तो निकल ही गया, कछुआ भी हाथ से निकल गया। आज तो भूखा ही रहना पड़ेगा।'

बहेलिया जब अपने भाग्य को कोसता हुआ चला गया तो चारों मित्र पुनः एकत्र हुए और प्रसन्नता प्रकट करते हुए परस्पर बातचीत करने लगे।

चारों मित्र हँसते-गाते हुए झील के किनारे गए और सुख तथा शांति से जीवन व्यतीत करने लगे।

कहानी से शिक्षा

अधिक से अधिक मित्र पैदा करना सबसे बड़ा गुण है।

सच्चा मित्र वही है, जो विपत्ति में काम आता है।

अपने को संकट में डालकर भी मित्र की सहायता करनी चाहिए।

उल्लुओं की बस्ती में

(मूर्खों का बहुमत सत्य को भी असत्य सिद्ध कर देता है)

एक वृक्ष पर एक उल्लू रहता था। उल्लू को दिन में दिखाई नहीं पड़ता, इसीलिए इसको दिवांध भी कहते हैं। उल्लू दिन-भर अपने घोंसले में छिपा रहता था। जब रात होती थी, तो शिकार के लिए बाहर निकलता था।

गर्मी के दिन थे, दोपहर का समय। आकाश में सूर्य आग के गोले की तरह चमक रहा था। बड़े जोरों की गर्मी पड़ रही थी। कहीं से उड़ता हुआ एक हंस आया और वृक्ष की डाल पर बैठकर बोला, "ओह, बड़ी भीषण गर्मी है। आकाश में सूर्य आग के गोले की तरह चमक रहा है।"

हंस की बात उल्लू के भी कानों में पड़ी। वह बोल उठा, "क्या कह रहे हो? सूर्य चमक रहा है। बिलकुल झूठ। चंद्रमा के चमकने की बात कहते तो मान भी लेता।"

हंस बोला, "चंद्रमा तो दिन में चमकता नहीं, रात में चमकता है। इस समय दिन है। दिन में सूर्य ही चमकता है। सूर्य का प्रकाश जब तीव्र रूप से फैल जाता है तो भयानक गर्मी पड़ती है। आज सचमुच बड़ी भयानक गर्मी पड़ रही है।"

उल्लू व्यंग्य के साथ हँस पड़ा और बोला, "अभी तो तुम सूर्य की बात कर रहे थे, अब सूर्य के प्रकाश की बात करने लगे। बड़े मूर्ख लग रहे हो। अरे भाई, न सूर्य है, न प्रकाश। यह तो हमारे मन का भ्रम है।"

हंस ने उल्लू को समझाने का बड़ा प्रयत्न किया कि आकाश में सूर्य चमक रहा है और उसके कारण भयानक गर्मी

पड़ रही है, पर उल्लू अपनी बात पर अड़ा रहा। हंस के अधिक समझाने पर भी वह यही कहता रहा कि न तो सूर्य है, न सूर्य का प्रकाश है और न गर्मी पड़ रही है।

उल्लू और हंस दोनों जब देर तक अपनी-अपनी बात पर अड़े रहे तो उल्लू बोला, ''पास ही एक दूसरे वृक्ष पर मेरे सैकड़ों जाति-भाई रहते हैं। वे बड़े बुद्धिमान हैं। चलो, उनके पास चल कर निर्णय कराएं कि आकाश में सूर्य है या नहीं।''

हंस ने उल्लू की बात मान ली। उल्लू उसे साथ लेकर दूसरे वृक्ष पर गया। दूसरे वृक्ष पर सैकड़ों उल्लू रहते थे।

उल्लू ने अपने जाति-भाइयों को एकत्र करके कहा, ''भाइयो, इस हंस का कहना है, इस समय दिन है और आकाश में सूर्य चमक रहा है। आप लोग ही निर्णय करें, इस समय दिन है या नहीं, और आकाश में सूर्य चमक रहा है या नहीं।''

उल्लू की बात सुनकर उसके जाति-भाई हंस पर हँस पड़े और उसका उपहास करते हुए बोले, ''क्या कह रहे हो जी, आकाश में सूर्य चमक रहा है? बिलकुल अंधे हो। हमारी बस्ती में ऐसी झूठी बात का प्रचार मत करो।''

पर हंस चुप नहीं रह सका, बोला, ''मैं झूठ नहीं बोल रहा हूं। इस समय दिन है और आकाश में सूर्य चमक रहा है।''

हंस की बात सुनकर सभी उल्लू कुपित हो उठे और हंस को मारने के लिए झपट पड़े।

हंस प्राण बचाकर भाग चला। कुशल था कि दिन होने के कारण उल्लुओं को दिखाई नहीं पड़ रहा था। यदि दिखाई पड़ता, तो वे हंस को अवश्य मार डालते।

उधर दिन होने के कारण हंस को दिखाई पड़ रहा था। उसने सरलता से भागकर उल्लुओं से अपनी रक्षा कर ली।

हंस ने बड़े दुःख के साथ अपने-आप ही कहा, ''यह बात सच है कि इस समय दिन है और आकाश में सूर्य चमक रहा है,

पर उल्लुओं ने संख्या में अधिक होने के कारण सच को भी झूठ ठहरा दिया। जहां मूर्खों का बहुमत होता है, वहां इसी प्रकार सत्य को भी असत्य सिद्ध कर दिया जाता है।

कहानी से शिक्षा

मूर्ख मनुष्य विद्वान की बात को भी सच नहीं मानता।

मूर्खों की सभा में सत्य को भी असत्य ठहरा दिया जाता है।

मूर्खों की बड़ाई से न तो प्रसन्न होना चाहिए और न बुराई करने से अप्रसन्न होना चाहिए, क्योंकि मूर्ख तो मूर्ख ही होते हैं।

नीला सियार

(प्रभाव वेश का नहीं गुणों का पड़ता है)

एक वन में एक सियार रहता था। सियार बड़ा चालाक और धूर्त था। वह दिन-भर तो छिपा रहता था, पर जब रात होती तो शिकार के लिए बाहर निकलता और बड़ी ही चालाकी से छोटे-छोटे जीवों को मारकर खा जाता था।

एक बार रात में जब सियार शिकार के लिए बाहर निकला, तो बड़ी दौड़-धूप करने के पश्चात् भी उसे कोई शिकार नहीं मिला। उसने सोचा, वन में तो भोजन मिला नहीं, चलो, अब बस्ती की ओर चलें। कदाचित बस्ती में कुछ भोजन मिल जाए।

बस्ती की बात सोचते ही सियार को कुत्तों की याद आई। उसने सोचा, बस्ती में कुत्ते रहते हैं, देखते ही भूंकते हुए पीछे लग जाएंगे। फिर तो लेने के देने पड़ जाएंगे।

फिर भी सियार बस्ती की ओर चल पड़ा। वह ज्यों ही बस्ती के भीतर घुसा, कुछ कुत्तों की दृष्टि उस पर पड़ गई। बस, फिर क्या था, कुत्ते भूंकते हुए दौड़ पड़े।

परंतु बस्ती में सियार भागकर जाता तो कहां जाता? सियार प्राण बचाने के लिए इधर से उधर और उधर से इधर चक्कर काटने लगा।

आखिर एक घर का द्वार खुला देखकर सियार उसके भीतर घुस गया। वह घर रंगरेज का था। घर के भीतर आंगन में बहुत बड़ा टब रखा था, जिसमें घुला हुआ नीला रंग भरा था।

सियार प्राण बचाने के लिए जल्दी में उसी टब में घुसकर बैठ गया। कुछ देर तक टब में बैठा रहा। जब बाहर कुत्तों का

भूकना बंद हो गया, तो वह टब से बाहर निकला। बाहर निकलने पर वह यह देखकर विस्मित हो उठा कि उसका पूरा शरीर नीले रंग में रंग गया है। वह अपने शरीर को नीले रंग में रंगा हुआ देखकर गर्वित हो उठा।

सियार इस तरह प्राण बचाकर वन में पहुंचा। वन के जीवो ने जब सियार को देखा, तो वे भयभीत हो उठे, भाग खड़े हुए। क्योंकि उन्होंने आज तक ऐसे अद्‌भुत जानवर को कभी नहीं देखा था।

सियार ने जब वन के जीवों को भागते हुए देखा, तो वह समझ गया कि वन के जीव उसके शरीर के नीले रंग को देखकर भाग रहे हैं। वह धूर्त और चालाक तो था ही, उसने अपने शरीर के नीलेपन से लाभ उठाने का निश्चय किया।

सियार भागते हुए वन के जीवों को पुकार-पुकारकर कहने लगा, "अरे भाइयो, तुम सब मुझसे डरकर क्यों भाग रहे हो? मुझे तो ईश्वर ने अपना दूत बनाकर तुम्हारे ही कल्याण के लिए भेजा है। तुम सब डरो नहीं। मेरे पास आओ, मैं तुम सबको भगवान का संदेश सुनाऊंगा।"

सियार की बात सुनकर जानवरों के मन में कुछ ढाढ़स बधा। वे सियार को ईश्वर का दूत समझकर उसके पास एकत्र होने लगे। हाथी, शेर, बाघ, भालू और बंदर आदि सभी जानवर सियार के पास इकट्ठे होने लगे। वे सब उसे ईश्वर का दूत समझकर उसका आदर करने लगे।

सियार सभी जानवरों को अपने प्रभाव में लाता हुआ बोला, "भाइयो, मैं ईश्वर की आज्ञा से इसी वन में रहूंगा और तुम्हारा कल्याण करूंगा, पर तुम्हारी ओर से प्रतिदिन मेरे खाने-पीने का प्रबंध तो होना ही चाहिए।"

बात उचित थी। इसलिए वन के जीवों ने सियार की बात मान ली। वे बड़े आदर से प्रतिदिन उसके खाने-पीने का प्रबंध

करने लगे।

धूर्त सियार के दिन बड़े सुख से बीतने लगे। उसे अब और क्या चाहिए था!

पर कपट का व्यापार सदा नहीं चलता। एक न एक दिन भेद खुल ही जाता है। सियार का भी भेद खुल गया।

बात यह हुई कि चांदनी रात थी। जंगल के जानवर सियार के पास एकत्र थे और उसकी लच्छेदार बातों को सुन रहे थे।

सहसा वन में पचीसों सियार एक साथ बोल उठे, ''हुआं, हुआं।''

सियारों की बातों को सुनकर नीला सियार अपने को रोक नहीं सका। वह भी उनके स्वर में स्वर मिलाने लगा—हुआं, हुआं, हुआं!

बस फिर क्या था? वन के जीवों पर असली भेद प्रकट हो गया। अरे, यह तो सियार है! अपनी धूर्तता से ईश्वर का दूत बनकर हम लोगों को फंसाए हुए था।

फिर तो वन के जीवों ने सियार को एक क्षण भी जीवित नहीं रहने दिया।

कहानी से शिक्षा

कपट का व्यापार सदा नहीं चलता।

अगर गुण न हो, तो वेश कुछ भी नहीं करता।

कपटी और धूर्त को एक न एक दिन दंड भोगना ही पड़ता है।

राजा का रक्त

(लोभी को घर में ठहराने से हानि उठानी पड़ती है)

एक खटमल था। उसके बाल-बच्चे भी थे। बाल-बच्चों के भी बाल बच्चे थे। खटमल का बहुत बड़ा कुटुंब था। वह अपने बहुत बडे कुटुंब के साथ राजा के पलंग में निवास करता था।

खटमल बड़ा बुद्धिमान था। उसने अपने कुटुंब के लोगों को शिक्षा दे रखी थी, ''यदि राजा के पलंग में रहना है, तो समय-असमय का ध्यान रखना होगा। राजा को उसी समय काटना होगा, जब वह शराब पीकर गाढ़ी नींद में सोया हुआ हो। इसके विपरीत, यदि कोई राजा के रक्त को चूसने का प्रयत्न करेगा, तो वह तो मार ही डाला जाएगा, कुटुंब के अन्य लोग भी निर्दयतापूर्वक मार डाले जाएंगे।''

परिवार के सभी खटमल उसकी दी हुई शिक्षा के अनुसार ही काम करते थे। वे राजा को कभी भी उस समय नहीं काटते थे, जब वह जागता रहता था। फलतः खटमल अपने पूरे परिवार के साथ बड़े सुख से रहता था। राजा को पता नहीं चलता था, इसलिए वह कभी भी खटमलों को मारने का प्रयत्न नहीं करता था।

कुछ दिनों पश्चात एक दिन कहीं से एक मच्छर उड़ता हुआ आ गया। वह राजा के कोमल बिस्तरे पर लोट-पोट होने लगा। उसे जब बिस्तरा अधिक मुलायम लगा, तो वह उस पर जोर से उछलने-कूदने लगा।

खटमल ने मच्छर को देख लिया। उसने प्रश्न किया, ''तुम कौन हो और कहां से आए हो?''

मच्छर ने उत्तर दिया, "मैं मच्छर हूं। गंदे पानी के नाले में रहता हूं। वाह, वाह, यह बिस्तर तो बड़ा मुलायम है!"

खटमल ने उत्तर दिया, "मुलायम नहीं होगा, तो क्या होगा? यह राजा का बिस्तर है। इसे गंदा मत करो। भाग जाओ यहां से।"

मच्छर बोला, "यह राजा का बिस्तर है? तब तो राजा इस पर अवश्य सोता होगा। अरे भाई, मैं तुम्हारा मेहमान हूं। मेहमान को इस प्रकार भगाया नहीं जाता। मुझे भी जरा इस मुलायम बिस्तर का आनंद तो लेने दो!"

खटमल बोल उठा, "नहीं-नहीं, तुम मेरे मेहमान नहीं हो सकते। मैं तुम्हें राजा के बिस्तर पर लोटने नहीं दूंगा। तुम भाग जाओ यहां से।"

मच्छर विनती करने लगा, नम्रता से कहने लगा, "बस, आज रात-भर रहने दो। मैं अब तक अनेक मनुष्यों के रक्त का स्वाद ले चुका हूं, पर कभी राजा का रक्त चूसने का अवसर नहीं मिला। राजा अच्छे-अच्छे भोजन खाता होगा। अवश्य, उसका रक्त मीठा होगा। मुझ पर दया करो। मुझे राजा के रक्त का स्वाद ले लेने दो।"

खटमल बोला, "अभी तो मुलायम बिस्तर पर लोट-पोट करने की बात कर रहे थे, अब रक्त चूसने की बात करने लगे। बड़े प्रपंची लग रहे हो। मैं तुम्हें यहां नहीं रहने दूंगा। जाओ, भाग जाओ यहां से।"

खटमल ने मच्छर से बराबर यही कहा कि तुम भाग जाओ यहां से, पर मच्छर खटमल से बराबर विनती करता रहा कि मैंने कभी किसी राजा का रक्त नहीं चखा है। कृपया आज मुझे राजा के रक्त को चखकर यह जान लेने दो कि उसका स्वाद कैसा होगा?"

मच्छर ने जब बार-बार प्रार्थना की, तो खटमल के मन में दया उत्पन्न हो उठी। उसने कहा, "अच्छी बात है। तुम एक रात

यहां रह सकते हो, पर राजा का रक्त चूसने के संबंध में तुम्हें मेरी शर्त माननी होगी।''

मच्छर बोला, ''बताओ, तुम्हारी शर्त क्या है?''

खटमल ने कहा, ''तुम्हें दो बातों का ध्यान रखना होगा। एक तो यह कि जब राजा गाढ़ी नींद में सो जाएगा, तभी तुम उसे काटोगे। और दूसरी बात यह कि तुम राजा के पैरों के तलुओं को छोड़कर और कहीं नहीं काटोगे।''

मच्छर बोला, ''मुझे तुम्हारी शर्तें मंजूर हैं। मैं तुम्हें वचन देता हूं, तुम्हारी दोनों बातों का ध्यान रखूंगा।''

मच्छर के वचन देने पर खटमल चला गया और मच्छर स्वतंत्रतापूर्वक पलंग पर उछलने-कूदने लगा।

धीरे-धीरे दिन बीता। शाम हुई। और शाम के बाद रात आई। राजा खा-पीकर पलंग पर सोने लगा। पर कुछ देर तक उसे नींद नहीं आई। राजा को देखकर मच्छर के मन में लोभ पैदा हो गया। उसने सोचा, कैसा हृष्ट-पुष्ट है! इसका रक्त अवश्य बड़ा मीठा होगा। खटमल ने कहा था, जब राजा को गाढ़ी नींद जाए तभी काटना, पर न जाने इसे गाढ़ी नींद कब आएगी! ऊंह, गाढ़ी नींद आए या न आए, मैं तो अभी काटूंगा। ऐसा अवसर बार-बार नहीं मिलता। खटमल ने यह भी कहा था कि पैरों के तलुओं को छोड़कर और कहीं मत काटना, पर इससे क्या होता है? जैसे पैरो के तलुए, वैसे ही शरीर के दूसरे अंग। मैं तलुओं में न काटकर गरदन में काटूंगा। गरदन में रक्त भी अधिक होता है।

बस, फिर क्या था! मच्छर ने राजा की गरदन में डंक गडाने आरंभ कर दिए—एक बार, दो बार, तीन बार। राजा घबरा उठा। उसने अपना दाहिना हाथ गरदन पर जोर से मारा-पटाक, पर मच्छर उड़कर भाग गया। पकड़ में नहीं आया।

राजा व्याकुल होकर नौकरों को पुकारकर बोला, ''न जाने किस कीड़े ने मेरी गरदन में काट लिया। बड़ी जलन हो रही है।

बिस्तर और पलंग को झाड़कर देखो, क्या है?

राजा पलंग से उठकर खड़ा हो गया।

नौकर बिस्तर और पलंग को झाड़-झाड़कर देखने लगे। मच्छर तो भाग गया था। मिला खटमल और उसका कुटुंब। नौकरों ने सभी खटमलों को बीन-बीनकर मार डाला।

कहानी से शिक्षा

किसी की चिकनी-चुपड़ी बातों में नहीं आना चाहिए।

समझ-बूझकर किसी को घर में ठहराना चाहिए।

लालची का विश्वास करने से हानि ही उठानी पड़ती है।

बुद्धिमान दधिपुच्छ

(सोच-विचारकर काम करने का परिणाम अच्छा होता है)

एक वन में एक सिंह रहता था। सिंह का नाम खरनखर था। वह बड़ा बलवान था। वह जब दहाड़ता था तो वन का कोना-कोना गूंज उठता था। वन के छोटे-बड़े सभी जानवर उससे डरा करते थे।

सिंह दिन में तो झाड़ी में बैठा रहता था, और जब रात होती तो शिकार के लिए बाहर निकलता। उसे देखते ही वन के जानवर इधर-उधर छिप जाते। अतः उसे शिकार के लिए बड़ा परिश्रम करना पड़ता था।

एक बार रात में जब सिंह शिकार के लिए निकला तो घंटों इधर-उधर चक्कर लगाता रहा, परंतु उसे कहीं भी कोई शिकार नहीं मिला। मिलता भी कैसे? उनके डर से तो वन के जीव इधर-उधर छिप गए थे।

पर सिंह तो भूख से व्याकुल हो रहा था। वह शिकार के लिए इधर-उधर चक्कर लगाता ही रहा।

फिर भी सिंह को कहीं शिकार नहीं मिला। वह शिकार की खोज करता हुआ एक बड़े बिल के पास पहुंचा। उसने सोचा, अवश्य इस बिल में कोई न कोई जानवर होगा। क्यों न मैं इस बिल में घुसकर उस जानवर को मार खाऊं?

सिंह चुपके से उस बिल के भीतर घुस गया, पर बिल में कोई नहीं था। बिल में घुसने पर सिंह को ज्ञात हुआ कि इस समय तो बिल में कोई नहीं है, पर कोई रहता अवश्य है लगता है शिकार की खोज में बाहर गया है

यह मांद दधिपुच्छ नामक सियार की थी। वह आहार की टोह में बाहर गया था।

कुछ देर पश्चात् जब दधिपुच्छ लौटकर अपने बिल के पास आया तो द्वार पर सिंह के पैरों के चिह्नों को देखकर चकित हो गया। वह बिल में न जाकर बड़े ध्यान से चिह्नों को देखने लगा।

सियार को ज्ञात हुआ कि चिह्नों से पता चलता है कि सिंह बिल में तो गया है, पर बिल से बाहर नहीं निकला है, क्योंकि पैरों के चिह्न जाने के तो हैं, लौटने के नहीं।

सियार सशंकित हो उठा। मन ही मन सोचने लगा— तो क्या सचमुच सिंह बिल के भीतर ही है? बिना पता लगाए बिल के भीतर प्रवेश नहीं करना चाहिए, पर पता कैसे लगाया जाए?

आखिर सियार एक उपाय सोचकर प्रसन्न हो उठा। उसने बिल को पुकारते हुए कहा, "हे बिल, तुमने मेरे साथ समझौता किया था कि जब मैं आऊंगा तो तुम बाहर निकलकर मेरा स्वागत करोगे पर तुमने तो आज चुप्पी साध ली है। मैं आकर खड़ा हूं। समझौते के अनुसार, तुम्हें मेरा स्वागत करना चाहिए।"

बिल में दुबककर बैठे हुए सिंह के कानों में सियार की बात पडी। उसने सोचा, लगता है, बिल और सियार में कोई समझौता हुआ है। उस समझौते के अनुसार बिल को सियार का स्वागत करना चाहिए। जब तक उसका स्वागत नहीं होगा, वह बिल के भीतर प्रवेश नहीं करेगा। बिल के रूप में मैं ही क्यों न सियार का स्वागत करूं। स्वागत करने पर सियार बिल के भीतर आएगा और मैं उसे मारकर खा जाऊंगा।

सिंह सियार को मारकर खा जाने के लोभ में बड़े जोर से गरज उठा। उसकी दहाड़ से बिल का कोना-कोना तक गूंज उठा।

सियार को पता चल गया कि सिंह बिल के भीतर ही मौजूद है। वह चुपके से भाग खड़ा हुआ। उसने भागते हुए मन ही मन सोचा— यदि आज मैंने सोच-समझ से काम न लिया होता और

बिल के भीतर चला जाता तो अवश्य जान गंवानी पड़ती।

सियार तो भाग गया पर सिंह मन ही मन पछताने लगा— वह भी कितना मूर्ख है, जो कि सियार की बातों में आकर दहाड़ उठा। सियार बड़ा बुद्धिमान था। वह बचकर भाग गया। अब क्या हो सकता है। मुझे अब ऐसी मूर्खता कभी नहीं करनी चाहिए। भला बिल भी कहीं बोलता है? मैंने सोच-विचारकर काम नहीं किया, इसीलिए शिकार हाथ से निकल गया।

कहानी से शिक्षा

सदा सोच-समझ करके ही काम करना चाहिए।

सोच-समझकर काम न करने से हानि उठानी पड़ती है।

संकट पड़ने पर विवेक नहीं छोड़ना चाहिए।

●●●